सूअर राजा जैसी कहानियाँ–3

संकलन और अनुवाद
सुषमा गुप्ता

2022

Book Title: Sooar Raja Jaisi Kahaniyan-8-3 (Pig King Like Stories-8-3)
Cover Page picture : Bear
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of the World

विंडसर, कैनेडा

2022

Contents

एक कहानी कई रंग 5

सूअर राजा जैसी कहानियाँ–3 7

1 सुन्दरी और जानवर 9

2 ज़ैलिन्डा और राक्षस 30

3 जंगल में झोंपड़ी 38

4 भालू राजकुमार 49

5 नौर्वे का कत्थई भालू 65

6 सूरज के पूर्व में और चाँद के पश्चिम में 87

7 नौरोवे का काला बैल 113

8 सफेद भेड़िया 124

9 लँगड़ा कुत्ता 137

10 आसमान की बेटी 155

11 छोटा हरा खरगोश 167

12 केंकड़ा राजकुमार 180

13 हूडी कौआ 191

14 लोहे का चूल्हा 200

15 ताला 214

एक कहानी कई रंग

लोक कथाओं के महत्व को ध्यान में रखते हुए कुछ समय पहले हमने कुछ लोक कथाऐं संकलित की थीं। उनको हमने “देश विदेश की लोक कथाऐं” सीरीज़ में प्रकाशित किया था। वे कथाऐं जब काफी संख्या में इकट्ठी हो गयीं, करीब करीब **2000**, तो उनमें एक तस्वीर देखी गयी। वह थी कि उनमें से कुछ कहानियाँ एक सी थीं और आपस में बहुत मिलती जुलती थीं। तो लोक कथाओं की एक और सीरीज़ शुरू की गयी और वह है “एक कहानी कई रंग”।

कितना अच्छा लगता है जब एक ही कहानी के कई रूप पढ़ने को मिलते हैं। इन पुस्तकों में ये कहानियाँ कुछ इसी तरह की कहानियाँ दी गयी हैं। सबसे पहले इसमें सबसे ज़्यादा लोकप्रिय कहानी दी गयी है और उसके बाद ही उसके जैसी दूसरी कहानियाँ दी गयी हैं जो दूसरी जगहों पर पायी जाती हैं। हम यह दावा तो नहीं करते कि वैसी सारी कहानियाँ हम यहाँ दे रहे हैं पर हमारी कोशिश यही रहेगी कि वैसी कहानियाँ हम एक जगह इकट्ठा कर दें। इस सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकों की सूची इस पुस्तक के अन्त में दी हुई है।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में यह जानने की प्रेरणा भी देंगी कि एक ही तरह की कहानी किस तरह से दूसरे देशों में पहुँची। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

सूअर राजा जैसी कहानियाँ–3

हमने एक नयी सीरीज़ शुरू की है "एक कहानी कई रंग"। इसमें वे कथाऐं शामिल की गयीं हैं जो सुनने में एक सी लगती हैं पर अलग अलग जगहों पर अलग अलग तरीके से कही सुनी जाती हैं। बच्चों जैसे तुम लोग कहानियाँ सुनते हो वैसे ही दूसरे देशों में भी वहाँ के बच्चे कहानियाँ सुनते हैं। क्योंकि कहानियाँ हर समाज की अलग अलग होती हैं इसलिये उन बच्चों की कहानियाँ भी तुम्हारी कहानियों से अलग हैं।

पर कुछ कहानियाँ ऐसी भी हैं जो भिन्न भिन्न देशों में कही सुनी जाती हैं पर सुनने में एक सी लगती हैं। यहाँ कुछ ऐसी ही कहानियाँ दी जा रही हैं। ये सब कहानियाँ कुछ इस तरह से चुनी गयी हैं कि ये सब कहानियाँ एक सी कहानियों की श्रेणी में रखी जा सकती हैं। ऐसी बहुत सी कहानियाँ हैं। ऐसी कहानियाँ हम "एक कहानी कई रंग" की सीरीज़ के अन्तर्गत प्रकाशित कर रहे हैं। अगर इन कहानियों के अलावा भी तुम और कोई ऐसी कहानी जानते हो तो हमें जरूर लिखना। हम उसको इसके अगले आने वाले संस्करण में शामिल करने का प्रयास करेंगे। इन सभी पुस्तकों में सबसे पहले मूल कहानी दी गयी है फिर उसके बाद वैसी ही दूसरे देशों में कही जाने वाली कहानियाँ कही गयीं हैं। इस सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकों की सूची इस पुस्तक के अन्त में दी गयी है।

इन कहानियों की सीरीज़ में सबसे पहली पुस्तक थी "बिल्ला और चुहिया जैसी कहानियाँ"। इस पुस्तक में कुछ ऐसी कहानियाँ हैं जिनमें कोई एक किसी से कोई काम कराना चाहता है पर वह दूसरा उस काम को तब तक नहीं करता जब तक उसकी अपनी शर्त पूरी नहीं हो जाती सो उसको उसकी शर्त पूरी करने के लिये काम करने वाले को कहीं और जाना पड़ता है। और यह कड़ी तब तक चलती रहती है जब तक उसका अपना काम नहीं हो जाता।[1]

इस सीरीज़ की आठवीं पुस्तक "सूअर राजा जैसी कहानियाँ" में वैसी कुछ कहानियाँ दी गयी थीं जिनमें राजकुमार या लोग शाप के कारण सूअर या कोई और जानवर या फल बन जाते हैं और वे उन शापों से तभी आजाद होते हैं जब कोई उनसे शादी करता है। ऐसी कई कहानियाँ हैं तो आसानी के लिये हमने इन कहानियों को शुरू में ही दो भागों में बाँट दिया था। इसके पहले भाग "सूअर राजा जैसी कहानियाँ–1"[2] में वे कहानियाँ थीं जिनमें शाप के कारण राजकुमार सूअर बन गये हैं। इसके दूसरे भाग में वे कहानियाँ थीं जिनमें शाप के कारण राजकुमार या लड़की या फिर कोई साधारण आदमी कोई और जानवर या फल बन गया है।[3]

पर इन दो पुस्तकों को प्रकाशित करने के बाद भी अभी वैसी ही कुछ कहानियाँ और बाकी बची हैं तो अब हम उनको इस तीसरी पुस्तक में प्रकाशित कर रहे हैं।

तो लो पढ़ो इस तरह की कहानियों का अब यह तीसरा संग्रह जिसमें हम वैसी ही कुछ और कहानियाँ प्रकाशित कर रहे हैं। आशा है कि तुम लोगों को इस सीरीज़ में प्रकाशित की गयी दूसरी पुस्तकों की तरह यह पुस्तक भी बहुत पसन्द आयेगी।

---

[1] "One Story Many Colors-1" – like "Cat and Rat"

[2] "One Story Many Colors-8-1" – like "The Pig King-1"

[3] "One Story Many Colors-8-2" – like "The Pig King-2"

1 सुन्दरी और जानवर[4]

सूअर राजा जैसी कहानियों की इस तीसरी पुस्तक की यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के फ्रांस देश की लोक कथाओं से ली गयी है। यह फ्रांस की एक बहुत ही लोकप्रिय ओर मशहूर लोक कथा है।

इस कहानी में एक राजकुमार पर जादू डाल कर उसको एक जंगली जानवर बना दिया जाता है जो केवल किसी ऐसी लड़की के उससे शादी करने से ही आजाद हो सकता है जो उसकी बेवकूफियों के बावजूद उससे शादी करने को तैयार हो जाये।

एक बार की बात है कि फ्रांस में एक सौदागर रहता था। उसके तीन बेटियाँ थीं। वे सब एक बहुत ही अच्छे शहर में और एक बहुत ही अच्छे मकान में रहते थे।

वे सोने और चाँदी की थालियों में खाना खाते थे और उनकी पोशाकें दुनियाँ के सबसे बढ़िया कपड़े की बनी होती थीं जिनमें जवाहरात लगे रहते थे।

दो बड़ी लड़कियों के नाम थे मैरीगोल्ड और ड्रैसैलिन्डा[5]। ऐसा कोई दिन खाली नहीं जाता था जिस दिन वे दोनों लड़कियाँ कहीं किसी दावत पर न जाती हों। पर तीसरी लड़की सुन्दरी घर पर ही अपने पिता के साथ रहना पसन्द करती थी।

---

[4] Beauty and the Beast – a folktale of France, Europe. By Jeanne-Marie LePrince de Beaumont and published in 1756. Adapted from the Web Site : http://www.childstoryhour.com/story23.htm

[5] Marigold and Dresselinda – names of the two elder dauhters of the merchant

अब एक दिन ऐसा हुआ कि उन लोगों के बुरे दिन आ गये। सौदागर के जहाज़ जिनमें बहुत सारा कीमती सामान भरा हुआ था समुद्र में खेते हुए टूट गये और वह शहर का सबसे ज़्यादा अमीर आदमी होने की बजाय शहर का एक सबसे गरीब आदमी बन कर रह गया।

पर इस सब नुकसान के बाद अभी भी उनके पास गाँव में एक मकान बच गया था। सो शहर में जब उनका सब कुछ बिक गया तो वह सौदागर अपनी तीनों बेटियों को साथ ले कर वहाँ से गाँव चला आया।

मैरीगोल्ड और ड्रैसैलिन्डा दोनों इस बात से बहुत दुखी थीं कि उनका सब कुछ खो गया था। वे पहले बहुत अमीर थीं और लोग उनके साथ घूमने की इच्छा करते थे पर अब जबकि अब वे एक छोटे से गाँव के छोटे से मकान में रहती थीं वे अकेली पड़ गयी थीं।

पर सौदागर की तीसरी सबसे छोटी बेटी सुन्दरी हमेशा अपने दुखी पिता को खुश रखने के बारे में ही सोचती रहती थी। जबकि उसकी दोनों बड़ी बहिनें लकड़ी की कुरसियों पर बैठी रहतीं और रोती रहतीं।

क्योंकि अब सौदागर कोई नौकर नहीं रख सकता था इसलिये अब सुन्दरी ही सारे घर का काम करती थी। वही घर में आग जलाती और सारे घर के लिये खाना बनाती। फिर बरतन साफ

करती और घर भर को खुश रखने की अपनी पूरी कोशिश करती। ज़िन्दगी इसी तरह चलने लगी।

दोनों बड़ी बेटियाँ घर में कोई काम नहीं करतीं सिवाय इसके कि वे अपनी हालत पर रोती रहतीं या फिर अपना मुँह सुजाये पड़ी रहतीं।

दोनों बहिनें अपनी सबसे छोटी बहिन को बहुत तंग करतीं क्योंकि उसके बारे में उनकी शिकायतें ही खत्म नहीं होती थीं। वे घर में काम भी नहीं करती थीं और साथ में उसके हर काम में गलतियाँ भी निकालतीं रहती थीं। पर सुन्दरी अपने पिता की वजह से उनकी हर बात शान्ति से सह लेती।

इस तरह से एक साल बीत गया और एक दिन उस सौदागर के लिये एक चिट्ठी आयी। चिट्ठी पढ़ कर सौदागर अपनी बेटियों को ढूँढ रहा था ताकि वह उस चिट्ठी में लिखी हुई अच्छी खबर उनको सुना सके।

जैसे ही वे उसको मिल गयीं वह बोला — “बेटियों, मुझको लगता है कि अब हमारे अच्छे दिन वापस आ गये। हमारा एक जहाज़ जिसको हम यह सोच चुके थे कि वह खो गया है वह मिल गया है और वापस आ गया है।

और अगर ऐसा है तो अब हमको गरीबी में नहीं रहना पड़ेगा। अब हम लोग पहले की तरह से तो अमीर नहीं होंगे पर कम से कम आराम से रह पायेंगे।

सुन्दरी, जा बेटी मेरा यात्रा वाला शाल[6] ले आ। मैं अभी अपने जहाज़ को लेने के लिये जाता हूँ। अब तुम लोग मुझे यह बताओ कि मैं वहाँ से तुम लोगों के लिये क्या ले कर आऊँ?"

मैरीगोल्ड बिना किसी हिचक के तुरन्त ही बोली — "मेरे लिये सौ पौंड लाना।"

ड्रैसैलिन्डा बोली — "पिता जी, मेरे लिये एक सिल्क की पोशाक लाना।"

सुन्दरी ने अपने पिता को उसका यात्रा वाला शाल ओढ़ाया तो पिता ने उससे पूछा — "और बेटी मैं तुम्हारे लिये क्या ले कर आऊँ?"

सुन्दरी बोली — "मेरे लिये पिता जी एक गुलाब का फूल लाइयेगा।"

उसके पिता ने उसे प्यार से चूमा और गुड बाई करके अपने काम पर चला गया। पिता के जाते ही मैरीगोल्ड ने सुन्दरी से कहा — "ओ बेवकूफ लड़की, क्या तू पिता जी को यह दिखाना चाहती है कि तू हमसे ज़्यादा पिता का ख्याल रखती है? क्या तुझको वाकई गुलाब चाहिये?"

[6] Translated for the word "Cloak" – see its pictute above. It may be long as it is shown here, or short – up to the waist

सुन्दरी बोली — "हाँ बहिन मुझे वाकई गुलाब चाहिये। पर उसको माँगने की यह वजह नहीं थी जो तुम सोच रही हो। मुझे लगा कि पिता जी को अपने जहाज की सुरक्षा देखने में काफी काम रहेगा सो बिना बाजार जाये ही वह मेरे लिये यह ला सकते हैं मैंने इसी लिये उनसे वह मँगवाया।"

पर उसकी बहिनें उसकी इस बात पर उससे बहुत नाराज थीं। वे वहाँ से अपने कमरे में चलीं गयीं और जा कर अपनी उन चीज़ों के बारे में बात करने लगीं जो उनके पिता उनके लिये लाने वाले थे।

इस बीच वह सौदागर बड़ी उम्मीद से अपने प्लान बनाता हुआ शहर गया कि वह अपने पैसे का क्या करेगा जो उसे उस जहाज़ से मिलेगा। पर जब वह बन्दरगाह पर पहुँचा तो उसको पता चला कि वहाँ तो कोई जहाज़ नहीं आया।

उसने सोचा लगता है किसी ने उसके साथ चाल खेली है। सो वह फिर से अपनी उसी हालत में रह गया था। वह बेचारा सारा दिन केवल यह पता करने के लिये इधर उधर घूमता रहा कि जो चिट्ठी उसको मिली थी उस चिट्ठी में कोई सच्चाई थी या नहीं।

शाम को बड़े दुखी मन से वह अपने घर की तरफ चल पड़ा। वह बहत थका हुआ था और परेशान था। जबसे उसने घर छोड़ा था उसने खाना भी नही खाया था सो वह भूखा भी था।

घर आते आते उसको काफी अँधेरा हो गया और वह एक जंगल के पास आ निकला जिसको उसे घर पहुँचने से पहले पार करना होता था।

तभी उसको जंगल में एक रोशनी चमकती हुई दिखायी दी तो उसने उस रात अपने घर जाने का विचार छोड़ दिया और निश्चय किया कि वह वहीं जंगल में उसी रोशनी की तरफ जायेगा और वहीं खाना और रात को रुकने की जगह माँगेगा।

वह सोच रहा था कि शायद वहाँ किसी लकड़हारे की कोई झोंपड़ी होगी पर वह जैसे जैसे उस रोशनी के पास पहुँचा तो उसको यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि वह रोशनी तो एक बड़े शानदार महल की एक खिड़की से आ रही थी।

उसने उस महल का दरवाजा खटखटाया पर किसी ने कोई जवाब नहीं दिया। उस समय उसको बहुत तेज़ भूख लग रही थी और बाहर बहुत ठंडा था सो वह हिम्मत करके उस महल के अन्दर घुस गया और संगमरमर की सीढ़ियाँ चढ़ कर एक बड़े से कमरे में पहुँच गया।

रास्ते में भी उसको कोई नहीं मिला। उस बड़े कमरे में आग जल रही थी सो वह उसकी गरमी लेने के लिये उस आग के पास बैठ गया। जब वह थोड़ा गरम हो गया तो घर के मालिक को ढूँढने निकला।

पर उसको बहुत दूर नहीं जाना पड़ा। पहला दरवाजा खोलते ही उसको एक और कमरा मिला जिसमें मेज पर एक आदमी के लिये खाना लगा था। उस खाने को देखते ही उसकी भूख और बढ़ गयी।

क्योंकि घर का मालिक अभी भी उसको नहीं मिला था सो जितनी हिम्मत से वह घर में घुसा था उतनी ही हिम्मत से वह खाना खाने भी बैठ गया।

खाना खाने के बाद उसने फिर से घर के मालिक से मिलने का विचार किया तो उसने महल का दूसरा दरवाजा खोला। वहाँ उस कमरे में एक बहुत सुन्दर बिस्तर लगा हुआ था।

पेट भरने के बाद और थके होने की वजह से उसको बहुत ज़ोर की नींद आ रही थी। पलंग देख कर उसने सोचा "यह तो किसी परी का काम दिखायी देता है सो मुझे अब और आगे इस घर के मालिक को ढूँढने की जरूरत नहीं है।" सो वह उस पलंग पर लेट गया और तुरन्त ही सो गया।

जब वह उठा तो सुबह हो चुकी थी। एकदम से वह अपने आपको इतने मुलायम बिस्तर में पा कर बहुत आश्चर्यचकित था पर फिर उसको सब याद आ गया कि कल रात क्या हुआ था।

उसने सोचा "अब मुझे चलना चाहिये पर अच्छा होता अगर मैं इस घर के मालिक को उसके इस अच्छे खाने और सोने की सुविधा देने के लिये धन्यवाद देता जाता।

पर जब वह बिस्तर से बाहर निकला तो उसको लगा कि इस घर के मालिक को उसको खाने और सोने की जगह देने के अलावा किसी और चीज़ के लिये भी धन्यवाद देना था।

उसके पलंग के पास रखी एक कुरसी पर एक नया सूट रखा था जिस पर उसका नाम लिखा हुआ था और उस सूट की हर जेब में दस दस सोने के सिक्के रखे हुए थे।

जब उसने वह नीला और सुनहरी सूट पहना जिसकी जेब में वे सोने के सिक्के खनखना रहे थे तो वह तो एक दूसरा ही आदमी लगने लगा।

कपड़े पहन कर जब वह नीचे गया तो उसी छोटे कमरे में जिसमें उसने पिछली रात खाना खाया था सुबह का नाश्ता उसका इन्तजार कर रहा था। उसने पेट भर कर नाश्ता किया और फिर सोचा कि उस महल के बागीचे में थोड़ा घूम लिया जाये।

वह संगमरमर की सीढ़ियाँ उतर कर नीचे गया और जब बागीचे में पहुँचा तो उसने देखा कि वह बागीचा तो गुलाब के फूलों से भरा पड़ा है – लाल और सफेद, गुलाबी और पीले। उनको देख कर सौदागर को सुन्दरी की माँग का ध्यान आ गया।

उसने सोचा — "बेचारी मेरी प्यारी दोनों बड़ी बेटियाँ, वे कितनी नाउम्मीद होंगीं जब वे यह सुनेंगी कि मेरा जहाज़ नहीं आया। पर सुन्दरी को वह जरूर मिल जायेगा जो उसने माँगा था।"

और उसने हाथ बढ़ा कर अपने सबसे पास वाला गुलाब तोड़ लिया। जैसे ही गुलाब की डंडी उसके हाथ में टूटी वह डर कर पीछे हट गया क्योंकि तभी उसने गुस्से से भरी एक गर्जना सुनी।

दूसरे ही पल एक भयानक जानवर उसके ऊपर कूद पड़ा। वह दुनियाँ के किसी भी आदमी से ज़्यादा लम्बा था और किसी भी जानवर से ज़्यादा बदसूरत था। वह जानवर उस सौदागर को दुनियाँ की किसी भी चीज़ से कहीं ज़्यादा भयानक लग रहा था।

जानवर की आवाज में दहाड़ने के बाद वह उससे आदमी की आवाज में बोला — "ओ नीच, क्या मैंने तुमको खाना नहीं खिलाया? क्या मैंने तुमको रात को सोने के लिये जगह नहीं दी? क्या मैंने तुमको पहनने के लिये कपड़े नहीं दिये?

और तुम मेरे इन ऐहसानों का बदला उन चीज़ों को चुरा कर दे रहे हो जिनकी में इतनी परवाह करता हूँ?"

सौदागर बेचारा रुआँसा हो कर बोला — "दया करो, मुझ पर दया करो।"

वह जानवर बोला — "नहीं, तुमको तो अब मरना ही है।"

बेचारा सौदागर घुटनों के बल बैठ गया और सोचने लगा कि वह क्या कह कर उस बेरहम जानवर का दिल पिघलाये।

आखिर वह बोला — "जनाब, मैंने यह फूल केवल इसलिये चुराया क्योंकि मेरी सबसे छोटी बेटी ने मुझसे एक गुलाब का फूल

लाने के लिये कहा था। मैं तो यह सोच भी नहीं सकता था कि इतना सब देने के बाद आप केवल एक गुलाब के फूल के ऊपर मेरे ऊपर इतना गुस्सा होंगे।"

जानवर ने पूछा — "अच्छा तो तुम अपनी इस बेटी के बारे में बताओ। क्या वह एक अच्छी लड़की है?"

सौदागर बोला — "जनाब वह मेरी सबसे अच्छी और सबसे प्यारी बेटी है।"

और यह कह कर वह यह सोचते हुए रो पड़ा कि अब तो वह मर ही जायेगा। उसकी प्यारी बेटी सुन्दरी इस दुनियाँ में अकेली रह जायेगी। कौन उससे दया का बरताव करेगा।

वह रोते रोते बोला — "ओह, मेरे बाद मेरे बच्चे कैसे रहेंगे?"

वह जानवर फिर बोला — "पर यह तो तुमको मेरा गुलाब चुराने से पहले सोचना चाहिये था। हाँ अगर तुम्हारी कोई एक बेटी तुमको इतना प्यार करती हो जो तुम्हारे बिना रहने की बजाय तकलीफ सहना ज़्यादा पसन्द करे तो तुम्हारी जान बच सकती है।

तुम अपने घर वापस जाओ और अपनी सब बेटियों को जा कर बताओ कि तुम्हारे साथ क्या हुआ। पर तुम मुझसे वायदा करो कि आज से अगले तीन महीनों के अन्दर अन्दर तुम या तुम्हारी एक बेटी यहाँ मेरे महल के दरवाजे पर जरूर होगे।"

उस बेचारे आदमी को इस बात का वायदा करना पड़ा कि ऐसा ही होगा। उसने सोचा कि कम से कम उसकी ज़िन्दगी तीन महीने तो बढ़ी।

जानवर फिर बोला — "मैं तुमको इस तरह खाली हाथ नहीं जाने दूँगा।" कह कर वह अपने महल की तरफ चल दिया और वह आदमी उसके पीछे पीछे चल दिया।

वह जानवर उस आदमी को एक बड़े कमरे में ले गया। वहाँ उस कमरे के फर्श पर चाँदी की एक बहुत बड़ी आलमारी रखी थी। जानवर ने वह आलमारी खोल कर उसको दिखाते हुए कहा — "इसमें से जो चीज़ भी तुमको अच्छी लगे वह और जितना तुमको चाहिये तुम उतना खजाना ले लो।"

सौदागर से जितना लिया जा सका उसमें से उसने उतना खजाना ले लिया। जानवर ने उस आलमारी का दरवाजा बन्द करते हुए कहा — "अब तुम अपने घर जा सकते हो।"

सो वह सौदागर भारी दिल से अपने घर के लिये चला। जैसे ही वह महल के दरवाजे से बाहर निकला तो वह जानवर बोला — "पर तुम सुन्दरी का यह गुलाब तो भूल ही गये।"

और उसी समय उसने अपने बागीचे के सबसे सुन्दर गुलाब के फूलों का एक बहुत बड़ा गुच्छा सौदागर के हाथों में थमा दिया।

वह सौदागर जब घर पहुँचा तो सुन्दरी उससे मिलने के लिये बाहर दौड़ी आयी तो उसने सब कुछ सुन्दरी को पकड़ा दिया और

बोला — "ले मेरी बच्ची और आनन्द कर क्योंकि यह सब तेरे गरीब पिता की ज़िन्दगी के बदले में हैं।"

यह कह कर वह बैठ गया और फिर अपनी सारी कहानी अपनी तीनों बेटियों को सुनायी। उसकी कहानी सुन कर दोनों बड़ी बेटियाँ रो पड़ी। वे सुन्दरी को ही इस सबके लिये जिम्मेदार ठहरा रहीं थी।

वे सुन्दरी से बोलीं — "अगर तुम्हारी ऐसी माँग न होती तो हमारे पिता जी अपने नये कपड़ों में सोने के सिक्के ले कर महल से ऐसे ही चले आते। पर तुम्हारी गुलाब की माँग ने उनको गुलाब तोड़ने पर मजबूर किया और यह सब हुआ। उसी ने उनकी जान खतरे में डाली।"

सुन्दरी बोली — "नहीं नहीं, पिता जी अपनी ज़िन्दगी नहीं देंगे। मैं ही अपनी ज़िन्दगी दूँगी। क्योंकि तीन महीने पूरे होने पर मैं उस जानवर के पास जाऊँगी और फिर अगर वह चाहे तो मुझे मारे या और कुछ करे पर मैं उसको अपने पिता जी को कोई नुकसान नहीं पहुँचाने दे सकती।"

सौदागर ने उसे बहुत समझाया कि वह उस जानवर के पास न जाये पर सुन्दरी ने तो यह सोच लिया था सो वह तीन महीने खत्म होने पर उस जानवर के महल की तरफ चल दी। उसका पिता उसको रास्ता दिखाने के लिये उसके साथ गया।

पहले की तरह ही उसने जंगल में रोशनी जलती हुई देखी, पहले ही की तरह बेकार ही उसने उस महल का दरवाजा खटखटाया, बड़े कमरे में जा कर अपने आपको थोड़ा गरम किया और उसके बाद दूसरे छोटे कमरे में दो लोगों के लिये खाने की मेज लगी देखी।

सुन्दरी बोली — "पिता जी, आप बिल्कुल चिन्ता मत कीजिये। मुझे नहीं लगता कि वह जानवर मुझे मारना चाहता है। क्योंकि अगर ऐसा होता तो वह मुझे इतना अच्छा खाना न खिलाता।"

पर अगली सुबह जब वह जानवर कमरे में आया तो सुन्दरी उसको देख कर डर के मारे अपने पिता से जा कर चिपक गयी।

जानवर बहुत ही नम्र आवाज में बोला — "तुमको मुझसे डरने की जरूरत नहीं है। पर तुम मुझको इतना बता दो कि क्या तुम अपनी मरजी से यहाँ आयी हो?"

काँपते हुए सुन्दरी बोली — "हाँ।"

जानवर बोला — "तुम बहुत अच्छी लड़की हो।"

फिर वह उसके पिता की तरफ घूम कर उससे बोला — "तुम अगर चाहो तो आज की रात यहाँ सो सकते हो। पर सुबह होते ही तुम अपने घर चले जाना और अपनी बेटी को यहाँ छोड़ जाना।"

अगली सुबह पिता बेचारा अपनी बेटी को छोड़ कर ज़ोर ज़ोर से रोता हुआ अपने घर चला गया। सुन्दरी भी अपने आपको सँभालती हुई न डरने की कोशिश करती रही। वह महल में इधर

उधर घूमती रही। उसने इतना अच्छा महल पहले कभी नहीं देखा था।

उस महल में जो सबसे अच्छे कमरे थे उनके दरवाजों के ऊपर लिखा था "सुन्दरी का कमरा"।

उन कमरों में से किसी में बहुत सारी किताबें रखी थीं तो किसी में संगीत रखा था, किसी में कैनेरी चिड़ियाँ थीं तो किसी में फारस की बिल्लियाँ थीं और वह सब कुछ वहाँ था जो किसी के लिये अच्छा समय गुजारने के लिये हो सकता था।

यह सब देख कर उसके मुँह से निकला — "ओह, काश यहाँ मैं अपने पिता को देख सकती तो मुझे कितना अच्छा लगता।"

जब वह यह बोल रही थी तो वह एक बहुत बड़े शीशे के सामने खड़ी थी। तुरन्त ही उस शीशे में उसने अपने पिता की परछाईं देखी जो घोड़े पर सवार उसी महल की तरफ चला आ रहा था।

उस रात जब सुन्दरी शाम को खाना खाने बैठी तो वह जानवर वहाँ आया और उससे पूछा — "क्या मैं तुम्हारे साथ खाना खा सकता हूँ?"

सुन्दरी बोली — "अगर तुमको अच्छा लगे तो।" सो वह जानवर भी उसके साथ खाना खाने बैठ गया।

जब वह खाना खा चुका तो बोला — “सुन्दरी, मैं तो बहुत बदसूरत हूँ और बहुत बेवकूफ भी। पर मैं तुमको बहुत प्यार करता हूँ। क्या तुम मुझसे शादी करोगी?”

सुन्दरी बड़ी नरमी से बोली — “नहीं जानवर।”

जानवर ने एक लम्बी साँस भरी और वहाँ से उठ कर चला गया।

हर रात ऐसा ही होता रहा। जानवर सुन्दरी के साथ खाना खाता। खाना खा कर वह उससे पूछता कि क्या वह उससे शादी करेगी। वह हमेशा उसको नरमी से मना कर देती “नहीं, जानवर” और वह वहाँ से उठ कर चला जाता।

इस सारे समय में कोई छिपे छिपे उसके कामों के लिये खड़ा रहता जैसे वह कोई रानी हो। उसको कोई गवैया या बाजे बजाने वाले तो दिखायी नहीं देते थे पर उसके कानों में संगीत की आवाज सुनायी पड़ती रहती।

पर इन सब चीज़ों में वह जादुई शीशा सबसे अच्छा था क्योंकि उसमें वह सब कुछ देख सकती थी जो वह चाहती थी।

जैसे जैसे दिन गुजरते गये उसने महसूस किया कि उसकी छोटी से छोटी इच्छा वहाँ उसके कहने से पहले ही पूरी हो जाती थी।

इस सबसे उसे ऐसा लगने लगा कि यह जानवर उसको बहुत चाहता है। और उसको इस बात का दुख होने लगा कि हर रात

जब भी वह उससे अपनी शादी बात करता और वह ना कर देती तो वह कितना दुखी हो कर वहाँ से जाता था।

एक दिन उसने उस शीशे में देखा कि उसके पिता बीमार थे तो उस रात उसने उस जानवर से कहा — "ओ जानवर, तुम हमेशा से मेरे लिये बहुत अच्छे रहे हो। क्या तुम मुझे मेरे पिता को देखने जाने दोगे? वह बहुत बीमार हैं और यह सोचते हैं कि शायद मैं मर चुकी हूँ।

मेहरबानी करके मुझे उनको देखने जाने दो। वह मुझको देख कर खुश हो जायेंगे। मैं तुमसे वायदा करती हूँ कि मैं सचमुच में वापस आ जाऊँगी।"

जानवर बड़ी नरमी से बोला — "ठीक है। तुम जाओ पर देखो एक हफ्ते से ज़्यादा नहीं रहना क्योंकि अगर तुम इससे ज़्यादा रहीं तो मैं तुम्हारे बिना दुख से मर जाऊँगा। क्योंकि मैं तुमको बहुत प्यार करता हूँ।"

सुन्दरी बोली — "पर मैं यहाँ से जाऊँ कैसे मुझको तो रास्ता ही नहीं मालूम।"

तब जानवर ने उसको एक अँगूठी दी और कहा कि जब वह सोने जाये तो उस अँगूठी को अपनी उँगली में पहन ले। उसमें लगा लाल वह अपनी हथेली की तरफ कर ले। इससे अगली सुबह जब वह उठेगी तो अपने पिता के घर में ही उठेगी। जब वह वापस

आना चाहेगी तो वह फिर उसी तरह करेगी तो वह यहाँ आ जायेगी।

उसने ऐसा ही किया। अगले दिन सुबह वह अपने पिता के घर में थी।

अपनी बेटी को अपने पास देख कर उसका पिता बहुत खुश हुआ पर उसकी बहिनों को उसका आना अच्छा नहीं लगा। और जब उन्होंने यह सुना कि वह जानवर उसके साथ कितनी अच्छी तरह से बरताव करता है तो उनको उसके अच्छे भाग्य से जलन होने लगी।

वह तो कितने अच्छे महल में रहती है जबकि वे एक छोटे से मकान में रहती हैं। मैरीगोल्ड बोली — "काश हम वहाँ चले जाते तो हम भी ऐसे ही रहते। सुन्दरी को हमेशा ही सबसे अच्छी चीज़ मिल जाती है।"

ड्रैसैलिन्डा सुन्दरी से बोली — "अच्छा ज़रा अपने महल के बारे में भी तो कुछ बताओ। तुम वहाँ क्या करती हो? कैसे बिताती हो अपना समय?"

सो सुन्दरी ने यह सोचते हुए कि यह सब उनको सुनने में अच्छा लगेगा अपनी सब बातें उनको बतायीं। और वह सब सुन सुन कर हर दिन उनकी जलन बढ़ती ही गयी।

आखिर ड्रैसैलिन्डा ने मैरीगोल्ड से कहा — "सुन्दरी ने उसको एक हफ्ते में वापस आने के लिये कहा है अगर हम उसको यह बात

किसी तरह भुला दें तो वह जानवर उससे नाराज हो जायेगा और उसको मार देगा। फिर हम लोगों को मौका मिल सकता है।"

सुन्दरी को अगले दिन जानवर के पास वापस जाना था। सो अगले दिन सुन्दरी के वापस जाने से पहले उन्होंने सुन्दरी के शराब के गिलास में पौपी[7] का रस मिला दिया जिसने उसको इतना सुलाया कि वह पूरे दो दिन और दो रात सोती रही।

अपनी नींद के आखिरी समय में उसने एक सपना देखा और उस सपने में उसने उस जानवर को उसके महल के बागीचे में गुलाबों के बीच में मरा पड़ा देखा। वह बहुत ज़ोर से रोते हुए उठ गयी।

हालाँकि उसको यह पता नहीं चला कि जानवर को छोड़े हुए उसको एक हफ्ते के ऊपर दो दिन और हो गये हैं फिर भी उसने अपनी अँगूठी का लाल अपनी हथेली की तरफ किया और सो गयी।

अगली सुबह जब वह उठी तो जानवर के महल में अपने बिस्तर पर थी। अब उसको यह तो नहीं मालूम था कि उस महल में उस जानवर के कमरे कहाँ हैं पर वह शाम के खाने तक का इन्तजार नहीं कर सकती थी।

[7] Poppy is a kind of flower – see its picture above.

उसको लगा कि उसको जानवर को अभी अभी देखना चाहिये। सो वह महल में उसका नाम पुकारते हुए इधर से उधर भागने लगी।

वह सारा बागीचा छान आयी पर उसका कहीं पता नहीं था। वह बोली — “ओह, अब मैं क्या करूँ मुझे तो वह कहीं मिल ही नहीं रहा। अब मैं फिर कभी खुश नहीं रह पाऊँगी।”

फिर उसको अपना सपना याद आया तो वह गुलाब के बागीचे में भागी गयी। वहाँ बड़े फव्वारे के पास वह बड़ा जानवर मरा पड़ा था। सुन्दरी तुरन्त ही उसके पास घुटनों के बल बैठ गयी।

वह रोते रोते बोली — “ओह प्यारे जानवर, क्या तुम वाकई मर गये हो? अगर ऐसा है तो मैं भी मर जाऊँगी। मैं तुम्हारे बिना नहीं रह सकती।”

लो यह सुन कर वह जानवर तो तुरन्त ही उठ कर बैठा हो गया और एक लम्बी सी साँस भर कर बोला — “सुन्दरी, क्या तुम मुझसे शादी करोगी?”

उसको ज़िन्दा देख कर तो सुन्दरी बहुत ही खुश हो गयी। वह बिना सोचे समझे तुरन्त बोली — “हाँ हाँ, मैं तुमसे शादी करूँगी क्योंकि मैं तुमसे बहुत प्यार करती हूँ।”

बस जैसे ही सुन्दरी ने यह कहा तो उस जानवर के खुरदरे बाल नीचे गिर पड़े और वहाँ जानवर के बदले में एक बहुत सुन्दर

राजकुमार खड़ा हुआ था। उसने सफेद और रुपहला सूट पहना हुआ था जैसा कि लोग शादी के समय पहनते हैं।

वह सुन्दरी के पैरों के पास बैठ गया और ताली बजायी और बोला — "प्रिय सुन्दरी, तुम्हारे प्यार के अलावा मेरे ऊपर का यह जादू और कोई नहीं तोड़ सकता था।"

तब राजकुमार ने सुन्दरी को अपनी कहानी सुनायी — "एक नीच परी ने मुझे जानवर में बदल दिया था। और मुझे तब तक इसी हालत में रहना था जब तक कि कोई कुँआरी लड़की मुझसे मेरी बदसूरती और बेवकूफी के बावजूद इतना प्यार न करने लगे कि वह मुझसे शादी करने के लिये तैयार हो जाये।

अब मेरा वह जादू टूट गया है। चलो प्रिये, अब हम अपने महल चलते हैं।

अब तुमको वहाँ मेरे सारे नौकर चाकर दिखायी देंगे। वे पहले इसलिये दिखायी नहीं देते थे क्योंकि उस परी ने उन सबके ऊपर भी जादू डाल दिया था। वे अब तक तुमको दिखायी दिये बिना ही तुम्हारी सेवा करते रहते थे। अब तुम उनको देख पाओगी।"

वे अपने महल में लौट आये। अब महल में खूब धूमधाम हो रही थी। वहाँ बहुत सारे राज दरबारी इधर उधर घूम रहे जो बड़ी बेसब्री से राजकुमार और राजकुमारी का हाथ चूमने का इन्तजार कर रहे थे।

वहाँ बहुत सारे नौकर भी इधर इधर घूम रहे थे। राजकुमार ने एक नौकर के कान में कुछ फुसफुसाया जिसे सुन कर वह बाहर चला गया और सुन्दरी के पिता और बहिनों को ले कर वापस आ गया।

सुन्दरी की बहिनों को मूर्तियाँ बना दिया गया और उनको महल के दरवाजे को दोनों तरफ खड़ा कर दिया गया जब तक कि उनके दिल नरम न हो जायें और वे अपनी बहिन के साथ किये गये बुरे बरताव पर पछताने न लगें।

सुन्दरी की राजकुमार के साथ शादी तो हो गयी पर सुन्दरी छिपे छिपे अपनी बहिनों की मूर्तियों को पास रोज जाती थी और रोती थी।

उसके आँसुओं ने उन पत्थर दिल मूर्तियों के दिलों को भी नरम कर दिया और वे फिर से ज़िन्दा हो गयीं और फिर ज़िन्दगी भर हर एक के लिये नरम दिल और दयावान रहीं।

सुन्दरी भी अपने जानवर के साथ जो अब जानवर नहीं था बल्कि एक सुन्दर राजकुमार था हँसी खुशी रही। मेरे ख्याल से वे अभी भी उस देश में खुशी खुशी रह रहे होंगे जहाँ सपने सच हो जाते हैं।

2 ज़ैलिन्डा और राक्षस[8]

सूअर राजा जैसी कहानियों की इस पुस्तक में यह कहानी इससे पहले वाली कहानी "सुन्दरी और जानवर" का दूसरा रूप है जो फ्रांस में कहा सुना जता है।

एक बार की बात है कि एक आदमी था जिसके तीन बेटियाँ थीं। उसकी तीसरी और सबसे छोटी बेटी सबसे सुन्दर और बहुत ही तमीजदार लड़की थी। उसके विचार भी बहुत अच्छे थे। इससे उसकी दोनों बड़ी बहिनें उससे बहुत जलती थीं जबकि उनका पिता उसको बहुत प्यार करता था।

ऐसा हुआ कि जनवरी के महीने में वहाँ के पड़ोस के शहर में एक मेला लगने वाला था तो उस आदमी को वहाँ से घर का कुछ जरूरी सामान लाना था। सो मेला जाने से पहले उसने अपनी तीनों बेटियों से पूछा कि वह मेला जा रहा है वह अपनी हैसियत के अनुसार उनके लिये वहाँ से क्या ले कर आये।

रोज़ीना जो उसकी सबसे बड़ी बेटी थी उसने उससे एक पोशाक लाने के लिये कहा। मरीटा यानी उसकी दूसरी बेटी बोली कि वह उसके लिये एक शाल ले कर आये। उसकी तीसरी सबसे छोटी बेटी ज़ैलिन्डा को केवल एक गुलाब का फूल चाहिये थो।

---

[8] Zelinda and the Monster. A version of the "Beauty and the Beast" tale from France. Taken from the Book "Italian Popular Tales" by Thomas Crane. 1885. Hindi translation of this book is available from hindifolktales@gmail.com

जब वह मेले में पहुँचा तो उसने वह सब खरीदा जो उसको खरीदना था। फिर उसने अपनी दोनों बेटियों के लिये पोशाक और शाल खरीदे पर बहुत कोशिशों के बाद भी अपनी छोटी बेटी के लिये गुलाब नहीं खरीद सका।

अपनी बेटी ज़ैलिन्डा को खुश करने के लिये जिस रास्ते पर वह आ रहा था उस रास्ते पर पड़ने वाली उसने पहली ही सड़क ले ली। चलते चलते वह एक बागीचे के पास ही आ गया।

उस बागीचे के चारों तरफ ऊँची ऊँची दीवार लगी हुई थी। दीवार में एक फाटक था। फाटक थोड़ा सा खुला हुआ था सो वह उसको खोल कर बागीचे के अन्दर आ गया। वहाँ एक कोने में एक गुलाब की एक बड़ी सी झाड़ी लगी हुई थी जिस पर बहुत सारी गुलाब की कलियाँ लगी हुई थीं।

वहाँ आ कर उसने चारों तरफ देखा तो वहाँ उसे कोई भी जीता जागता आदमी नजर नहीं आया जिससे वह एक गुलाब के फूल को तोड़ने की इजाज़त माँग ले। सो उस बेचारे गरीब आदमी ने हाथ बढ़ा कर उसमें से एक गुलाब का फूल अपनी ज़ैलिन्डा के लिये तोड़ लिया।

हे भगवान। जैसे ही उसने डाल पर से गुलाब का फूल तोड़ा तो बड़े ज़ोर की आवाज हुई और जमीन से आग की लपटें निकलने लगीं। तुरन्त ही उसमें से एक राक्षस निकल पड़ा जिसकी शक्ल ड्रैगन जैसी थी। निकलते ही वह ज़ोर से फुँकार मारने लगा।

गुस्से के मारे वह चिल्ला कर उस आदमी से बोला — “ओ बदतमीज आदमी। यह तूने क्या किया। अब तुझे इसके लिये मरना ही होगा क्योंकि तूने मेरी गुलाब की झाड़ी को बर्बाद किया है।

वह बेचारा गरीब आदमी तो बस डर से मर ही गया। वह रोने चिल्लाने लगा और घुटनों के बल बैठ कर अपनी गलती के लिये उससे दया की प्रार्थना करने लगा।

उसने उसे बताया कि वह गुलाब उसने क्यों तोड़ा था और फिर वहाँ से उससे जाने की आज्ञा माँगी — “मेहरबानी कर के मुझे जाने दीजिये। मेरा परिवार है। अगर मैं मरा गया तो मेरा परिवार तो बर्बाद हो जायेगा।”

पर वह राक्षस तो और बार से भी ज़्यादा नीच हो रहा था बोला — “तुमको मरना ही चाहिये। या तो मुझे वह लड़की ला कर दो जिसने तुमसे गुलाब मँगवाया है वरना मैं तुम्हें इसी पल मार दूँगा।”

राक्षस को प्रार्थना और रो धो कर नहीं बहलाया जा पा रहा था। वह अपने फैसले पर अटल था और उस गरीब आदमी को घर नहीं जाने दे रहा था जब तक कि वह अपनी बेटी ज़ैलिन्डा को वहाँ बागीचे में लाने के लिये हाँ न कर दे।

ज़रा सोचो कि वह गरीब आदमी अपने दिल पर कितना बड़ा पत्थर ले कर घर लौटा होगा। घर आ कर उसने अपनी दोनों बड़ी बेटियों को उनकी चीज़ें दीं और ज़ैलिन्डा को उसका गुलाब दिया पर

उसका चेहरा बिल्कुल सफेद पड़ा हुआ था जैसे वह अभी अभी कब्र में से निकल कर आया हो।

उसकी बेटियाँ उसका चेहरा देख कर डर गयीं और अपने पिता से पूछा कि क्या बात थी। वह इतना डरा हुआ क्यों था। क्या उसके साथ रास्ते में कोई बुरी घटना घटी थी।

उनके बार बार पूछने पर वह बहुत ज़ोर से रो पड़ा। उसने उनको वह सब कुछ बताया जो रास्ते में उसके साथ घटा था कि किस शर्त पर वह घर लौट सका था। अन्त में वह बोला कि या तो वह राक्षस ज़ैलिन्डा को खायेगा या फिर मुझे।

यह सुन कर दोनों बड़ी बहिनों ने अपना सारा गुस्सा ज़ैलिन्डा पर उतारा। वे बालीं — "अब देखो ज़रा इसको अब यह राक्षस के मुँह में जायेगी। यह जो इस मौसम में गुलाब का फूल चाहती थी। पिता जी नहीं जायेंगे वह हमारे साथ ही रहेंगे। यह बेवकूफ लड़की।"

यह सब सुन कर ज़ैलिन्डा बिना किसी नाराजी के बोली — "ठीक है जिसकी वजह से यह मुसीबत आयी है वही राक्षस के पास जायेगा। उसी को उसकी कीमत चुकानी चाहिये। पिता जी मैं उस राक्षस के पास जाऊँगी। आप मुझे बागीचे में उसके पास ले चलिये फिर जो भगवान की इच्छा।"

अगले दिन ज़ैलिन्डा का पिता दुखी हो कर ज़ैलिन्डा को बागीचे ले चला। शाम को वे लोग बागीचे पहुँच गये।

जब वे दोनों उस दरवाजे के अन्दर घुसे तो पहले की तरह वहाँ कोई भी नहीं था पर वहाँ एक बहुत बड़ा महल खड़ा था जिसमें चारों तरफ रोशनी हो रही थी और जिसके दरवाजे खुले पड़े थे।

जब दोनों यात्री उसमें घुसे तो अचानक चार संगमरमर की मूर्तियाँ ऊपर से एक एक टार्च लिये नीचे उतरीं और उनको एक कमरे की सीढ़ियों तक साथ ले गयीं। उस कमरे में एक बहुत बड़ी मेज बिछी हुई थी और उस पर बहुत सारा और बहुत स्वादिष्ट खाना लगा हुआ था।

यात्री लोग जो बहुत भूखे थे और बिना किसी रस्मों रिवाज के उन्होंने वहाँ खाना खाया। जब उन्होंने खाना खा लिया तो वे ही मूर्तियाँ उन्हें रात के सोने के लिये दो कमरों की तरफ ले गयीं।

जब वे गुलाब की झाड़ी के पास आये तो वह अपनी पूरी बदसूरती के साथ वहाँ प्रगट हुआ। ज़ैलिन्डा तो उसको देख कर डर के मारे पीली पड़ गयी। उसके हाथ पैर काँपने लगे पर राक्षस उसको अपनी अंगारे जैसी आँखों से बड़े ध्यान से देखता रहा।

फिर वह आदमी से बोला — "मुझे खुशी है कि तुमने अपना वायदा पूरा किया। मैं सन्तुष्ट हूँ। अब तुम अपने घर जाओ और इस नौजवान लड़की को मेरे पास छोड़ जाओ।"

यह सुन कर आदमी तो बस मर ही गया। ज़ैलिन्डा भी वहाँ आँखों में आँसू भरे खड़ी रही। कोई प्रार्थना तो उसकी काम करेगी नहीं। वह राक्षस तो पत्थर बना बैठा रहा।

आदमी को अपनी प्यारी ज़ैलिन्डा को राक्षस के पास छोड़ कर वापस जाना ही पड़ा। जब राक्षस ज़ैलिन्डा के साथ अकेला रह गया तो उसने उसको सहलाना और मीठी मीठी बातें करना शुरू किया। वह अपने आपको बहुत सभ्य दिखाने की कोशिश कर रहा था।

उसको भूलने का तो कोई खतरा था ही नहीं। उसने यह भी देख लिया था कि ज़ैलिन्डा को किसी चीज़ की जरूरत नहीं थी। वह उसको रोज बागीचे ले जाता था और उससे पूछता कि क्या वह उससे प्यार करती थी। क्या वह उसकी पत्नी बनेगी।

वह लड़की रोज उसको वही जवाब देती "सर मैं आपको पसन्द तो करती हूँ पर आपसे शादी नहीं करूँगी।" इस बात पर राक्षस कुछ दुखी हो जाता और उसको सहलाना और ध्यान दोगुना कर देता।

वह कहता — "देखो ज़ैलिन्डा अगर तुम मुझसे शादी कर लोगी तो तुम्हारे साथ बहुत अच्छी अच्छी बातें घटेंगी। वे अच्छी बातें क्या होंगी यह मैं तुम्हें अभी नहीं बता सकता जब तक तुम मेरी पत्नी नहीं बन जातीं।"

ज़ैलिन्डा हालाँकि उस जगह से कोई असन्तुष्ट नहीं थी और जिस तरीके से उसके साथ रानी जैसा बर्ताव किया जा रहा था उससे भी उसको कोई ऐतराज नहीं था पर वह उस राक्षस से शादी करने की बात मन में सोच भी नहीं सकती थी क्योंकि वह बहुत ही

बदसूरत था और राक्षस जैसा लगता था। सो वह उसकी प्रार्थनाओं का जवाब भी वैसे ही देती थी।

एक दिन राक्षस ने ज़ैलिन्डा को जल्दी में अपने पास बुलाया और उससे कहा — "देखो ज़ैलिन्डा सुनो। अगर तुम मुझसे शादी करने के लिये राजी नहीं होतीं तो इसका मतलब यह है कि फिर तुम्हारे पिता को मरना ही चाहिये।

वह बीमार है और दुख से मर रहा है। तुम उसको फिर कभी देख भी नहीं पाओगी। तुम अपने आप देख लो कि मैं तुमसे सच बोल रहा हूँ या नहीं।" यह कह कर उसने एक जादुई शीशा निकाला और उसमें उसके पिता को बीमार दिखा दिया।

यह दृश्य देख कर ज़ैलिन्डा बहुत जोर से रो पड़ी और बोली — "हे भगवान बचाओ मेरे पिता को बचाओ। उनके मरने से पहले मुझे अपने पिता से मिलने दो। मैं वायदा करती हूँ कि मैं तुम्हारी वफादार और हमेशा के लिये पत्नी रहूँगी और वह भी अभी से। मेहरबानी कर के मेरे पिता को बचाओ।"

जैसे ही ज़ैलिन्डा ने यह कहा तो वह राक्षस एक बहुत सुन्दर नौजवान में बदल गया। ज़ैलिन्डा को इस बदलाव को देख कर बहुत आश्चर्य हुआ।

नौजवान ने उसका हाथ पकड़ा और बोला — "सुनो ज़ैलिन्डा। मैं औरेन्जैज़ के राजा[9] का बेटा हूँ। एक बूढ़ी जादूगरनी ने मुझे छू

[9] The King of Oranges

कर इस राक्षस में बदल दिया था और इस गुलाब की झाड़ी में तब तक छिपे रहने का शाप दिया था जब तक कि कोई लड़की मुझसे शादी करने के लिये तैयार न हो जाये।"

बाकी बची इस कहानी में कोई ऐसी मजेदार बात नहीं है। ज़ैलिन्डा और उसका पति पति के माता पिता से शादी की इजाज़त लेने जाते हैं। वे इस शादी के लिये मना कर देते हैं तो यह जोड़ा वहाँ से भाग जाता है और एक ओगरे और उसकी पत्नी के चंगुल में फँस जाता है जहाँ से वे फिर भाग जाते हैं।

3 जंगल में झोंपड़ी

एक बार की बात है कि एक लकड़हारा अपनी पत्नी और तीन बेटियों के साथ एक सुनसान जंगल के किनारे पर एक झोंपड़ी में रहता था।

एक सुबह जब वह अपने काम पर जाने के लिये निकल रहा था तो उसने अपनी पत्नी से कहा — "मेरी सबसे बड़ी बेटी को मेरा खाना ले कर भेज देना नहीं तो मेरा काम नहीं हो पायेगा। वह रास्ता न भूले इसलिये मैं एक थैला बाजरे का लेता जाऊँगा और उसे रास्ते पर डालता जाऊँगा।"

जब सूरज जंगल के ऊपर बीच में पहुँचा तो उसकी सबसे बड़ी बेटी उसका खाना ले कर अपने पिता की तरफ रवाना हुई पर किसान का फैलाया हुआ बाजरा जंगल की बहुत सारी चिड़ियें खा गयी थीं सो वह रास्ता नहीं पा सकी।

पर यह सोच कर कि शायद वह अपने पिता के पास पहुँच जाये चलती रही चलती रही। चलते चलते शाम हो गयी सूरज डूब गया। रात में पेड़ के पत्तों की सरसराहट सुनायी देने लगी। उल्लुओं की आवाज सुनायी देने लगी तो वह डरने लगी। तभी उसे पेड़ों के बीच से एक चमकती रोशनी दिखायी दी।

उसने सोचा कि शायद वहाँ पर कुछ लोग रहते होंगे वे मुझे रात के लिये शरण दे देंगे। सो वह उस रोशनी की तरफ चल दी।

जल्दी ही वह उस मकान तक आ पहुँची। उस मकान की सारी खिड़कियों से रोशनी निकल रही थी।

उसने दरवाजा खटखटाया तो एक फटी हुई आवाज ने कहा "अन्दर आ जाओ।"

लड़की अँधेरे दरवाजे में से हो कर अन्दर घुसी और फिर कमरे का दरवाजा खटखटाया तो फिर उसी आवाज ने कहा "आ जाओ।"

जब वह अन्दर गयी तो उसने देखा कि वहाँ एक सफेद बालों वाला आदमी खाने की मेज पर बैठा हुआ था। उसका सिर उसके दोनों हाथों में रखा हुआ था।

उसकी सफेद दाढ़ी मेज से नीचे तक जमीन पर लटक रही थी। उसकी अँगीठी के पास तीन जानवर बैठे हुए थे – एक मुर्गी एक मुर्गा और एक चितकबरी गाय।

लड़की ने उसे अपनी कहानी सुनायी और उससे प्रार्थना की कि वह उसे रात भर के लिये शरण दे दे। आदमी बोला —

ओ सुन्दर मुर्गी ओ सुन्दर मुर्गे
और सुन्दर चितकबरी गाय तुम इसे क्या कहते हो

जानवर बोले "डक्स"। जिसका मतलब होता है कि "हाँ आप इसे रख लीजिये।"

बूढ़ा बोला — “तुमको यहाँ शरण और खाना मिल जायेगा। जाओ आग के पास जाओ और हमारे लिये खाना बनाओ।”

लड़की रसोईघर में गयी तो वहाँ हर चीज़ बहुतायत में थी। उसने वहाँ बहुत अच्छा खाना बनाया और सारा खाना मेज पर लगा दिया। फिर वह सफेद बालों वाले के पास जा कर बैठ गयी। उसने पेट भर कर खाना खाया।

खाने के बाद उसने कहा — “मैं अब थक गयी हूँ। मेरा पलंग कहाँ है जहाँ मैं लेट सकूँ और सो सकूँ।” जानवर बोले —

तुमने उसके साथ खाया है तुमने उसके साथ पिया है
पर तुमने हमारे बारे में तो सोचा ही नहीं
इसलिये तुम अपने सोने की जगह अपने आप ही ढूँढो

तब बूढ़े ने कहा — “तुम ऊपर जाओ तो तुमको एक कमरा मिलेगा जिसमें दो पलंग बिछे होंगे। उनको झाड़ लेना और उन पर सफेद चादरें बिछा लेना। मैं भी अभी ऊपर सोने के लिये आता हूँ।”

लड़की ऊपर चली गयी जब उसने पलंग झाड़ लिये और उन पर सफेद चादरें बिछा लीं तो वह बूढ़े का इन्तजार किये बिना ही उनमें से एक पलंग पर लेट गयी।

कुछ देर बाद बूढ़ा आया उसने अपनी मोमबत्ती ली लड़की की तरफ देखा और अपना सिर हिलाया। जब उसने देखा कि लड़की

गहरी नींद सो गयी तो उसने फर्श में बना हुआ एक छिपा हुआ दरवाजा खोला और उसमें उसे नीचे वाले कमरे में उतार दिया।

रात गये लकड़हारा घर वापस आया और अपनी पत्नी को डाँटा कि उसकी वजह से वह सारा दिन भूखा रहा। पत्नी बोली — "यह मेरी गलती नहीं है। बेटी सुबह तुम्हारा खाना ले कर गयी थी पर लगता है कि कहीं खो गयी है पर यकीनन वह कल सुबह तक आ जायेगी।"

अगले दिन लकड़हारा फिर से जंगल जाने के लिये जल्दी उठा और अपनी पत्नी से बोला कि उस दिन वह उसकी दूसरी बेटी को उसका खाना ले कर भेज दे।

उस दिन वह एक दाल का थैला ले जायेगा और पूरे रास्ते दाल गिराता जायेगा। क्योंकि दाल बाजरे के दाने से बड़ी होती है तो वह लड़की को आसानी से दिखायी दे जायेगी ताकि वह रास्ता न खोये।

सो दोपहर को वह लड़की अपने पिता के लिये खाना ले कर जंगल की तरफ चल दी। वह दाल भी बाजरे की तरह ही गायब हो गयी थी। जंगल की चिड़ियें उन दानों को खा गयी थीं।

वह लड़की भी भटक गयी और रात को जब उसे एक मकान की रोशनी दिखायी पड़ी तो वह भी उसी मकान की तरफ चल दी। वहाँ उसे भी अन्दर आने को कहा गया। उसने भी वहाँ खाना और शरण की प्रार्थना की तो बूढ़े ने अपने जानवरों से पूछा —

ओ सुन्दर मुर्गी ओ सुन्दर मुर्गे
और सुन्दर चितकबरी गाय तुम इसे क्या कहते हो

जानवर बोले "डक्स"। जिसका मतलब होता है कि "हॉ आप इसे रख लीजिये।"

बूढ़ा उससे भी बोला — "तुमको यहॉ शरण और खाना मिल जायेगा। जाओ आग के पास जाओ और हमारे लिये खाना बनाओ।"

यह लड़की भी रसोईघर में गयी तो वहॉ हर चीज़ बहुतायत में थी। उसने वहॉ बहुत अच्छा खाना बनाया और सारा खाना मेज पर लगा दिया। फिर वह सफेद बालों वाले के पास जा कर बैठ गयी। उसने पेट भर कर खाना खाया।

खाने के बाद उसने भी कहा — "मैं अब थक गयी हूँ। मेरा पलंग कहॉ है जहॉ मैं लेट सकूँ और सो सकूँ।" जानवर बोले —

तुमने उसके साथ खाया है तुमने उसके साथ पिया है
पर तुमने हमारे बारे में तो सोचा ही नहीं
इसलिये तुम अपने सोने की जगह अपने आप ही ढूँढो

तब बूढ़े ने कहा — "तुम ऊपर जाओ तो तुमको एक कमरा मिलेगा जिसमें दो पलंग बिछे होंगे। उनको झाड़ लेना और उन पर सफेद चादरें बिछा लेना। मैं भी अभी ऊपर सोने के लिये आता हूँ।"

यह लड़की भी ऊपर चली गयी और जब उसने पलंग झाड़ लिये और उन पर सफेद चादरें बिछा लीं तो वह बूढ़े का इन्तजार किये बिना ही उनमें से एक पलंग पर लेट गयी।

कुछ देर बाद बूढ़ा आया उसने अपनी मोमबत्ती ली लड़की की तरफ देखा और अपना सिर हिलाया। जब उसने देखा कि लड़की गहरी नींद सो गयी तो उसने फर्श में बना हुआ एक छिपा हुआ दरवाजा खोला और उसमें उसे भी नीचे वाले कमरे में उतार दिया।

तीसरे दिन लकड़हारे ने अपनी पत्नी से कहा कि वह उस दिन उसकी सबसे छोटी बेटी को उसका खाना ले कर भेज दे। वह हमेशा से ही बहुत अच्छी और कहना मानने वाली रही है।

वह अपने रास्ते पर अडिग रहेगी और किसी भी शहद की मक्खी के पीछे नहीं भागेगी जैसे उसकी बहिनें भागी थीं।

पत्नी अपनी छोटी बेटी को भेजने के पक्ष में नहीं थी। वह बोली — "क्या मुझे अपनी यह बेटी भी खोनी पड़ेगी?"

पिता बोला — "तुम चिन्ता न करो। वह नहीं खोयेगी। वह बहुत समझदार है। मैं कुछ मटर ले जाऊँगा ये दाल से भी बड़ी होती है और उसे रास्ता भटकने से रोकेगी।"

पर जब वह लड़की अपनी टोकरी ले कर जंगल की तरफ गयी तब तक लकड़हारे की डाली हुई मटर कबूतर खा गये थे सो वहाँ अब एक भी दाना दिखायी नहीं दे रहा था। लड़की को रास्ते का ही पता नहीं चल रहा था।

वह बहुत दुखी थी और यही सोचे जा रही थी कि उसके पिता कितने भूखे होंगे। और अगर वह घर नहीं पहुँची तो उसकी माँ भी कितनी दुखी होगी। आखिर अँधेरा होने लगा तो उसने भी उसी मकान की रोशनी देखी और वह भी उसी मकान की तरफ चल दी।

वहाँ पहुँच कर उसने वहाँ बड़ी नम्रता से रहने की जगह माँगी और बूढ़े ने एक बार फिर अपने जानवरों से पूछा —

ओ सुन्दर मुर्गी ओ सुन्दर मुर्गे
और सुन्दर चितकबरी गाय तुम इसे क्या कहते हो

जानवर बोले "डक्स"।

यह लड़की स्टोव की तरफ गयी जहाँ जानवर थे तो उसने जानवरों को थपथपाया। उसने मुर्गे और मुर्गी को सहलाया और चितकबरी गाय के सींगों के बीच हाथ फेरा।

बूढ़े के कहे अनुसार उसने वहाँ बहुत अच्छा सूप बनाया और कटोरे लगा कर मेज पर लगा दिया। फिर उसने पूछा — "क्या मैं पेट भर कर खाऊँ जबकि जानवरों के पास खाने के लिये कुछ नहीं है। बाहर बहुत खाना है मैं पहले उनके लिये खाने का इन्तजाम करती हूँ।"

सो वह बाहर चली गयी और बाहर पड़े जौ को उबाल कर मुर्गे और मुर्गी को दिया। मुर्गा और मुर्गी दोनों ही उस खाने पर टूट पड़े। चितकबरी गाय को उसने मीठा भूसा दिया सो उसने भी पेट

भर कर खाना खाया। वह बोली — "आशा है तुमको यह खाना पसन्द आया होगा। अगर जरूरत होगी तो तुमको पानी भी मिलेगा।"

कह कर उसने मुर्गे और मुर्गी के लिये एक बालटी में पानी ला कर रखा। वे दोनों तुरन्त ही उसके किनारे पर बैठ कर पानी पीने लगे। गाय ने भी खूब पानी पिया।

जब जानवरों ने खाना खा लिया पानी पी लिया तो वह भी सफेद बालों वाले के पास जा कर बैठ गयी और उसने वही खाया जो बूढ़े ने छोड़ दिया था। जल्दी ही मुर्गा और मुर्गी अपने परों में अपना अपना सिर छिपाने लगे। गाय भी अपनी ऑखें झपकाने लगी।

लड़की ने बूढ़े से कहा — "अब हम लोगों को भी सोने जाना चाहिये।

ओ सुन्दर मुर्गी ओ सुन्दर मुर्गे
और सुन्दर चितकबरी गाय तुम क्या कहते हो

जानवर बोले — "डक्स।"

तुमने हमारे साथ खाया है तुमने हमारे साथ पिया है
तुमने हमारे बारे में विचार किया इसलिये हम तुमको गुड नाइट कहते हैं

तब लड़की ऊपर गयी पंखों के बिस्तरों को झाड़ा उन पर साफ चादरें बिछायीं। जब उसने यह कर लिया तो बूढ़ा भी ऊपर आ

गया और एक पलंग पर लेट गया। उसकी दाढ़ी उसके पैरों तक आ रही थी। लड़की दूसरे पलंग पर लेट गयी अपनी प्रार्थना की और सो गयी।

वह आधी रात तक तो शान्ति से सोती रही पर फिर घर में कुछ शोर होने लगा जिससे उसकी ऑख खुल गयी। घर के टूटने की आवाजें चारों तरफ से आ रही थीं। दरवाजा खुलने बन्द होने लगे और दीवार में लगने लगे।

मकान की शहतीरें भी टूटने लगीं जैसे वे सब नीचे गिर जायेंगी। ऐसा लग रहा था जैसे सीढ़ियॉ भी टूट रही हों। तभी एक बहुत ज़ोर की आवाज हुई और ऐसा लगा जैसे पूरा घर ही गिर पड़ा हो। फिर यकायक शान्ति हो गयी। लड़की को कोई नुकसान नहीं हुआ।

सुबह सवेरे जब वह उठी तो धूप चमक रही थी और उसने क्या देखा? वह एक बहुत बड़े कमरे में लेटी हुई थी। उसके चारों तरफ की सब चीज़ें शाही शान से चमक रही थीं।

दीवार पर हरे रंग की सिल्क पर सुनहरे फूल थे। पलंग हाथीदॉत का था और उसकी छतरी लाल मखमल की थी। पास की पड़ी हुई एक कुरसी पर मोतियों से कढ़े जूते रखे थे।

लड़की को लगा वह एक सपना था।

पर नहीं। वह सपना नहीं था। तीन नौकर वहॉ आये और उससे पूछने लगे कि उसे क्या चाहिये।

उसने जवाब दिया — "अगर तुम यहाँ से जाओ तो मैं तुरन्त ही उठ कर सबसे पहले बूढ़े के लिये सूप बनाना चाहूँगी। फिर उन सुन्दर मुर्गे मुर्गी और गाय को खाना खिलाना चाहूँगी।"

उसको लगा कि बूढ़ा उससे पहले ही उठ गया है। उसने अपने पलंग के चारों तरफ देखा तो वहाँ तो वह बूढ़ा नहीं था बल्कि कोई अजनबी था। उसने जब अजनबी को ध्यान से देखा तो देखा कि वह तो एक सुन्दर नौजवान था।

वह भी जाग गया था और अपने पलंग पर बैठा हुआ था। वह बोला — "मैं एक राजा का बेटा हूँ। एक जादूगर ने मेरे ऊपर जादू डाल कर मुझे बूढ़ा बना दिया था और इस जंगल में रहने के लिये मजबूर कर दिया था।

किसी को भी मेरे साथ रहने की इजाज़त नहीं थी सिवाय मेरे तीन नौकरों के। और ये तीन नौकर भी एक मुर्गी एक मुर्गे और एक गाय के रूप में।

यह जादू तभी टूट सकता था जब मेरे साथ कोई ऐसी लड़की आ कर रहती जो दिल की बहुत अच्छी होती। जिसके दिल में प्यार ही प्यार भरा होता न केवल आदमियों के लिये बल्कि जानवरों के लिये भी। जैसा कि तुम्हारे दिल में है। तुम्हीं ने आधी रात को यह जादू तोड़ दिया। और यह पुरानी झोंपड़ी मेरे महल में बदल गयी।"

उसके बाद राजा के बेटे ने अपने तीनों नौकरों को लड़की के माता पिता को वहाँ लाने का हुक्म दिया ताकि उनकी शादी की दावत में शामिल हो सकें।

लड़की ने तुरन्त ही पूछा — "पर मेरी दोनों बहिनें कहाँ हैं?"

"मैंने उन्हें नीचे वाले कमरे में बन्द कर दिया है। कल उन्हें जंगल ले जाया जायेगा और वे वहाँ तब तक एक कोयला बनाने वाले के पास उनकी नौकरानियाँ बन कर रहेंगी जब तक उनके दिलों में दया पैदा न हो जाये कि वह जानवरों को भूखा छोड़ दें।"

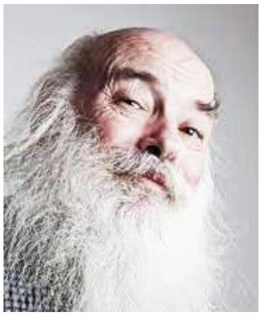

4 भालू राजकुमार[10]

बच्चो तुम लोगों ने "मेंढक राजकुमार" की कहानी तो पढ़ी होगी जिसमें एक परी ने एक राजकुमार को शाप दे कर एक मेंढक बना दिया था और कहा था कि "तुम तभी अपने असली रूप में आओगे जब कोई लड़की तुमको चूमेगी।" अगर नहीं पढ़ी हो तो इसको जरूर पढ़ना यह कहानी सूअर राजा जैसी कहानियाँ–2 पुस्तक में दी गयी है।

अभी हम तुम्हें एक भालू राजकुमार की कहानी सुनाते हैं। इस कहानी में एक जादूगरनी एक राजकुमार को दिन में भालू और रात को आदमी बना देती है। यह कहानी उत्तरी अमेरिका महाद्वीप के मैक्सिको देश में कही सुनी जाती है।

---

[10] The Bear Prince (El Principe Oso) – a folktale from Mexico, Central America.
Translated from the Web Site : http://www.g-world.org/magictales/oso.html
Adopted, retold and written by Doris M Vazquez
The classical form of "El Principe Oso' (the Bear Prince) is the story of "Cupid and Psyche," which was first told by Apuleius in his narrative "The Golden Ass". It was retold in the 19th century by Walter Pater in Marius the Epicurean. This classical form of the tale, however, does not represent the original form from which the modern European versions are derived. This version is even farther from the original, since it is actually a compilation of two entirely different types of stories, Aarne-Thompson's Types 425 C and 325.

"Cupid and Psyche" has been known in literary circles for more than two thousand years. This tale is reported in every part of Europe. In the Western half, several countries have reported more than fifty versions. In Italy alone sixty-one oral variants have been recorded. This tale, recorded by Keightley, later was mentioned by Wilford in his Asiatic Researches, Vol.1X, p. 147. The same version later received much more scholarly treatment in Weber's Indische Studien, Vol. XV, pp. 252 et seq. In 1926 Edgerton in his Vikrama's Adventures, Harvard Oriental Series, Vol. XXV1, pp.263-66, edited and translated into English a version from the three known texts.

This tale may be compared to – Aarne-Thompson: Types 425A; 425C and tentatively 325; Apuleius: "Cupid and Psyche"; A.M. Espinosa: Tale 127; G Basile: Day 11, Tale 5; Grimm: Tale 88.

बहुत दिन पहले की बात है कि मैक्सिको देश के एक गाँव में एक लकड़हारा रहता था। उसके तीन सुन्दर बेटियाँ थीं। इन तीनों बेटियों में उसकी सबसे छोटी बेटी बहुत सुन्दर थी।

एक दिन वह लकड़हारा एक जंगल में लकड़ी काटने गया। वहाँ वह एक ओक का पेड़[11] काट रहा था कि एक बहुत ही बड़े और भयानक भालू ने उसके हाथ से उसकी कुल्हाड़ी छीन ली।

भालू उस लकड़हारे पर गुर्राया — "तुमको मेरे जंगल में से पेड़ काटने की इजाज़त किसने दी? तुम मेरी लकड़ी चुराते रहे हो अब तुम यहाँ से लकड़ी काटने की कीमत अपनी ज़िन्दगी से दो।"

वह गरीब लकड़हारा गिड़गिड़ाया — "मुझे माफ कर दीजिये मिस्टर ओसो[12]। मैं तो यह लकड़ी केवल बेचने के लिये ही काट रहा था ताकि मैं अपनी तीन छोटी छोटी बेटियों का पेट भर सकूँ। अगर आप मुझे मार देंगे तो मेरी तीनों बेटियाँ भूख से मर जायेंगी।"

यह सुन कर भालू सोच में पड़ गया फिर बोला — "तुम्हारे पास अपनी जान बचाने का केवल एक ही तरीका है। तुमको अपनी तीन बेटियों में से एक बेटी की शादी मुझसे करनी पड़ेगी।"

---

[11] Oak tree – a large shady kind tree

[12] Mister Oso – name of the Bear

यह सुन कर लकड़हारा तो भौंचक्का रह गया। उसकी कुछ समझ में नहीं आया कि वह क्या कहे या क्या करे। आखीर में उसने सोचा कि मरने से और अपनी बेटियों को अकेला छोड़ने से तो अच्छा यही है कि भालू की बात मान ली जाये।

सो वह लकड़हारा घर लौट आया और आ कर अपनी बेटियों को बताया कि उस दिन उसके साथ क्या हुआ। सुनते ही उसकी दो बड़ी बेटियाँ बोलीं — "हम तो भालू से शादी करने की बजाय मर जाना ज़्यादा पसन्द करेंगी पिता जी।"

निन्फ़ा[13] जो उसकी सबसे छोटी बेटी थी बोली — "पिता जी, उस भालू से शादी मैं करूँगी।"

अगले दिन वह लकड़हारा और उसकी सबसे छोटी बेटी निन्फ़ा दोनों जंगल गये। भालू वहाँ उनका इन्तजार कर रहा था। उस सुन्दर लड़की को देख कर वह भालू बहुत ही खुश हो गया।

निन्फ़ा उस भालू से बोली — "मिस्टर ओसो, मेरी माँ ने मुझे हमेशा यही सिखाया कि सब चीज़ों में मुझे भगवान के नियम को ही मानना चाहिये। सो अगर मैं तुमसे शादी करूँगी तो कैथोलिक रीति रिवाज[14] के अनुसार ही करूँगी।"

भालू को इसमें कोई परेशानी नहीं थी। वह इस शर्त पर कि शादी कैथोलिक रीति रिवाज से ही होगी राजी हो गया पर इस शर्त

---

[13] Ninfa – name of the youngest daughter of the woodcutter

[14] Christians normally have three sects or branches – Coptics, Catholics and Protestants. Catholics are older than the Protestants and are more conservative than Protestants.

के साथ कि उसके पादरी[15] को वहीं जंगल में ही आना पड़ेगा और उसकी शादी वहीं होगी।

सो वह लकड़हारा किसी पादरी को ढूँढने चला गया और जल्दी ही उसको ले कर वापस भी आ गया। उस पादरी ने उस भालू और निन्फ़ा की शादी करा दी।

शादी के बाद भालू निन्फ़ा को अपनी गुफा में ले गया। जब रात हुई तो भालू ने गाया —

वह भालू जो इतने बालों वाला है वह भालू जो इतना डराने वाला है
बदल जा एक सुन्दर और मन लुभाने वाले राजकुमार में बदल जा

और एक पल में ही वह भालू एक बहुत ही सुन्दर राजकुमार बन गया। उसने निन्फ़ा से कहा — "मैं एक जादू का राजकुमार हूँ। मुझे एक बुरी जादूगरनी[16] ने अपने जादू से दिन में भालू और रात में आदमी बना रखा है।

तुम यहाँ पर कुछ भी कर सकती हो पर एक शर्त पर कि तुम यह किसी को नहीं बताओगी कि मैं एक जादू डाला गया राजकुमार हूँ।"

निन्फ़ा उस भालू को राजकुमार के रूप में देख कर बहुत खुश हुई और उसने राजकुमार से वायदा किया कि वह यह भेद किसी को नहीं बतायेगी।

---

[15] Priest, of course here the Catholic priest. Priest in Christians are like Pandit in Hindu and Kaazee in Muslims.

[16] Translated for the word "Witch"

अगली सुबह जब वे दोनों सो कर उठे तो राजकुमार ने फिर गाया —

राजकुमार जो इतना सुन्दर और मन को लुभाने वाला है
वह एक बालों वाले और डराने वाले भालू में बदल जा

और तुरन्त ही वह राजकुमार भालू में बदल गया।

दिन पर दिन बीतते गये। एक दिन निन्फ़ा के मन में यह इच्छा उठी कि वह अपने गाँव अपने घर जाये और अपने पिता और बहिनों से मिले पर वह नहीं जानती थी कि वह इस बात की इजाज़त राजकुमार से कैसे ले।

पर आखिर उसने हिम्मत बटोर कर राजकुमार से कह ही दिया — "प्रिये, तुम्हारे अलावा मेरा यहाँ और कोई नहीं है जिससे मैं बात कर सकूँ। मेरी बहुत इच्छा है कि तुम मुझे मेरे गाँव जाने और मेरे परिवार से मिलने की इजाज़त दे दो।

मेरा गाँव यहाँ से बहुत दूर नहीं है। अगर मैं सुबह जल्दी ही यहाँ से चल दूँगी तो अँधेरा होने से पहले पहले ही यहाँ वापस भी आ जाऊँगी।"

हालाँकि राजकुमार निन्फ़ा को जाने तो नहीं देना चाहता था पर फिर उसकी जिद देख कर उसने उसको जाने की इजाज़त दे दी।

पर उसने जाने के समय उसको फिर से याद दिला दिया कि वह अपना किया हुआ वायदा न भूले यानी कि वह अपने पति का भेद

किसी पर भी न खोले। निन्फ़ा ने कहा कि वह अपना वायदा अवश्य याद रखेगी।

अगले दिन निन्फ़ा सुबह सवेरे जल्दी उठी और अपने बहुत बढ़िया कपड़े और गहने पहन कर अपने पिता और बहिनों से मिलने चली गयी। उसके पिता और बहिनों ने जब उसे देखा तो वे सब उसको देख कर बहुत खुश हुए और उसका स्वागत किया।

शैतान तो कभी सोता नहीं सो उसने निन्फ़ा की बहिनों के दिल में निन्फ़ा के लिये जलन पैदा कर दी।

उन्होंने जल्दी ही निन्फ़ा का मजाक बनाना शुरू कर दिया क्योंकि निन्फ़ा बहुत बढ़िया कपड़े और कीमती जवाहरात पहने थी। उसकी बहिनें उसको यह कह कह कर बार बार कोंचती रहीं कि कितने शरम की बात है कि उसने एक भालू से शादी की है।

उसकी बहिनों ने यह इतनी ज़्यादा बार कहा कि निन्फ़ा को गुस्सा आ गया और उसने अपने पति का भेद उनको बता दिया। यह सुन कर उसकी बहिनें तो बहुत ही आश्चर्य में पड़ गयीं।

उसकी सबसे बड़ी बहिन बोली — "तो निन्फ़ा तुम उस राजकुमार का जादू हटा क्यों नहीं देतीं? तुमको इसके लिये जो कुछ करना है वह तो बहुत आसान है।

तुम आज की रात उसको खूब पिलाओ। और पी कर जब वह सो जाये तो उसको बाँध दो और किसी चीज़ से उसका मुँह बन्द कर दो।

जब वह सुबह जागेगा तो वह अपने जादुई शब्द बोल ही नहीं सकेगा और उसका जादू टूट जायेगा। तब तुमको अपना पति हमेशा के लिये आदमी के रूप में मिल जायेगा।"

रात को निन्फ़ा जब अपनी गुफा में लौटी तो उसने अपने पति के साथ वही सब कुछ किया जो उसकी बहिनों ने उसको बताया था।

सो अगली सुबह जब राजकुमार सो कर उठा तो ज़रा उसका आश्चर्य तो देखो। उसने देखा कि वह तो बँधा हुआ है और उसका मुँह भी बन्द है। वह अपने वे जादुई शब्द न कह सका और उसका जादू वाकई टूट गया।

राजकुमार निन्फ़ा से बोला — "प्रिये, तुमने अपना वायदा तोड़ा है इसलिये उसका फल तो तुम्हें भुगतना ही पड़ेगा।

जादू तोड़ने के लिये और उसके बाद हमेशा खुशी से रहने के लिये हम दोनों को इसी हालत में एक साल और एक दिन खुशी खुशी रहना चाहिये था पर क्योंकि वह समय अभी पूरा नहीं हुआ था इसलिये अब मुझे यहाँ से जाना पड़ेगा।

इसके अलावा क्योंकि तुमने मेरा कहना नहीं माना इसलिये तुमको मुझे ढूँढना भी पड़ेगा। और तुमको मुझसे पहले "विश्वास के किले"[17] को ढूँढना पड़ेगा।"

[17] Castle of Faith

यह कहने के बाद राजकुमार गायब हो गया और निन्फ़ा वहाँ अकेली रह गयी। वह रो पड़ी। वह बहुत दुखी थी क्योंकि वह राजकुमार को सचमुच ही बहुत प्यार करती थी।

इसलिये वह राजकुमार से फिर से मिलने के लिये तैयार हो गयी और उसने "विश्वास का किला" ढूँढने का इरादा कर लिया। उसने अपनी कुछ चीज़ें बाँधी, उनको अपने कन्धे पर लटकाया और चल दी।

वह चलती रही और चलती रही और आखिर एक जंगल में आ पहुँची जहाँ एक जादूगर[18] रहता था। जादूगर ने उससे पूछा — "बेटी, तुम इस जंगल में क्या करने आयी हो?"

निन्फ़ा बोली — "मैं "विश्वास के किले" की तलाश में यहाँ आयी हूँ। क्या तुम्हें मालूम है कि वह कहाँ है?"

जादूगर बोला — "नहीं, मुझे तो नहीं मालूम कि "विश्वास का किला" कहाँ है पर तुम इस सड़क पर चली जाओ। इस पर चल कर तुम मेरे पिता के घर पहुँच जाओगी। शायद उनको पता हो कि "विश्वास का किला" कहाँ है।

और लो यह गिरी[19] साथ लेती जाओ। अगर तुम किसी मुश्किल में फँस जाओ तो इसे तोड़ लेना।"

[18] Translated for the word "Wizard"
[19] Nut. See its picture above

निन्फ़ा ने उस बूढ़े जादूगर से गिरी ली, उसको धन्यवाद दिया और उसकी बतायी हुई सड़क पर आगे बढ़ गयी। आखिर वह उस जादूगर के पिता के घर आ पहुँची।

उसने उससे पूछा कि क्या वह "विश्वास का किले" का पता जानता था? उसको भी उस किले का पता मालूम नहीं था पर वह बोला — "देखो, तुम इस सड़क पर चली जाओ तो तुम मेरे सबसे बड़े भाई के घर पहुँच जाओगी। वह बहुत जगह घूमा है। वह तुम को बता सकता है कि "विश्वास का किला" कहाँ है।

मैं तुमको एक गिरी और देता हूँ जैसे कि मेरे बेटे ने तुम्हें दी है। अगर तुम अपने आपको किसी मुश्किल में पाओ तो इसे तोड़ लेना। यह तुम्हारी सहायता करेगी।"

निन्फ़ा ने उससे भी गिरी ली, उसको धन्यवाद दिया और वहाँ से भी चल दी और चलते चलते तीसरे जादूगर के घर आ पहुँची। इत्तफाक से उसको भी "विश्वास के किले" का पता नहीं मालूम था पर उसने उसको यह बताया कि उसको क्या करना है।

वह बोला — "शायद चाँद को उसका पता हो सो तुम इस सड़क पर चली जाओ वहाँ तुमको उसका घर मिल जायेगा। पर ख्याल रखना कि चाँद बहुत जल्दी गुस्सा हो जाता है।

मैं भी तुमको एक गिरी देता हूँ अगर तुमको लगे कि तुम किसी मुश्किल में हो तो इस गिरी को तोड़ लेना। यह तुम्हारी सहायता करेगी।"

निन्फ़ा ने उससे भी गिरी ली, उसको धन्यवाद दिया और वहाँ से भी चल दी। इतना चलते चलते वह बहुत थक गयी थी पर फिर भी वह उस रात किसी तरह चाँद के घर आ पहुँची।

उसने चाँद के घर का दरवाजा खटखटाया तो एक बूढ़ी स्त्री ने दरवाजा खोला और बाहर आयी। वह चाँद के घर की देखभाल करने वाली थी।

वह बोली – "हे भगवान, दया करो। बेटी, तुम यहाँ क्यों आयी हो? क्या तुमको यह नहीं मालूम कि अगर चाँद ने तुमको देख लिया तो वह तुमको खा जायेगा।"

निन्फ़ा ने आँखों में आँसू भर कर जो कुछ भी उसके साथ हुआ था सब उसको बता दिया।

वह बूढ़ी स्त्री बोली – "ठीक है तुम इस अँगीठी के पीछे छिप जाओ। जब चाँद आयेगा तो मैं उससे ऐसे ही बातों बातों में पूछूँगी कि वह "विश्वास के किले" का पता जानता है या नहीं।"

सुबह को चाँद वापस आया तो वह बहुत गुस्से में भरा हुआ था क्योंकि उसकी उँगली में कँटीली नाशपाती[20] का एक काँटा घुस गया था।

[20] Prickly pear - There is s very well-known rhyme in Spanish about the moon eating prickly pears. This is perhaps a reference to it. Its English translation is –
"Yonder is the Moon, Eating her prickly pear
Throwing the peelings, towards the lake."

चॉद रसोई में आया तो उसने अन्दर आते ही कहा — "मुझे यहॉ आदमी के मॉस की खुशबू आ रही है। या तो तुम उसको मुझे दे दो नहीं तो मैं तुमको ही खा जाऊॅगा।"

वह बूढ़ी स्त्री चिल्लायी — "हॉ हॉ खा लो। तुम तो पागल हो गये हो। क्योंकि ओवन में मैंने कुछ भुनने के लिये रखा है इसलिये तुमको लग रहा है कि वह आदमी का मॉस है, बैठो और खाना खालो ताकि तुम जल्दी से जा कर सो सको। तुम बहुत थक गये हो।"

चॉद खाना खाने बैठ गया और वह बूढ़ी स्त्री उससे बात करने लगी — "एक दिन यहॉ एक मादा उल्लू आयी थी तो मैं उसके साथ बात करने लगी तो वह कह रही थी कि उसने किसी "विश्वास के किले" के बारे में बातें सुनी हैं।

तुम तो बहुत सारी बातें जानते हो तो यह भी जानते होगे कि "विश्वास का किला" कहॉ है।"

चॉद बोला — "मैं तुमसे सच कहूॅ तो यह तो मुझे भी नहीं मालूम कि "विश्वास का किला" कहॉ है। शायद सूरज को पता होगा।"

इतना कह कर चॉद तो सोने चला गया और वह बूढ़ी स्त्री निन्फ़ा से फुसफुसा कर बोली — "इससे पहले कि चॉद जाग जाये तुम जल्दी से उठो और सूरज के घर चली जाओ।

तुम इस सड़क पर चली जाओ तो तुम सूरज के घर पहुँच जाओगी। शायद वह जानता होगा कि "विश्वास का किला" कहाँ हैं।"

निन्फ़ा उठी और उस बूढ़ी स्त्री की बतायी हुई सड़क पर चल कर सूरज के घर तक आयी। उसने सूरज के घर का दरवाजा खटखटाया तो वहाँ भी एक और बूढी स्त्री ने दरवाजा खोला।

वह बोली — "आओ बेटी, तुम यहाँ क्या कर रही हो, क्या तुमको मालूम नहीं कि अगर सूरज ने तुमको देख लिया तो वह तुम को जला कर राख कर देगा?"

निन्फ़ा रो पड़ी और सुबकते सुबकते उसने अपनी सारी कहानी उस बुढ़िया को सुना दी। वे दोनों जब इस तरह से दुखी हो कर बात कर ही रही थीं कि घर एक तेज़ रोशनी से भर गया और सूरज अन्दर आया।

बेचारी निन्फ़ा। वह तो बस मरने के लिये तैयार हो गयी पर वह छोटी बूढ़ी स्त्री चिल्लायी — "ठहरो सूरज ज़रा ठहरो। यह बेचारी "विश्वास के किले" को ढूँढ रही है। क्या तुमको मालूम है कि "विश्वास का किला" कहाँ है?"

सूरज बोला — "ओह, तो यह "विश्वास के किले" को ढूँढ रही है।" तब रोते रोते निन्फ़ा ने सूरज को अपनी कहानी सुना दी।

सूरज बोला — "मुझे मालूम है कि "विश्वास का किला" कहाँ है पर वह यहाँ से बहुत दूर है।

मैं तुमको अभी ले चलता पर अब बहुत देर हो गयी है। और तुम्हें तो मालूम है कि मुझे अँधेरा होने के बाद घर से निकलने की इजाज़त नहीं है।

पर देखो यहीं मेरे पास ही मेरा एक दोस्त रहता है – अल एयर[21] जो हवा है। वह तुमको ले जा सकता है। तुम इस रास्ते चली जाओ तो तुम अल एयर के घर पहुँच जाओगी। वहाँ जा कर उसको बोलना कि मैंने तुमको भेजा है।"

निन्फ़ा वहाँ से फिर चल दी और काफी दूर चलने के बाद हवा के घर आयी। उसने हवा का दरवाजा खटखटाया तो हवा चिल्लाया — "जो कोई भी है अन्दर आ जाओ।"

निन्फ़ा अन्दर घुसी और हवा को बताया कि उसको सूरज ने एक प्रार्थना के साथ भेजा है। हवा बोला — "वह प्रार्थना मैंने पूरी की चाहे वह जो कुछ भी हो।"

तब निन्फ़ा ने उसको बताया कि उसके साथ क्या क्या घटा है और वह "विश्वास के किले" अपने पति को ढूँढने जाना चाहती है। अल ऐयर बोला — "तुम चिन्ता न करो मैं तुमको वहाँ खुद ले कर जाऊँगा।"

निन्फ़ा अल ऐयर की पीठ पर बैठ गयी और पलक झपकने से भी कम समय में ही "विश्वास के किले" आ पहुँची।

---

[21] El Aire – the Wind god

अल ऐयर बोला — "यही है "विश्वास का किला"। ऐसा लगता है कि यहाँ तो कोई दावत हो रही है।"

सारे किले में बहुत सारी रोशनी हो रही थी और वायलिन और गिटार की आवाजें चारों तरफ गूँज रही थीं।

हवा बोला — "मुझे अब यहाँ से जाना होगा। भगवान की दुआ से सब कुछ ठीक हो जायेगा।" कह कर वह वहाँ से तेज़ी से भागा चला गया।

निन्फ़ा ने किले का दरवाजा खटखटाया तो एक नौकर ने दरवाजा खोला और निन्फ़ा से पूछा — "मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ?"

निन्फ़ा बोली — "मैं राजकुमार से मिलना चाहती हूँ।"

नौकर बोला — "आप उनसे इस समय नहीं मिल सकतीं क्योंकि उनकी अभी अभी शादी हुई है और वह अपनी नयी रानी के साथ नाच रहे हैं।

निन्फ़ा ने नौकर से प्रार्थना की — "अगर ऐसा है तो मेहरबानी कर के मुझे अन्दर आने दो और यह रौनक देखने दो। मैंने ऐसी रौनक पहले कभी नही देखी।"

नौकर बोला — "ठीक है। मैं तुमको अन्दर जाने तो दे सकता हूँ पर एक शर्त पर। तुम वहाँ पर सावधान रहोगी कि नयी रानी तुम को न देख पाये।

क्योंकि तुमको यहाँ बुलाया नहीं गया है सो अगर नयी रानी ने तुमको यहाँ देख लिया तो वह बहुत नाराज होगी।"

इस तरह निन्फ़ा किले में घुसी। उसने अपने पति राजकुमार को अपने मेहमानों से घिरे हुए खाना खाते देखा।

वह एक दीवार से सीधी चिपक कर खड़ी हो गयी और वहाँ से राजकुमार का ध्यान अपनी तरफ खींचने की कोशिश करने लगी। पर वह तो अपना खाना ही खाता रहा और उसने तो उसकी तरफ देखा भी नहीं।

निन्फ़ा ने राजकुमार का ध्यान अपनी तरफ खींचने की इतनी ज़्यादा कोशिश की कि उसकी रानी ने उसको देख लिया। वह रानी एक चुड़ैल थी जिसने अपने जादू से राजकुमार को अपने प्यार में अन्धा कर के उसके साथ शादी कर ली थी।

तब राजकुमार ने निन्फ़ा को देखा और उसको तुरन्त ही पहचान लिया। उसने अपने नौकरों को चिल्ला कर निन्फ़ा को अपने पास लाने के लिये कहा पर शोर में किसी ने उसकी बात ही नहीं सुनी।

उधर वह चुड़ैल जादूगरनी भी अपने नौकरों पर चिल्लायी — "उस भिखारिन को यहाँ से बाहर निकाल दो।"

उसके नौकर निन्फ़ा को बाहर निकालने ही वाले थे कि निन्फ़ा ने एक गिरी निकाल कर उसको तोड़ दिया।

एक पल में ही निन्फ़ा एक छोटा सा चूहा बन गयी और इधर उधर भागने लगी। जब उस जादूगरनी रानी ने निन्फ़ा को चूहा बनते

देखा तो वह खुद एक बिल्ला बन गयी और उस चूहे के पीछे दौड़ी। चूहा तुरन्त ही खाने वाली मेज पर चढ़ गया और राजकुमार की प्लेट में जा कर बैठ गया।

वहाँ जा कर निन्फ़ा ने दूसरी गिरी तोड़ी तो वह चावल का एक दाना बन गयी और राजकुमार के खाने में खो गयी। वह बिल्ला भी तुरन्त ही एक मुर्गा बन कर उस प्लेट में कूदा और उसने राजकुमार की खाने की प्लेट से चावल खाने शुरू कर दिये।

अब निन्फ़ा ने तीसरी गिरी तोड़ी तो वह एक कायोटी[22] बन गयी और उस मुर्गे को एक ही कौर में तुरन्त ही खा गयी।

उसके बाद निन्फ़ा अपने पुराने रूप में आ गयी और राजकुमार से मिल गयी। राजकुमार उसको देख कर बहुत खुश हुआ। उसके बाद दोनों फिर खुशी से रहने लगे।

[22] Coyote (pronounced as "Kaa-yo-tee) is a small wolf – very common in American Native Indians

5 नौर्वे का कत्थई भालू[23]

सूअर राजा जैसी कहानियों के इस संग्रह में हमने यह कहानी यूरोप महाद्वीप के आयरलैंड देश की कहानियों से ली है। तो लो पढ़ो यह कहानी अब हिन्दी में।

एक बार की बात है कि आयरलैंड में एक राजा राज करता था। उसके तीन बहुत सुन्दर और बहुत अच्छी बेटियाँ थीं। एक दिन वे सब अपने महल के लान में टहल रहे थे तो राजा को उनसे कुछ हँसी करने की सूझी। उसने उनसे पूछा कि वे किससे शादी करना चाहती थीं।

एक बोली मैं उल्स्टर के राजा से शादी करना चाहती हूँ। दूसरी बोली "मैं मुन्स्टर[24] के राजा से शादी करना चाहती हूँ।" पर तीसरी बोली "मैं शादी नहीं करूँगी बल्कि मुझे तो नौर्वे का कत्थई भालू चाहिये।"

---

[23] Brown Bear of Norway – a fairy tale from Ireland, Great Britain, Europe.
Taken from the Web Site :
https://books.google.ca/books?id=jfdLAAAAcAAJ&pg=PA57&redir_esc=y#v=onepage&q&f=false
Norway is one of the five Norse, or Nordic, or Scandinavian countries which are situated in the Northernmost part of Europe – Denmark, Finland, Iceland, Norway, and Sweden. Originally this tale was collected by Patrick Kennedy and appeared in his "Legendary Fictions of the Irish Celts" (1866). It was later included by Andrew Lang ed in his "*The Lilac Fairy Book*". New York: Dover, 1968. (Original published 1910.)

[24] Ulster and Munster

ऐसा उसने इसलिये कहा था क्योंकि उसकी आया अक्सर एक जादू पड़े राजकुमार के बारे में बात किया करती थी जिसको वह इस नाम से बुलाती थी और उसके बारे में सुनते सुनते उसको उससे प्यार हो गया था।

सो जब राजा ने पूछा कि वह किससे शादी करेगी तो उसकी जबान पर पहला नाम उसी का आया क्योंकि पिछली रात वह उसी का सपना देख रही थी।

पहली राजकुमारी हँसी दूसरी राजकुमारी हँसी और फिर वे दोनों अपनी सबसे छोटी बहिन के साथ सारी शाम हँसती ही रहीं।

पर उसी रात वह राजकुमारी एक बड़े से कमरे में सोते से जाग गयी जिसमें हजारों लैंप जल उठे थे। उस कमरे के फर्श पर बहुत कीमती कालीन पड़े हुए थे और उसकी दीवारों पर सोने और चाँदी से बुने हुए कपड़े लटक रहे थे। उस कमरे में बहुत सारे लोग बैठे हुए थे।

उन्हीं में उसने एक बहुत सुन्दर राजकुमार को बैठे देखा। एक पल भी नहीं बीता होगा कि उसने देखा कि वह उसके सामने झुका हुआ उससे अपने प्रेम का इज़हार कर रहा था कि वह उसको कितना चाहता था और क्या वह उसकी रानी बनेगी।

उसको देख कर उसका दिल नहीं किया कि वह उसको मना करे सो उसी शाम उन दोनों की शादी हो गयी।

शादी के बाद जब सब लोग चले गये और वे दोनों अकेले रह गये तो राजकुमार ने राजकुमारी से कहा — "प्रिये तुमको पता होना चाहिये कि मेरे ऊपर जादू पड़ा हुआ है।

एक जादूगरनी[25] जिसके अपनी एक बहुत ही सुन्दर बेटी थी उसकी यह इच्छा थी कि वह अपनी बेटी की शादी मुझसे कर दे। पर मैंने जब उससे मना कर दिया तो उसकी माँ ने अपनी ताकत से मुझे दिन में भालू बना दिया।

मुझको उसी हालत में रहना था जब तक कि कोई लड़की अपनी मरजी से मुझसे शादी न कर ले और पाँच साल तक मेरे साथ रहने के दुख न सह ले।"

जब राजकुमारी सुबह सो कर उठी तो उसको अपने बराबर में अपना पति दिखायी नहीं दिया। उसका सारा दिन बड़ा खराब बीता। वह बहुत दुखी रही।

पर जैसे ही शाम को उस शानदार कमरे के लैम्प जले जहाँ वह सिल्क के सोफा पर बैठी हुई थी तो कमरे के दरवाजे खुल गये और लो अगले ही मिनट वह राजकुमार तो उसके पास बैठा हुआ था। इस तरह उसने एक और शाम उसके साथ हँसी खुशी बितायी।

पर उसने राजकुमारी को सावधान किया कि जब भी वह उससे थक जायेगी या फिर उसका उससे विश्वास उठ जायेगा तो वे हमेशा

[25] Translated for the word "Sorceress"

के लिये अलग हो जायेंगे और उसको उस जादूगरनी की बेटी से शादी करनी पड़ेगी।

बाद में राजकुमारी को उसके दिन में न होने की आदत पड़ गयी। इस तरह से दिन में अलग होते और रात को मिलते उन्होंने बारह महीने बिता दिये।

इसके बाद उनके एक बहुत ही सुन्दर राजकुमार पैदा हुआ। पहले तो वह राजकुमार से शादी कर के खुश थी ही पर अब तो वह दोगुनी खुश थी क्योंकि पहले तो उसके पास दिन के साथ के लिये कोई नहीं था पर अब तो उसका बेटा उसके पास था।

दिन खुशी खुशी बीत रहे थे कि एक दिन जब वह अपने पति और बच्चे के साथ खिड़की खोल कर बैठी हुई थी क्योंकि रात बहुत सीली सीली थी कि एक मादा गरुड़ आयी और बच्चे को अपने चोंच में दबा कर ऊपर आसमान में ले गयी।

यह देख कर वह बहुत ज़ोर से चिल्लायी और बच्चे के पीछे खिड़की से बाहर कूदना चाहती थी कि राजकुमार ने उसको पकड़ लिया और उसकी तरफ बड़े गम्भीर नजर से देखा।

उसके दिमाग में वह सब घूम गया जो राजकुमार ने उससे शादी के ठीक बाद कहा था सो उसने अपने आपको रोने और शिकायत करने से रोक लिया जो उसकी जबान पर उस गरुड़ को अपने बच्चे को आसमान में ले जाते देख कर आ गयी थीं।

अब उसके दिन फिर से बड़े अकेले गुजरने लगे। इस तरह से बारह महीने फिर बीत गये कि अबकी बार उसने एक बेटी को जन्म दिया। इस बार उसने सोचा कि वह उसका खास ख्याल रखेगी उस पर कड़ी निगाह रखेगी। इसलिये वह कोई भी खिड़की कुछ इंचों से ज़्यादा खोल कर नहीं रखती थी।

पर उसकी सारी सावधानियाँ बेकार गयीं।

एक शाम जब वे सब खुशी खुशी बैठे थे और राजकुमार खुशी खुशी अपनी बेटी को अपनी बाँहों में झुला रहा था कि एक सुन्दर सा ग्रेहाउन्ड कुत्ता उनके सामने आ खड़ा हुआ और इससे पहले कि वे यह जानें कि वह क्या करने वाला है उसने राजकुमार के हाथ से उसकी बेटी को छीना और दरवाजे में से निकल कर बाहर भाग गया।

इस बार वह अपने आपको चिल्लाने से नहीं रोक सकी। वह चिल्लायी और कुत्ते के पीछे कमरे के बाहर भागी पर उसके बराबर वाले कमरे में उनके कुछ नौकर थे तो उनसे पूछने पर पता चला कि वहाँ से तो कोई कुत्ता या कोई बच्चा नहीं गया था।

उसे लगा कि यह सब उसके पति की ही गलती थी फिर भी उसने अपने आपको काबू में रखा और उसको कोई दोष नहीं दिया।

समय फिर गुजरा और उसने तीसरे बच्चे को जन्म दिया। इस बार वह किसी भी खिड़की या दरवाजे को ज़रा सा भी खोलने की

इजाज़त नहीं देती थी। पर वह हर समय तो बच्चे को भी अपने पास नहीं रख सकती थी।

एक शाम वे तीनों आग के पास बैठे हुए थे कि एक स्त्री उनके सामने प्रगट हुई। राजकुमारी की ऑखों में डर दिखायी देने लगा। उसने उस स्त्री की तरफ देखा।

जब वह उस स्त्री की तरफ देख रही थी तो उस स्त्री ने एक शाल में बच्चे को लपेटा जो अपने पिता की गोद में बैठा हुआ था और या तो वह जमीन में समा गयी और या फिर चिमनी से हो कर चली गयी। इस बार मॉ ने एक महीने तक बिस्तर पकड़ लिया।

जब उसकी तबियत कुछ ठीक होने लगी तब एक दिन उसने अपने पति से कहा — "प्रिय मुझे लगता है कि अगर मैं अपने माता पिता और बहिनों से मिल लूँ तो शायद मुझे कुछ अच्छा लगे। अगर तुम मुझे कुछ दिन के लिये वहाँ जाने की इजाज़त दे दो तो मुझे बहुत खुशी होगी।"

राजकुमार बोला — "ठीक है मैं तुमको जाने दे सकता हूँ और जब भी तुम वहाँ से लौटना चाहो लौट सकती हो। इसके लिये बस तुमको यह करना है कि जब तुम रात को लेटो तो ऐसी इच्छा करना तो तुम अगले दिन अपने घर में ही उठोगी।

इसके अलावा जब तुम्हें वहाँ से यहाँ आना हो तब भी तुम ऐसा ही करना तो तुम यहाँ उठोगी।"

उसने उसी रात ऐसी इच्छा की और अगले दिन वह अपने माता पिता के महल में अपने पुराने कमरे में उठी। उसने घंटी बजायी तो उसके माता पिता और उसकी शादीशुदा बहिनें सभी वहॉ पर मौजूद थे।

वे सब आपस में खूब बात करते रहे और हॅसते रहे जब तक कि वे सब पहले की तरह से बरताव नहीं करने लगे। उसने उनको सब बताया कि वह वहॉ कैसे रह रही थी। पर वे लोग नहीं जानते थे कि वे ऐसे हालात में उसको क्या सलाह दें।

वह अभी भी अपने पति को बहुत प्यार करती थी और उसको यह भी यकीन था कि इन बच्चों के इस तरह से जाने में उसके पति का कोई हाथ नहीं था। पर फिर भी उसको डर था कि अगर उसका कोई और बच्चा भी होगा तो वह भी उससे ्सी तरह छीन लिया जायेगा।

उसकी मॉ और बहिनों ने एक अक्लमन्द स्त्री से सलाह की जो उनके महल में अंडे भेजा करती थी। उनको उसकी अक्लमन्दी में बहुत विश्वास था।

उसने उनको बताया कि उसका एक ही इलाज था और वह था राजकुमार की भालू की खाल पाना जिसको कि राजकुमार रोज सुबह को पहनता था और उसको जला देना।

इस तरह खाल जला देने से उसका जादू टूट जायेगा और उसके बाद उसका रात को आदमी बनना और दिन में भालू बनना हमेशा के लिये छूट जायेगा।

यह सुन कर उन सबने उसको यही करने के लिये मना लिया और उसने भी उनसे वायदा किया कि वह ऐसा ही करेगी।

आठ दिन अपने माता पिता के पास रहने के बाद अब उसको अपने पति से मिलने की इच्छा होने लगी सो उसी रात उसने ऐसी इच्छा प्रगट की और जब वह तीन घंटे बाद उठी तो वह अपने पति के घर में थी। वह खुद भी उसका इन्तजार कर रहा था।

वे फिर बहुत दिनों तक खुश खुश रहे। अब उसने सोचना शुरू किया कि अब उसको अपने पति का सुबह को उसको छोड़ना क्यों बुरा नहीं लगता था।

और उसको यह पता क्यों नहीं चला कि अब वह उसको सोने से पहले सोने के प्याले में जो शराब देता था वह अब उसे देना क्यों नहीं भूलता था।

एक दिन उसने सोच लिया कि वह आज कुछ भी नहीं पियेगी और देखेगी कि क्या होता है। सो जब उसके पति ने उसको पीने के लिये कुछ दिया तो हालाँकि उसने उसे पीने का बहाना किया पर उसे उसने पिया नहीं।

उसने देखा कि ऐसा करने से वह सुबह को भी काफी जागी हुई थी। हालाँकि सुबह को उसने अपनी आँखें बन्द कर रखी थीं फिर

भी उसने देखा कि उसका पति एक दीवार में से हो कर बाहर निकल गया।

उसके पति ने उसको पिछली रात जो सोने वाली दवा दी थी उसमें से उसने कुछ बूँदें बचा कर रख ली थीं सो अगली रात को उसने वे अपने पति के प्याले में डाल दीं। इससे उसका पति रात भर गहरी नींद सोता रहा।

वह खुद आधी रात को उठी और उसी दीवार में से हो कर उसके दूसरी तरफ निकल गयी। वहाँ उसको एक कोने में कत्थई भालू की एक बहुत सुन्दर खाल टँगी हुई मिल गयी।

उसने वह खाल वहाँ से चुरा ली और उसको ले कर नीचे आग के पास गयी और आग में डाल दी। धीरे धीरे वह खाल जल कर राख हो गयी। उसके जल जाने के बाद वह वापस आ कर सो गयी।

अगर वह सौ साल भी ज़िन्दा रहती तो वह कभी नहीं भूलती कि वह अगली सुबह कैसे उठी। कि कैसे उसका पति उसकी तरफ दुख और परेशानी से देख रहा था।

वह बोला — "ओ नाखुश स्त्री। तुमने तो हम दोनों को हमेशा के लिये अलग कर दिया। तुम पाँच साल तक धीरज क्यों नहीं रख सकीं। अब चाहे मुझे अच्छा लगे या न लगे पर अब मुझे उस जादूगरनी के महल की तीन दिन की यात्रा पर जाना पड़ेगा और उसकी बेटी से शादी करनी पड़ेगी।

वह खाल जो मेरी रक्षा करती वह तुमने जला कर राख कर दी। वह अंडे वाली स्त्री जिसने तुम्हें यह सलाह दी थी कि मेरी खाल जला दो वह तो खुद ही एक जादूगरनी थी।

मैं तुम्हें खुद कोई सजा नहीं दूँगा। उसके बिना भी तुम्हारी सजा काफी कठिन होगी। अच्छा हमेशा के लिये विदा।"

उसने उसको आखिरी बार चूमा और जितनी जल्दी वहाँ से जा सकता था चला गया।

राजकुमारी उसके पीछे से चिल्लायी पर फिर उसने देखा कि उसका चिल्लाना तो बेकार था क्योंकि वह तो वहाँ से जा चुका था सो उसने कपड़े पहने और उसके पीछे पीछे चल दी।

राजकुमार बीच में कहीं रुका भी नहीं और कहीं ठहरा भी नहीं। न ही उसने पीछे मुड़ कर देखा। पर फिर भी वह राजकुमारी की आँखों से ओझल नहीं हुआ। जब वह पहाड़ी पर चढ़ रहा था तब वह खाई में थी। और जब वह खाई में था तब वह पहाड़ी पर थी।

चलते चढ़ते उतरते वह अब बेजान सी हो चली थी कि सूरज डूबते समय उसने देखा कि राजकुमार एक गली में मुड़ गया और एक छोटे से घर में घुस गया। वह भी उसके पीछे पीछे उस घर के अन्दर चली गयी।

वहाँ जा कर उसने क्या देखा कि उसके पति के घुटनों पर एक सुन्दर सा लड़का बैठा हुआ है। वह उसको अपने गले से लगा रहा था और उसको चूम रहा था।

“ओ मेरी प्यारी यह है तुम्हारा सबसे बड़ा बच्चा।” फिर उसने एक स्त्री की तरफ इशारा कते हुए कहा जो उसकी तरफ मुस्कुराते हुए देख रही थी “यह वह मादा गरुड़ है जो इसको ले कर उड़ गयी थी।

पल भर के लिये वह अपने सारे दुख भूल गयी। उसने अपने बच्चे को गले लगाया। खुशी के मारे उसकी आँखों में आँसू आ गये।

उस स्त्री ने उनके पैर धोये और एक मरहम सा लगाया जिससे उनके पैरों का दर्द दूर हो गया और उसने उनके पैरों को डेज़ी के फूलों की तरह ताज़ा कर दिया।

अगली सुबह सूरज निकलने से पहले ही राजकुमार उठ गया और आगे जाने के लिये तैयार था। उसने राजकुमारी से कहा “लो यह कैंची लो शायद यह तुम्हारे काम आये। इस कैंची से जो चीज़ भी तुम काटोगी वह सिल्क में बदल जायेगी।

जैसे ही सूरज निकल आयेगा मैं तुम्हारी और बच्चों की सारी यादें भूल जाऊँगा पर सूरज छिपने के बाद में मुझे वे सब याद आ जायेंगी। अच्छा विदा।”

कह कर वह फिर चला गया। अपने बच्चे को वहीं छोड़ कर राजकुमारी भी उसके पीछे पीछे चल दी। वह अभी बहुत दूर नहीं गयी थी कि उसको वह फिर से दिखायी दे गया।

उनके साथ आज भी वही हुआ जो उनके साथ पिछले दिन हुआ था। सुबह को उनकी परछाइयाँ उनके आगे आगे जा रही थीं और शाम को उनके पीछे पीछे जा रही थीं।

राजकुमार भी बीच में कहीं नहीं रुका तो राजकुमारी भी बीच में कहीं नहीं रुकी। जब सूरज डूबने को था तो राजकुमार फिर से एक गली में मुड़ा और फिर से एक घर में घुस गया।

राजकुमारी भी उसके पीछे पीछे उस घर में घुस गयी। वहाँ उनको उनकी बेटी मिल गयी तो वहाँ एक बार फिर सुबह तक खूब आनन्द रहा।

अगले दिन फिर तीसरे दिन की यात्रा शुरू हुई। लेकिन यात्रा शुरू करने से पहले राजकुमार ने राजकुमारी को एक कंघा दिया और कहा कि जब भी वह उसको अपने बालों में फिरायेगी तो उसके सिर में से हीरे और मोती गिरेंगे।

पिछले दिन के सूरज डूबने से ले कर आज तक के सूरज निकलने तक उसको सब कुछ याद था पर अब सूरज निकलने से ले कर सूरज डूबने तक वह बस जादू के ज़ोर से ही यात्रा करता रहा और उसने पीछे मुड़ कर भी नहीं देखा।

इस रात वे अपने सबसे छोटे बच्चे के पास आये और अगली सुबह राजकुमार राजकुमारी से आखिरी बार बोला — "ओह मेरी बेचारी पत्नी। लो तुम यह सुनहरे धागे की रील लो। इसमें यह धागा कभी खत्म नहीं होगा। और यह लो हमारी शादी की आधी अँगूठी।

अगर तुम किसी तरह से मेरे घर पहुँच जाओ और अपनी यह आधी अँगूठी मेरी आधी अँगूठी से जोड़ दो तो तुम मुझे याद आ जाओगी।

उधर उस पार एक जंगल है। जैसे ही मैं उस जंगल में घुसूँगा तो हमारे बीच जो कुछ भी हुआ है मैं वह सब कुछ भूल जाऊँगा जैसे मैं कल ही पैदा हुआ होऊँ। अच्छा बाई बाई मेरी प्यारी पत्नी और बच्चे।"

उसी समय सूरज निकल आया और वह जंगल की तरफ चलता चला गया।

राजकुमारी ने उस जंगल को उसके घुसने से पहले खुलते और उसके जाने के बाद बन्द होते देखा तो वह तो वहाँ घुस ही नहीं सकी क्योंकि वहाँ पहुँचने पर उसको एक पत्थर की दीवार के सिवा और कुछ नहीं मिला।

वह बेचारी हाथ मलती रही और आँसू बहाती रही। फिर वह कुछ सँभली और बोली — "ओ जंगल मैं तुम्हें अपनी तीनों भेंटों की

कसम देती हूँ – कैंची कंघी और रील, कि तुम मुझे अन्दर जाने दो।”

और लो वह जंगल तो खुल गया। राजकुमारी उसमें एक रास्ते पर से हो कर अन्दर चली गयी। वह रास्ता एक महल तक जाता था सो वह उस रास्ते पर हो कर महल तक आ पहुँची। वहाँ उस जंगल के किनारे पर महल के साथ साथ एक लान था और एक लकड़हारे का मकान था।

वह लकड़हारे के मकान में चली गयी और लकड़हारे और उसकी पत्नी से उसको वहाँ कुछ काम देने के लिये कहा।

पहले तो उन्होंने मना कर दिया कि वह उसको कोई काम नहीं दे सकते पर राजकुमारी ने कहा कि उसको उस काम की कोई मजदूरी नहीं चाहिये बल्कि जब भी उनको चाहिये तब वह खुद उनको हीरे मोती सिल्क के कपड़े सोने का धागा आदि देगी।

यह सुन कर उन्होंने उसको अपने घर में जगह दे दी।

इधर बहुत जल्दी ही राजकुमारी ने सुना कि वहाँ एक नया नया राजकुमार आया है और महल में राजकुमारी के साथ रह रहा है। वह बाहर बहुत कम निकलता था और घर में भी बहुत कम बोलता था और दुखी रहता था। ऐसा लगता था जैसे वह किसी चीज़ की तलाश में हो।

उधर महल में रहने वाले नौकरों और दूसरे लोगों ने सुना कि बाहर लकड़हारे के मकान में एक बहुत सुन्दर लड़की आयी है तो उन्होंने उसको अपने खराब बरताव से चिढ़ाना शुरू कर दिया।

वहाँ का हैड नौकर उसको कुछ ज़रा ज़्यादा ही तंग करता था सो एक दिन उसने उस हैड नौकर को अपने साथ चाय पीने के लिये बुलाया। ओह वह तो इस बात से कितना खुश हो गया और महल में जा कर उसने दूसरे नौकरों के बीच अपनी कितनी शान बघारी।

शाम हुई तो हैड नौकर उस राजकुमारी के घर गया तो वहाँ उसको राजकुमारी के कमरे में ले जाया गया। लकड़हारा और उसकी पत्नी राजकुमारी से बहुत खुश थे सो उन्होंने उसको रहने के लिये दो कमरे दे रखे थे।

वह वहाँ सीधा बैठ गया और महल में किये गये अपने कारनामों की बड़ाई करने लगा। राजकुमारी उसके लिये चाय और टोस्ट बनाने लगी।

इतने में राजकुमारी ने उससे कहा — "क्या तुम खिड़की में से हाथ बढ़ा कर मेरे लिये पास में लगे पेड़ की एक दो डंडियाँ तोड़ दोगे।"

वह तुरन्त ही उठा और पेड़ की डंडियाँ तोड़ने के लिये अपना सिर और हाथ बाहर निकाला कि तभी राजकुमारी फुसफुसायी "मेरी भेंटों की कसम तुम्हारे सिर पर दो सींग उग आयें।"

जैसे ही उसने यह कहा उस नौकर के कानों के दोनों तरफ एक एक सींग उग आया और दोनों सींग उसके सिर के पीछे जा कर मिल गये। बेचारा नौकर।

वह कितना चिल्लाया कितना गरजा। उसकी चिल्लाहट और गरजने की आवाज सुन कर महल के सारे नौकर बाहर आ गये। हॅसते हुए मुस्कुराते हुए गुस्सा होते हुए वे सब लोग बरतन हाथ में ले कर उन्हें बजाते चले आ रहे थे।

उधर वह हैड नौकर राजकुमारी को बुरा भला कह रहा था। गुस्से के मारे उसकी ऑखें बाहर निकली पड़ रही थीं। उसका चेहरा काला पड़ गया था और वह पागलों की तरह अपने पैर पीछे की तरफ फेंक रहा था।

आखीर में राजकुमारी को उसके ऊपर दया आ गयी और उसने उसके ऊपर से अपना जादू हटा लिया। जादू के हटते ही उसके सींग नीचे गिर पड़े।

वह राजकुमारी को तुरन्त ही मार देता पर उसको अपने आप में इतनी कमजोरी लग रही थी कि वह अपने आप उठ कर महल तक भी नहीं जा सका। उसके साथी नौकर उसको उठा कर महल ले गये।

किसी तरह यह कहानी राजकुमार के कानों में पड़ी तो वह भी उस राजकुमारी को देखने लिये उस तरफ घूमता घूमता चला आया।

उस समय राजकुमारी एक देहातिन की पोशाक पहने थी और खिड़की पर बैठी कुछ सिल रही थी पर इससे उसकी सुन्दरता में कोई फर्क नहीं पड़ रहा था। राजकुमार ने उसको अच्छी तरह से देखा तो कुछ परेशान सा हो गया।

जादूगरनी की बेटी ने भी उसके बारे में सुना तो वह भी उस आश्चर्यजनक लड़की को देखने के लिये उधर आयी। उसने देखा कि राजकुमारी तो बॉसी कागज पर गाउन का नमूना काट रही थी।

पर जैसे जैसे वह कागज काटती जाती थी वह कागज सिल्क के टुकड़ों बदलता जाता था। और वह सिल्क तो इतनी बढ़िया थी कि उतनी बढ़िया सिल्क उसने पहले कभी देखी नहीं थी।

जादूगरनी की बेटी ने उसको लालची ऑखों से देखा और उससे पूछा — "तुम इस कैंची की क्या कीमत लोगी?"

राजकुमारी बोली — "मुझे इस कैंची की कोई कीमत नहीं चाहिये यह मैं आपको ऐसे ही दे दूँगी अगर आप मुझे राजकुमार के बराबर वाले कमरे में एक रात सोने दें तो।"

यह सुन कर तो उस घमंडी लड़की को बहुत गुस्सा आ गया और वह उसको कुछ ऐसा वैसा कहने ही वाली थी पर वह कैंची तो चलती ही जा रही थी और उसमें से और चढ़िया सिल्क निकलती आ रही थी जिसको देख कर उसकी तो ऑखें फटी की फटी रही जा रहीं थीं। सो उसने कैंची के लालच में राजकुमारी ने जो मॉगा उसको हॉ कर दिया।

जब रात हुई तो राजकुमारी को महल ले जाया गया और उसको राजकुमार के बराबर वाले कमरे में लिटा दिया गया। राजकुमार तब तक इतनी गहरी नींद सो चुका था कि उसको जगाया नहीं जा सकता था।

रोते हुए और सिसकियाँ भरते हुए राजकुमारी ने गाया —

मैं चार साल तक तुम्हारे साथ शादी कर के रही
मैंने तुम्हें तीन प्यारे प्यारे बच्चे दिये
ओ नौर्वे के कत्थई भालू मेरी तरफ देखो तो

पर वह तो गहरी नींद सो रहा था। उठा ही नहीं। सुबह की पहली रोशनी के साथ जादूगरनी की वह घमंडी बेटी वहाँ आ गयी और उसको वहाँ से बाहर निकाल दिया।

जब वह महल के बाहर जा रही थी तो वह हैड नौकर जिसके सिर पर राजकुमारी ने सींग उगाये थे उसको अपनी जीभ निकाल कर चिढ़ा रहा था।

सो अभी तक तो किस्मत ने उसका साथ नहीं दिया था पर अगले दिन राजकुमार फिर से उसके घर की तरफ आया। उसने उसको देखा और मुस्कुराकर नमस्ते की जैसे कि कोई राजकुमार किसी किसान की बेटी को करता और चला गया।

कुछ देर बाद ही जादूगरनी की बेटी वहाँ आयी तो उसने देखा कि राजकुमारी अपने बालों में कंघी कर रही थी और उसमें हीरे मोती गिर रहे थे। उसको देख कर उसके मन में लालच आ गया।

सो फिर एक सौदा हुआ और राजकुमारी फिर से राजकुमार के बराबर वाले कमरे में सोयी और एक और दुखी रात वहाँ गुजारी क्योंकि वह राजकुमार को जगा ही नहीं सकी।

सुबह को उसे फिर वह कमरा राजकुमार से बिना मिले ही छोड़ना पड़ा। सो उसकी यह दूसरी रात भी बेकार गयी।

तीसरे दिन राजकुमार फिर से राजकुमारी की तरफ आया और इस बार उस अनजान स्त्री से बात करने के लिये वहाँ रुका। उसने उससे पूछा कि क्या वह उसके लिये कुछ कर सकता था। वह बोली "हाँ तुम कुछ कर सकते हो।"

उसने राजकुमार से पूछा कि क्या पहले कभी वह रात को उठता था। तो उसने उसे बताया कि पहले तो वह उठता था पर पिछली दो रातों में वह सपने में कुछ मीठा सा संगीत सुन रहा था सो वह जाग नहीं सका।

वह आवाज भी उसकी जानी पहचानी थी जिसको वह बहुत पहले जानता था और ऐसा लगता था कि वह आवाज किसी दूसरी दुनियाँ से आ रही थी।

राजकुमारी ने पूछा "क्या सोने से पहले उसने कुछ पिया था।"

वह बोला — "हाँ मेरी पत्नी दो रात से मुझे पीने के लिये कुछ दे रही है। अब उसमें सोने की दवा है या नहीं यह मुझे नहीं पता।"

राजकुमारी बोली — "ओ राजकुमार जैसा कि तुमने मुझसे अभी कहा कि मैं तुम्हारे लिये कुछ कर सकता हूँ क्या।" तो तुम मेरे लिये यह करो कि आज की रात तुम कोई भी पेय पदार्थ न पियो।"

राजकुमार बोला — "ठीक है मैं नहीं पियूँगा।" और घूमने के लिये आगे चला गया।

उसके जाने के बाद जादूगरनी की बेटी भी उधर किसी लालच में आ निकली। इस बार उसने देखा कि वह लड़की अपने हाथ में एक रील लिये बैठी है और उसमें से सोने का धागा खोल रही है।

रील को देख कर उसने राजकुमारी से तीसरा सौदा किया। राजकुमारी ने फिर से उससे राजकुमार के बराबर वाले कमरे में सोने की इजाज़त माँगी और वह सोने के धागे वाली रील उसके बदले में उसको दे दी।

उस रात राजकुमार शाम से ही अपने बिस्तर में जा कर लेट गया। उसका दिमाग उस दिन कुछ अशान्त था। तभी दरवाजा खुला और राजकुमारी अन्दर आयी। आ कर वह उसके पास बैठ गयी और गाने लगी —

मैं चार साल तक तुम्हारे साथ शादी कर के रही
मैंने तुम्हें तीन प्यारे प्यारे बच्चे दिये
ओ नौर्वे के कत्थई भालू मेरी तरफ देखो तो

राजकुमार बोला — "नौर्वे के कत्थई भालू" – तुम्हारी यह बात मेरी समझ में नहीं आयी। कौन है यह।"

राजकुमारी बोली — "राजकुमार क्या तुम्हें याद नहीं है कि मैं चार साल तक तुम्हारी पत्नी थी।"

"नहीं मुझे तो बिल्कुल भी याद नहीं है। पर मुझे यकीन है कि तुम जरूर रही होगी और मेरी इच्छा है कि ऐसा जरूर हुआ होगा।"

"क्या तुम्हें याद नहीं है कि फिर हमारे तीन बच्चे हुए जो अभी भी ज़िन्दा हैं।"

"अच्छा? तो तुम मुझे उनके दिखाओ। मेरा दिमाग तो परेशान है।"

"तुम अपनी शादी की आधी ॲगूठी की तरफ देखो जो तुम्हारे गले में लटकी हुई है और उसको इस आधी ॲगूठी के साथ मिला कर देखो।"

जैसे ही राजकुमार ने ऐसा किया उस पर पड़ा जादू टूट गया। उसकी सारी यादें वापस आ गयीं। उसने अपनी पत्नी के गले में अपनी बॉहें डाल दीं और दोनों बहुत ज़ोर से रो पड़े।

इसी के साथ ही पूरे महल के गिरने की आवाज भी सुनायी दी सो महल का हर आदमी सावधान हो गया और महल में से बाहर निकलने की कोशिश करने लगा।

राजकुमार और राजकुमारी भी वहॉ से बाहर की तरफ भागे। जब सब उसमें से बाहर आ गये तो वह महल टूट कर बिखर गया। उसके टूट कर बिखरने से मीलों तक की जमीन कॉप गयी।

उसके बाद फिर किसी ने जादूगरनी और उसकी बेटी को वहाँ कहीं नहीं देखा।

जल्दी ही राजकुमार और राजकुमारी को उनके बच्चे भी मिल गये। वे उनको ले कर अपने महल चले गये। आयरलैंड, मुन्स्टर और उल्स्टर के राजा और उनकी पत्नियाँ उनसे मिलने आये और उनसे मिल कर बहुत खुश हुए।

भगवान करे जैसे वे खुश हुए वैसे ही सब लोग खुश रहें।

6 सूरज के पूर्व में और चाँद के पश्चिम में[26]

सूअर राजा जैसी यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के नौर्स देशों[27] की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार की बात है कि एक जगह एक बहुत ही गरीब चरवाहा रहता था। उसके कई बच्चे थे जिनको वह न तो पेट भर खाना ही खिला पाता था और न ही उनको ठीक तरह से कपड़े ही पहना पाता था।

हालाँकि उसके सारे बच्चे बहुत प्यारे थे पर सबसे प्यारी उसकी सबसे छोटी बेटी थी। वह सबमें इतनी सुन्दर थी कि बस उसके बराबर का सुन्दर और कोई नहीं था।

साल का पतझड़ का मौसम आ गया था तो एक दिन बृहस्पतिवार की शाम को मौसम बहुत ही खराब और तूफानी हो गया।

चारों तरफ अँधेरा छा गया हवा बहुत तेज़ चलने लगी और बारिश पड़ने लगी। उसके मकान की दीवारें तक हिलने लगीं। वे सब आग के चारों तरफ बैठ गये और कुछ कुछ करने लगे।

---

[26] East o’ the Sun and the West o’ the Moon – a folktale from Norse Countries, Europe.
Adapted from the Web Site : http://www.sacred-texts.com/neu/ptn/ptn14.htm
Taken from the Book “Popular Tales from the Norse”. By George Webbe Dasent. 1904.

[27] Norse, or Nordic, or Scandinavian countries are five in number situated on the Northernmosr coast of Europe – Denamrk, Finland, Iceland, Norway and Sweden

पर तभी अचानक किसी ने खिड़की के शीशे पर तीन बार दस्तक दी। पिता उठ कर बाहर यह देखने के लिये गया कि क्या मामला था और जब वह दरवाजे के बाहर निकला तो उसने क्या देखा कि वहाँ तो एक बहुत बड़ा सफेद भालू खड़ा था।

सफेद भालू बोला — "गुड ईवनिंग[28] जनाब।"

आदमी बोला — "आपको भी।"

सफेद भालू बोला — "क्या आप अपनी सबसे छाटी बेटी मुझे देंगे? अगर आप मुझे उसे दे देंगे तो मैं आपको उतना ही अमीर बना दूँगा जितने कि आप अभी गरीब हैं।"

अब वह आदमी अमीर तो होना चाहता था पर फिर भी उसने सोचा कि इस बारे में पहले वह अपनी बेटी से बात कर ले। सो वह अन्दर गया और सबको बताया कि बाहर एक सफेद भालू खड़ा है जो यह वायदा करता है कि उनको बहुत अमीर बना देगा अगर वह उसको अपनी सबसे छोटी बेटी दे दे तो।

लड़की तुरन्त बोली "नहीं।" वह कुछ भी कहे पर वह उसके पास नहीं जायेगी। सो वह आदमी बाहर गया और उस सफेद भालू से कहा कि वह अगले बृहस्पतिवार को फिर आये तभी वह उसकी बात का जवाब देगा।

इस बीच उसने अपनी बेटी से बात की और उससे बार बार यही कहता रहा कि इसके बाद वे लोग भी बहुत अमीर हो जायेंगे

---

[28] Normal greeting in English language in the evening time.

और वह खुद भी बहुत अच्छे से रहेगी इसलिये उसको सफेद भालू की बात मान लेनी चाहिये। आखिर वह मान गयी।

उसने अपने फटे कपड़ों को धोया और उनकी मरम्मत की। अपने आपको भी ठीक से सजाया सँवारा और चलने के लिये तैयार हो गयी। उसके पास कुछ ज़्यादा सामान ही नहीं था सो उसको वहाँ से जाने में कोई खास मुश्किल नहीं पड़ी।

अगले बृहस्पतिवार की शाम को वह सफेद भालू उसको लेने के लिये आया। वह अपनी पोटली ले कर उसकी पीठ पर चढ़ गयी और भालू उसको ले कर वहाँ से चल दिया।

कुछ देर चलने के बाद सफेद भालू ने पूछा – "क्या तुम डर रही हो?"

"नहीं। मैं नहीं डर रही।"

भालू फिर बोला – "ख़ैर तुम मेरा यह लम्बे बालों वाला कोट कस कर पकड़ लो और बस फिर तुमको डरने की कोई जरूरत नहीं है।"

उसके बाद वे बहुत दूर तक चलते रहे। आखिर वे एक पहाड़ी के पास आ गये। उस पहाड़ी की दीवार पर सफेद भालू ने एक दस्तक दी और एक दरवाजा खुल गया।

वे उस दरवाजे के अन्दर घुस गये तो वे एक किले में आ गये। उस किले में बहुत सारे कमरे थे जिनमें सबमें रोशनी हो रही थी। सब कमरे सोने चाँदी की तरह से चमक रहे थे।

एक कमरे में एक जितनी शानदार खाने की मेज हो सकती थी उतनी शानदार खाने की मेज तैयार लगी रखी थी।

सफेद भालू ने लड़की को एक चाँदी की घंटी दी और कहा कि जब भी उसको किसी चीज़ की जरूरत हो तो वह उसको बजा दे। वह चीज़ उसको तुरन्त ही मिल जायेगी।

उसने पेट भर खाना खाया। शाम के कपड़े पहिने। अपनी इस लम्बी यात्रा के बाद वह थक गयी थी सो उसको नींद आने लगी। उसको लगा कि वह सो जाये सो उसने घंटी बजायी।

उसने वह घंटी बस मुश्किल से पकड़ी ही होगी कि वह एक कमरे में आ गयी जहाँ एक सफेद बिस्तर लगा हुआ था। उस पर सफेद रेशमी तकिये रखे थे और कमरे में सुनहरी झालर वाले सफेद परदे लगे हुए थे। उस कमरे को देख कर उसका मन करने लगा कि वह वहाँ सो जाये।

उस कमरे में जो कुछ भी रखा हुआ था या तो वह सोने का था या फिर चाँदी का। पर जब वह बिस्तर पर लेट गयी और उसने रोशनी बुझा दी तो उसके कमरे में एक आदमी आया और उसके बराबर में आ कर लेट गया।

यह वह सफेद भालू था जो उसको वहाँ ले कर आय था। वह रात को अपना जंगली रूप निकाल देता था और दिन में फिर से भालू बन जाता था। पर उस लड़की ने उसे कभी नहीं देखा क्योंकि

वह वहाँ तभी आता था जब वह लड़की अपनी रोशनी बुझा देती थी। और इससे पहले कि दिन निकले वह वहाँ से चला जाता था।

इस तरह कुछ दिन तक सब कुछ खुशी खुशी चलता रहा पर कुछ समय बाद वह लड़की कुछ चुप चुप और दुखी सी रहने लगी क्योंकि वह वहाँ सारा दिन अकेली रहती। उसकी इच्छा करती कि वह अपने माता पिता और बहिन और भाइयों को देखे।

सो एक दिन जब सफेद भालू ने उससे पूछा कि क्या उसको वहाँ किसी चीज़ की कमी महसूस होती थी तो वह बोली कि वहाँ वह बहुत अकेला महसूस करती थी।

उसकी इच्छा थी कि वह अपने माता पिता और बहिन और भाइयों को देखे। इसी लिये वह अपने आपको बहुत अकेला और दुखी महसूस करती थी।

भालू बोला — "यह कोई बहुत बड़ी बात नहीं है। मैं तुमको उनसे मिलवा लाता हूँ। पर तुम मुझसे एक वायदा करो कि तुम अपनी माँ से कभी अकेले में बात नहीं करोगी। तुम उनसे केवल तभी बात करोगी जब और भी लोग वहाँ सुनने के लिये होंगे।

क्योंकि नहीं तो वह तुम्हारा हाथ पकड़ कर तुमसे बात करने के लिये तुमको एक अकेले कमरे में ले जायेगी। तुम इस बात का ख्याल रखना कि वह ऐसा न करे नहीं तो हमारे और तुम्हारे दोनों के ऊपर कुछ न कुछ बुरा होगा।"

सो एक रविवार को सफेद भालू आया और लड़की से बोला कि वे उस दिन उसके माता पिता से मिलने जा सकते थे। सो वह लड़की उसकी पीठ पर बैठ गयी और वे दोनों चल दिये। वे बहुत देर तक और बहुत दूर तक चलते रहे।

आखिर वे एक बहुत ही शानदार घर पर आये जहाँ घर के बाहर उसके भाई बहिन इधर उधर भाग रहे थे और खेल रहे थे। सब कुछ देखने में बहुत सुन्दर लग रहा था। लड़की वह सब देख कर बहुत खुश हो गयी।

भालू बोला — "अब तुम्हारे माता पिता यहाँ रहते हैं। पर जो मैंने तुमसे कहा है उसे भूलना नहीं नहीं तो तुम हम दोनों को बदकिस्मत बना दोगी।"

भगवान उसकी रक्षा करे वह नहीं भूलेगी। जब वह घर पहुँच गयी तो सफेद भालू पीछे मुड़ा और उसको वहीं छोड़ कर चला गया।

जब वह अपने माता पिता से मिली तो सब लोग उससे मिल कर बहुत खुश हुए। उस समय किसी के दिमाग में यह ही नहीं आया कि उसने उनको यह सुख देने के लिये कितना क्या कुछ किया है तो उसके लिये वे उसको धन्यवाद भी दे दें।

अब उनके पास वह सब कुछ था जो वह चाहते थे। और जितना अच्छा चाहते थे उतना अच्छा था। वे सब अब यह जानना चाहते थे कि वह जहाँ रहती थी वहाँ वह कैसे रहती थी।

लड़की ने कहा कि वह जहाँ भी रहती थी वहाँ वह बड़े आराम से रहती थी। वहाँ उसको वे सब चीज़ें मिली हुई थीं जिनकी उसको जरूरत थी और इच्छा थी। इसके अलावा उसने उनसे क्या बात की यह तो पता नहीं पर वे उससे ज़्यादा और कुछ नहीं जान सके।

शाम को खाना खाने के बाद जैसा कि सफेद भालू ने उससे कहा था वैसा ही हुआ।

उसकी माँ उसको अपने सोने वाले कमरे में ले जा कर उससे अकेले में बात करना चाह रही थी। पर उसको सफेद भालू की बात याद थी सो वह उसके साथ उसके सोने वाले कमरे में ऊपर नहीं गयी।

उसने कहा "अब हमें और क्या बात करनी है माँ।" और यह कह कर उसको वहाँ से हटा दिया। पर किसी तरह से उसकी माँ ने उसको ऊपर जाने के लिये पटा ही लिया और उसको भी अपनी माँ को सारी कहानी बतानी ही पड़ी।

उसने माँ को बताया कि कैसे हर रात जब वह बिस्तर पर सोने के लिये चली जाती थी और रोशनी बुझा देती थी तो एक आदमी आता था और उसके पास आ कर लेट जाता था।

इस तरह से उसने कभी उसको देखा ही नहीं क्योंकि वह सुबह होने से पहले ही उठ जाता था और वहाँ से चला जाता था।

उसके जाने के बाद वह दुखी हो जाती थी क्योंकि वह यकीनन उसको देखना चाहती थी। बस फिर वह सारा दिन वहाँ अकेली ही रहती थी।

उसकी माँ बोली — "मेरी बच्ची तू जिसके साथ सो रही है वह एक ट्रौल[29] भी हो सकता है। पर अब मैं तुझे बताती हूँ कि उस पर नजर कैसे रखनी है।

मैं तुझे टैलो[30] का एक टुकड़ा दूँगी। उसे तू छिपा कर अपने घर ले जाना। वह जब सोया रहे तो उसे जलाना तब तू उसको देख पायेगी पर ध्यान रहे कि उसका गरम टैलो उसके ऊपर न गिरे।

सो उसकी माँ ने उसको टैलो का एक टुकड़ा दिया और वह उसने छिपा कर रख लिया। जब रात हुई तो सफेद भालू वहाँ आया और उसको उसके घर से ले गया।

थोड़ी ही दूर पहुँचने के बाद सफेद भालू ने उससे पूछा कि क्या वह सब हुआ था जो उसने उससे कहा था। वह झूठ नहीं बोल सकी कि वैसा नहीं हुआ था। उसने कहा कि "हाँ हुआ था।"

सफेद भालू आगे बोला — "ध्यान रखना कि अगर तुमने अपनी माँ की सलाह सुनी है तो इसका मतलब है कि तुम हम दोनों

---

[29] A troll is a supernatural being in Norse mythology and Scandinavian folklore. In origin, troll may have been a negative being in Norse mythology. Beings described as trolls dwell in isolated rocks, mountains, or caves, live together in small family units, and are rarely helpful to human beings.

[30] Tallow is animal fat which does not perish for long time if it is stored airtight. It stays solid at room temperature. So maybe her mother gave her this to burn and warned her not to fell even a drop on the man.

पर बदकिस्मती ले कर आयी हो। और जो कुछ भी हम दोनों के बीच अब तक हुआ है वह सब बेकार हो गया।"

वह बोली कि उसने अपनी माँ की सलाह नहीं सुनी।

जब वह घर पहुँची तो वह सोने चली गयी और फिर वही पुरानी कहानी शुरू हो गयी। उसके रोशनी बुझाने के बाद एक आदमी आया और उसके पास आ कर लेट गया।

जब काफी रात बीत गयी और उसको लगा कि वह आदमी सो गया है तो वह उठी और उसने वह टैलो जलाया।

टैलो की रोशनी उस आदमी के चेहरे पर पड़ी तो उसने देखा कि वह तो इतना सुन्दर राजकुमार था जितना उसने पहले कभी देखा नहीं था। उसको उससे तुरन्त ही प्यार हो गया।

उसको लगा कि वह उसको चूमे बिना नहीं रह सकेगी और उसने उसको चूम लिया। पर जैसे ही उसने उसको चूमा तो गरम गरम टैलो की तीन बूँदें उसकी कमीज पर गिर पड़ीं और उसकी आँख खुल गयी।

जागते ही वह चिल्लाया — "यह तुमने क्या किया। तुमने हम दोनों को बदकिस्मत बना दिया। क्योंकि अगर हमने इसी तरह से एक साल पूरा कर लिया होता तो मैं इस शाप से छूट जाता।

मेरी एक सौतेली माँ है जिसने मुझ पर जादू डाल रखा है जिसकी वजह से मैं दिन में भालू बना रहता हूँ और रात में आदमी

बन जाता हूँ। पर अब हमारे बीच के सारे बन्धन खत्म हो गये। अब मुझे तुम्हारे पास से उसके पास चले जाना चाहिये।

वह एक किले में रहती है जो सूरज के पूर्व में है और चाँद के पश्चिम में है। वहाँ एक राजकुमारी भी है जिसकी नाक तीन ऐल[31] लम्बी है। अब मुझे उसी से शादी करनी पड़ेगी।"

यह सुन कर लड़की को बहुत बुरा लगा और वह रो पड़ी पर इसका और कोई इलाज नहीं था। सफेद भालू को तो जाना ही था। उसने उससे पूछा कि क्या वह उसके साथ जा सकती थी।

सफेद भालू बोला — "नहीं तुम मेरे साथ नहीं जा सकतीं।"

लड़की फिर बोली — "तब फिर तुम मुझे वह तरकीब बताओ जिससे मैं तुम्हें ढूँढ सकूँ। कम से कम यह तो मैं कर सकती हूँ।

भालू बोला — "हाँ यह तुम कर सकती हो पर उस जगह तक जाने का कोई रास्ता नहीं है। क्योंकि वह सूरज के पूर्व में और चाँद के पश्चिम में है और तुम वहाँ का रास्ता कभी नहीं खोज पाओगी।"

अगले दिन जब वह उठी तो राजकुमार और उसका महल दोनों गायब हो चुके थे। वह एक घने जंगल में घास पर लेटी हुई थी। उसके बराबर में उसकी वही फटे पुराने कपड़ों की पोटली रखी हुई थी जो वह अपने पुराने घर से अपने साथ ले कर आयी थी।

---

[31] Ell is a former measure of length used mainly for textiles, locally variable but typically about 45".

उसने जागने के लिये अपनी आँखें मलीं और फिर रो पड़ी। वह तब तक रोती रही जब तक वह रोते रोते थक नहीं गयी। फिर वह उठी और चल दी। वह बहुत दिनों तक चलती रही।

चलते चलते वह एक पहाड़ी के पास आ गयी। वहाँ एक बूढ़ी जादूगरनी[32] बैठी हुई थी और वह एक सोने के सेब से उसको उछाल उछाल कर खेल रही थी।

उसने उससे पूछा कि क्या वह उस राजकुमार का पता जानती थी जो अपनी सौतेली माँ के साथ एक ऐसे महल में रहता था जो सूरज के पूर्व में था और चाँद के पश्चिम में था। और जिसकी शादी एक ऐसी राजकुमारी से होने वाली थी जिसकी नाक तीन ऐल लम्बी थी।

बूढ़ी जादूगरनी ने पूछा — "लेकिन तुम उसको कैसे जानती हो? हाँ यह हो सकता है कि शायद तुम वही लड़की हो जिससे उसको शादी करनी हो।"

"हाँ मैं वही लड़की हूँ।"

वह बूढ़ी जादूगरनी बोली — "अच्छा तो वह लड़की तुम हो। मैं उसके बारे में केवल इतना ही जानती हूँ कि वह एक ऐसे महल में रहता है जो सूरज के पूर्व में है और चाँद के पश्चिम में है और ज़्यादा कुछ नहीं। पर वहाँ तक तुम शायद कभी नहीं पहुँच पाओ।

[32] Translated for the words "Old Hag". See the picture above.

पर फिर भी तुम मेरा यह घोड़ा उधार ले सकती हो। इस पर सवार हो कर तुम मेरी पड़ोसन के घर चली जाओ। जब तुम वहाँ पहुँच जाओगी तब वह तुम्हें शायद उसके बारे में कुछ बता सके।

जब तुम वहाँ पहुँच जाओ तो बस इसके बाँये कान के नीचे एक चाबुक मार देना और यह अपने आप ही वापस घर लौट आयेगा। और हाँ यह सोने का सेब लेती जाओ शायद यह तुम्हारे कभी काम आ जाये।"

लड़की ने उससे सोने का सेब लिया और घोड़े पर सवार हो कर चल दी। वह बहुत देर तक चलती रही कि वह एक दूसरी बूढ़ी जादूगरनी के पास आ पहुँची।

इस जादूगरनी के हाथ में एक सुनहरी कंघी[33] लगी हुई थी। उसने उससे भी यही पूछा कि क्या वह उस राजकुमार का पता जानती थी जो अपनी सौतेली माँ के साथ एक ऐसे महल में रहता था जो सूरज के पूर्व में था और चाँद के पश्चिम में था। और जिसकी शादी एक ऐसी राजकुमारी से होने वाली थी जिसकी नाक तीन ऐल लम्बी थी।

उस जादूगरनी ने भी पहली जादूगरनी की तरह ही जवाब दिया कि वह किसी ऐसे राजकुमार को नहीं जानती थी सिवाय इसके कि

[33] Translated for the words "Carding comb". Combing, sometimes known as carding, is a sometimes-fatal form of torture in which iron combs designed to prepare wool and other fibres for woolen spinning are used to scrape, tear, and flay the victim's flesh.

वह एक ऐसे महल में रहता था जो सूरज के पूर्व में था और चाँद के पश्चिम में था।

तुम वहाँ पहुँचोगी। या तो देर से या फिर कभी नहीं। पर हाँ तुम मेरा घोड़ा उधार ले जाओ और मेरी पड़ोसन के पास चली जाओ शायद वह तुम्हें उसके बारे में कुछ बता दे।

जब तुम वहाँ पहुँच जाओ तो बस इसके बाँये कान के नीचे एक चाबुक मार देना और यह अपने आप ही वापस घर लौट आयेगा।"

यह कह कर उसने उसको अपना घोड़ा दिया और सुनहरी कंघी दी कि शायद वह उसके कुछ काम आ जाये। लड़की ने उससे कंघी ली और उसके घोड़े पर बैठ कर और आगे चल दी।

वह फिर काफी देर तक चलती रही। वह बहुत थक गयी थी। अब वह फिर से एक पहाड़ी के नीचे आ पहुँची थी। वहाँ एक तीसरी जादूगरनी बैठी हुई थी। उसके पास एक सोने का चरखा रखा हुआ था।

उसने उससे भी वही पूछा कि क्या वह उस राजकुमार का पता जानती थी जो अपनी सौतेली माँ के साथ एक ऐसे महल में रहता था जो सूरज के पूर्व में था और चाँद के पश्चिम में था। और जिसकी शादी एक ऐसी राजकुमारी से होने वाली थी जिसकी नाक तीन ऐल लम्बी थी।

वह जादूगरनी बोली — “ऐसा लगता है कि उसकी शादी तुमसे ही होनी है।”

“जी हाँ। मैं ही हूँ वह।”

पर इसको भी इससे पहले वाली दोनों जादूगरनियों से ज़्यादा कुछ नहीं मालूम था। वह भी केवल इतना ही जानती थी कि वह एक ऐसे महल में रहता था जो सूरज के पूर्व में था और चाँद के पश्चिम में था।

“और वहाँ तुम पहुँचोगी। देर से या फिर कभी नहीं। पर हाँ मैं तुमको अपना घोड़ा उधार दे सकती हूँ उस पर चढ़ कर तुम पूर्वी हवा के पास चली जाओ। शायद वह उस हिस्से को जानता हो और तुमको उड़ा कर वहाँ ले जाये।

पर जब तुम वहाँ पहुँच जाओ तो बस इसके बाँये कान के नीचे एक चाबुक मार देना और यह अपने आप ही वापस घर लौट आयेगा।”

कह कर उसने भी उसको अपना सुनहरा चरखा दिया कि शायद वव्ह उसके कभी काम आ जाये।

वह फिर उस घोड़े पर चढ़ कर बहुत दिनों तक चलती रही। पर पूर्वी हवा के घर तक आते आते वह बहुत थक गयी थी। उसके घर पहुँचने पर उसने उससे भी वही पूछा।

क्या वह उस राजकुमार का पता जानता था जो अपनी सौतेली माँ के साथ एक ऐसे महल में रहता था जो सूरज के पूर्व में था और

चाँद के पश्चिम में था। और जिसकी शादी एक ऐसी राजकुमारी से होने वाली थी जिसकी नाक तीन ऐल लम्बी थी।

पूर्वी हवा बोला — "हाँ मैं उसे जानता तो हूँ क्योंकि मैं उसके बारे में अक्सर बात करता रहता हूँ पर मैं उसके महल का रास्ता नहीं जानता क्योंकि मैं उतनी दूर कभी गया नहीं।

पर अगर तुम मेरे साथ चलो तो मैं तुम्हें अपने भाई पश्चिमी हवा के पास ले चलता हूँ। हो सकता है कि वह जानता हो। बस तुम मेरी पीठ पर बैठ जाओ और मैं तुम्हें उसके पास ले चलता हूँ।"

सो वह लड़की उसकी पीठ पर बैठ गयी और वे दोनों बहुत जल्दी ही पश्चिमी हवा के घर पहुँच गये।

वहाँ जा कर पूर्वी हवा ने उससे कहा कि वह एक ऐसी लड़की को ले कर आया है जिसको उस राजकुमार से मिलना ही है जो अपनी सौतेली माँ के साथ एक ऐसे महल में रहता था जो सूरज के पूर्व में था और चाँद के पश्चिम में था। उसको बहुत ख़ुशी होगी अगर उसको वह उसको उस महल तक का रास्ता बता देगा।"

पर पश्चिमी हवा ने भी वही कहा — "मैं उसका रास्ता नहीं जानता क्योंकि मैं उतनी दूर तक कभी नहीं बहा पर हाँ मैं तुम्हारे साथ अपने दूसरे भाई दक्षिणी हवा के पास जा सकता हूँ क्योंकि वह हम दोनों से कहीं ज़्यादा ताकतवर है। तुम मेरी पीठ पर बैठ जाओ और मैं तुमको वहाँ ले चलूँगा।"

ऐसा कह कर उसने अपने पंख बहुत दूर तक फैला दिये। वह लड़की उसकी पीठ पर बैठ गयी और वह पश्चिमी हवा उसको ले कर उड़ चला।

जब वे दक्षिणी हवा के घर पहुँचे तो पश्चिमी हवा ने उससे पूछा कि क्या वह उस राजकुमार के महल का रास्ता जानता था जो सूरज के पूर्व में था और चाँद के पश्चिम में था क्योंकि उस लड़की को वहाँ पहुँचना ही है।”

दक्षिणी हवा बोला — “तुमको बताने की जरूरत नहीं है। यह वही है।

मैं अपने समय में बहुत जगह गया हूँ पर इतनी दूर मैं कभी नहीं गया। पर अगर तुम चाहो तो मैं तुमको अपने भाई उत्तरी हवा के पास ले चलता हूँ। वह हम सबमें सबसे बड़ा है और हम सबमें सबसे ज़्यादा ताकतवर भी है।

अगर उसको उस महल का रास्ता नहीं मालूम है तो फिर दुनियाँ में उस महल का रास्ता तुम्हें दुनियाँ में कोई नहीं बता सकता। तुम मेरी पीठ पर बैठ जाओ और मैं तुम्हें उसके घर ले चलता हूँ।”

सो वह लड़की उसकी पीठ पर बैठ गयी और वे दोनों बहुत जल्दी ही उसके घर पहुँच गये। जब वे उत्तरी हवा के घर पहुँचे तो वह तो बहुत तेज़ी से इधर उधर बह रहा था। उसकी ठंडक बहुत दूर से ही आ रही थी।

वह उनको देखते ही दूर से चिल्लाया — "चले जाओ यहाँ से। तुम लोग यहाँ क्यों आये हो।" इससे वे लोग उसकी बरफीली ठंड से काँप गये।

दक्षिणी हवा बोला — "तुमको इतना बुरा बुरा नहीं बोलना चाहिये क्योंकि मैं तुम्हारा भाई दक्षिणी हवा यहाँ हूँ। और यह लड़की है जिसको वह राजकुमार चाहिये ही चाहिये जो एक ऐसे महल में रहता था जो सूरज के पूर्व में था और चाँद के पश्चिम में था।

अब बस यह तुमसे यह जानना चाहती है कि क्या तुम कभी उसके घर गये हो और क्या तुम उसके घर का रास्ता जानते हो। वह उसको पा कर बहुत खुश होगी।"

"ओह वह तो मुझे मालूम है कि वह कहाँ है। एक बार मैंने अपनी ज़िन्दगी में एक ऐस्पैन का पत्ता उधर उड़ाया था पर मैं इतना थका हुआ था कि उसको उड़ाने के बाद मैं फिर कई दिनों तक बह ही नहीं सका।

पर अगर तुम वाकई उधर जाना चाहते हो और मेरे साथ आने में डरते नहीं हो तो मेरी पीठ पर बैठ जाओ और मैं देखता हूँ कि मैं तुमको उधर तक ले जा सकता हूँ या नहीं।"

दक्षिणी हवा बोला — "अगर किसी तरह भी मुमकिन है तो इसको उधर जाना ही चाहिये और जहाँ तक डरने का सवाल है तुम कितनी भी तेज़ जाओ वह डरेगी नहीं।"

उत्तरी हवा बोला — "तब ठीक है। पर तुमको आज की रात यहाँ सोना पड़ेगा क्योंकि अगर हम वहाँ जायेंगे तो हमको वहाँ सारा दिन लग जायेगा।"

अगली सुबह सवेरे ही उत्तरी हवा ने लड़की को जगाया अपने अन्दर हवा भरी, अपने आपको ताकतवर बनाया कि वह भयानक सा लगने लगा। लड़की उसके ऊपर बैठ गयी और वे दोनों हवा में उड़ कर ऊपर उठ गये।

उनके उड़ने के ढंग से ऐसा लग रहा था जैसे कि वे जब तक अपनी जगह पहुँच नहीं जायेंगे रुकेंगे नहीं। उनके उड़ने से उनके नीचे बड़ा भारी तूफान आया हुआ था कि उससे बहुत सारी लकड़ियाँ और मकान टूट गये थे। जब वे समुद्र के ऊपर से उड़े तो सैंकड़ों जहाज़ समुद्र में डूब गये।

इस तरह से वे अपने नीचे की सब जगहों को बरबाद करते हुए चले जा रहे थे। किसी को यकीन ही नहीं था कि वे इतनी दूर जा रहे थे। बहुत देर तक तो वे समुद्र के ऊपर ही उड़ते रहे।

उत्तरी हवा को इतनी थकान होती जा रही थी कि वह अब मुश्किल से बेचारा मुँह से हवा फेंक पा रहा था और मुश्किल से ही अपने पंख चला पा रहा था।

आखिर वह नीचे गिरने लगा और समुद्र की ऊँची ऊँची लहरें उसके पैर छूने लगीं।

उत्तरी हवा ने लड़की से पूछा — "क्या तुम्हें डर लग रहा है?"

लड़की बोली — “नहीं मुझे बिल्कुल भी डर नहीं लग रहा।”

पर अब वे उस जगह से बहुत दूर नहीं थे जहाँ उनको जाना था और उत्तरी हवा में अभी इतनी ताकत तो थी ही कि वह उस लड़की को समुद्र के किनारे बने हुए उस महल की खिड़की के नीचे फेंक सकता जो सूरज के पूर्व में था और चाँद के पश्चिम में था।

पर उसके बाद तो वह इतना थक गया था कि घर लौटने से पहले उसको वहाँ कई दिन तक आराम करना पड़ा।

अगले दिन वह लड़की उस महल की एक खिड़की के नीचे बैठ गयी और अपने सुनहरी सेब से खेलने लगी। सबसे पहला आदमी जो उसने देखा वह थी वह लम्बी नाक वाली राजकुमारी जिसकी राजकुमार से शादी होने वाली थी।

उस राजकुमारी ने खिड़की खोली और उससे पूछा — “ओ लड़की तुम क्या लोगी इस सेब का?”

लड़की बोली — “मैम यह बेचने के लिये नहीं है, न तो पैसों के लिये और न सोने के लिये।”

राजकुमारी बोली — “अगर यह पैसों या सोने के लिये बेचने के लिये नहीं है तो फिर तुम इसके लिये क्या लोगी? तुम इसके लिये अपनी कीमत तो बताओ।”

लड़की ने जवाब दिया — “अगर मैं उस राजकुमार के पास पहुँच जाऊँ जो यहाँ रहता है और उसके साथ सारी रात गुजार लूँ तब आप इसको ले सकती हैं।”

राजकुमारी ने सोचा कि यह तो मुमकिन है। सो उसने उससे वह सुनहरा सेब ले लिया और जब वह लड़की राजकुमार के सोने के कमरे तक आयी तब तक तो राजकुमार गहरी नींद सो चुका था।

उसने उसको हिलाया, जगाया, इस बीच वह रोती भी रही पर वह जो कुछ कर सकती थी करती रही पर वह उसको जगा नहीं सकी। इतने में सुबह हो गयी तो लम्बी नाक वाली राजकुमारी ने उसको राजकुमार के कमरे से बाहर निकाल दिया।

अगले दिन वह लड़की फिर से उसी खिड़की के नीचे बैठ गयी और अपनी सुनहरी कंघी से कंघी करती रही तो फिर वही हुआ जो पहले दिन हुआ था।

लम्बी नाक वाली राजकुमारी ने उसको उस सुनहरी कंघी से कंघी करते देखा तो उससे पूछा कि वह वह कंघी उसको कितने की देगी।

उसने भी उसको पहले वाला जवाब दिया — "यह कंघी बेचने के लिये नहीं है। न तो सोने के लिये ओर न पैसे के लिये।"

लम्बी नाक वाली राजकुमारी ने उससे फिर पूछा — "अगर यह पैसों या सोने के लिये बेचने के लिये नहीं है तो फिर तुम इसके लिये क्या लोगी? तुम इसके लिये अपनी कीमत तो बताओ।"

लड़की ने जवाब दिया — "अगर मैं उस राजकुमार के पास पहुँच जाऊँ जो यहाँ रहता है और उसके साथ सारी रात गुजार लूँ तब आप इसको ले सकती हैं।"

राजकुमारी ने सोचा कि यह तो मुमकिन है। सो उसने उससे वह सुनहरी कंघी ले ली और उसको रात को आने के लिये कहा। पर जब तक वह लड़की राजकुमार के सोने के कमरे तक आयी तब तक तो राजकुमार पिछले दिन की तरह से गहरी नींद सो चुका था।

उसने उसको हिलाया, जगाया, इस बीच वह रोती भी रही पर वह जो कुछ कर सकती थी करती रही पर वह उसको जगा नहीं सकी। इतने में सुबह हो गयी। सुबह की पौ फटते ही लम्बी नाक वाली राजकुमारी ने उसको राजकुमार के कमरे से बाहर निकाल दिया।

अगले दिन वह लड़की फिर से उसी खिड़की के नीचे बैठ गयी और अपने सोने के चरखे से रुई कातने लगी। लम्बी नाक वाली राजकुमारी को वह सोने का चरखा बहुत पसन्द आया तो उसने उस लड़की से फिर वही पूछा — "ओ लड़की तुम क्या लोगी इस चरखे को बेचने का?"

लड़की बोली — "मैम यह बेचने के लिये नहीं है। न तो पैसों के लिये और न सोने के लिये।"

राजकुमारी बोली — "अगर यह पैसों या सोने के लिये बेचने के लिये नहीं है तो फिर तुम इसके लिये क्या लोगी? तुम इसके लिये अपनी कीमत तो बताओ।"

लड़की ने जवाब दिया — “अगर मैं उस राजकुमार के पास पहुँच जाऊँ जो यहाँ रहता है और उसके साथ सारी रात गुजार लूँ तब आप इसको ले सकती हैं।”

राजकुमारी ने सोचा कि यह तो मुमकिन है। सो उसने उससे वह सुनहरा चरखा ले लिया और उस लड़की को रात को आने के लिये कहा।

इस बीच कुछ ईसाई लोग जो वहाँ बन्दी थे इधर से उधर ले जाये जाते थे। उनको ले जा कर राजकुमार के कमरे के बराबर वाले कमरे में बिठा दिया जाता था।

सो जब वे वहाँ बैठे हुए थे उनको लगा कि कोई लड़की उनके बराबर वाले कमरे में थी। वह रो रही थी और भगवान से प्रार्थना कर रही थी। और यह वह दो दिन से कर रही थी। उन्होंने यह बात राजकुमार से कही।

पर राजकुमार ने उनसे कहा कि उसको तो कुछ सुनायी ही नहीं दिया। वह तो रात भर गहरी नींद सोता रहा।

सो उस शाम जब वह लम्बी नाक वाली राजकुमारी राजकुमार को सुलाने वाला पेय ले कर आयी और उसे राजकुमार को पीने के लिये दिया तो राजकुमार ने उसे पीने का बहाना तो किया पर पिया नहीं। वह पेय उसने अपने पीछे की तरफ फेंक दिया क्योंकि उसको लगा कि वह पेय उसको सुला देता था।

सो इस बार जब वह लड़की उसके कमरे में आयी तब वह जागा हुआ था। उस लड़की ने आ कर उसको अपनी सारी कहानी बतायी कि वह कैसे कैसे वहाँ तक पहुँची।

राजकुमार बोला — "ओह तो तुम तो बहुत ठीक समय से आ गयीं क्योंकि कल ही हमारी शादी होने वाली है। और क्योंकि अब तुम आ गयी हो इसलिये मुझे अब इस लम्बी नाक वाली राजकुमारी से शादी करने की जरूरत नहीं पड़ेगी।

तुम्हीं एक ऐसी लड़की थीं जो मुझे इस शाप से आजाद करा सकती थीं। अब मैं यह कह सकता हूँ कि यही मेरी पत्नी होने के लायक है।

कल मैं उससे कहूँगा कि वह मेरी कमीज पर लगे टैलो के तीन धब्बे साफ कर दे। वह कहेगी कि "हाँ मैं करूँगी।" क्योंकि उसको पता ही नहीं कि वे धब्बे तुमने वहाँ डाले हैं। पर यह काम तो ईसाई लोगों के लिये है न कि ट्रौल लोगों के लिये।

इसलिये मैं कहूँगा कि मैं किसी और लड़की से शादी ही नहीं करूँगा सिवाय उस लड़की के जो मेरी कमीज के वे धब्बे साफ कर दे और फिर मैं तुमसे उन्हें साफ करने के लिये कहूँगा।"

उसके बाद दोनों ने वह रात खुशी खुशी बितायी। अगले दिन जब शादी होने वाली थी राजकुमार बोला — "पहले मैं यह देखना चाहूँगा कि मेरी दुलहिन मेरे लिये ठीक भी है या नहीं।"

उसकी सौतेली माँ तुरन्त बोली — "हाँ यह तो ठीक है।"

तब राजकुमार बोला — "मेरे पास एक बहुत ही बढ़िया कमीज है जिसे मैं अपनी शादी पर पहनना चाहूँगा। पर किसी तरह से उस पर टैलो के तीन धब्बे लग गये है।उसे पहनने से पहले उनको साफ करना जरूरी है।

मैंने यह कसम ले ली है कि मैं केवल उसी लड़की से शादी करूँगा जो उस कमीज से वे धब्बे साफ करेगी। अगर वह यह काम नहीं कर सकती तो वह मेरी दुलहिन बनने के लायक नहीं है।"

अब यह तो उसने कोई बड़ी बात नहीं कही थी सो वे सब इस बात पर राजी हो गये। लम्बी नाक वाली राजकुमारी वह कमीज ले गयी और उसके धब्बे साफ करने लगी।

जैसे जैसे वह उनको मल मल कर साफ करने लगी तो वे धब्बे तो बजाय साफ होने के और बड़े होते गये। यह देख कर उसकी माँ बूढ़ी जादूगरनी बोली — "अरे तुझसे यह नहीं होने का। तू इसे मुझे दे मैं करती हूँ।"

पर उसके हाथ में जाते ही वह कमीज तो और ज़्यादा खराब हो गयी। जितना वह उन धब्बों को मलती और उस कमीज को धो कर निचोड़ती तो वे तो और बड़े और काले होते जाते। इससे वह कमीज और भद्दी हो गयी।

इसके बाद वहाँ मौजूद सब ट्रौल ने उसको साफ करने की कोशिश की पर जितनी उसको साफ करने में देर होती गयी वह

कमीज और काली और भद्दी होती गयी। उसके बाद तो वह चिमनी जैसी हो गयी।

यह देख कर राजकुमार बोला — "तुम लोग तो किसी काम के नहीं। तुम एक कमीज नहीं धो सकते। जबकि इस महल के बाहर एक भिखारिन बैठती है मैं शर्त लगाता हूँ कि वह मेरी यह कमीज जरूर ही तुम लोगों से ज़्यादा साफ कर देगी।"

वह चिल्लाया — "ओ लड़की अन्दर आओ।"

वह लड़की अन्दर आयी तो राजकुमार ने उसको वह कमीज दिखा कर पूछा — "ओ लड़की क्या तुम यह कमीज साफ कर सकती हो?"

"पता नहीं। पर शायद मैं कर सकती हूँ।"

और जैसे ही उसने राजकुमार के हाथों से उसकी कमीज ले कर पानी में डुबोई तो वह तो बरफ की तरह से सफेद हो गयी।

"हाँ तुम्हीं मेरे लिये ठीक दुलहिन हो।"

यह देख कर वह बूढ़ी जादूगरनी गुस्से में भर कर उठी और वहाँ से पैर पटकती हुई चली गयी। उसके पीछे पीछे उसकी बेटी लम्बी नाक वाली राजकुमारी और दूसरे ट्रौल भी सब वहाँ से चले गये।

कम से कम हमने फिर कभी उनके बारे में नहीं सुना।

राजकुमार और उस लड़की ने उन सब ईसाई लोगों को आजाद कर दिया जो उस राजकुमार के सोने वाले कमरे के बराबर वाले कमरे में बन्द कर दिये गये थे।

वे जब वहाँ से गये तो अपने साथ सोना और चाँदी भी लेते गये और फिर उस महल से जो सूरज के पूर्व में और चाँद के पश्चिम में था बहुत दूर चले गये।

7 नौरोवे का काला बैल[34]

एक बार की बात है कि नौरोवे[35] में एक स्त्री रहती थी जिसके तीन बेटियाँ थीं। एक बार वे अपनी किस्मत जानने के लिये एक बुढ़िया के पास गयीं जो एक जंगल में रहती थी।

जब वे वहाँ पहुँची तो उसने उनसे एक पेड़ से एक एक सेब तोड़ने के लिये कहा और कहा कि वह उसको ले कर उसकी रसोई घर में आयें। सो तीनों लड़कियों ने एक एक सेब तोड़ा और उसको ले कर वे उस बुढ़िया के रसोईघर में गयीं।

उसने उन तीनों लड़कियों से कहा कि उनको अपना सेब ऐसे छीलना चाहिये कि उसका छिलका न टूटे। जब वह ऐसा कर लें तो उस छिलके को उन्हें अपने दाहिने हाथ से अपने बाँये कन्धे के पीछे फेंक देना चाहिये।

जब उन्होंने उसे वैसे ही फेंक दिया जैसे उसने उनसे फेंकने के लिये कहा था तो उनके उसको फेंकने के बाद उसने देखा कि वह किस ढंग से पड़ा है और सबसे बड़ी लड़की को उसने बताया कि उसकी शादी एक अर्ल से होगी।

---

[34] The Black Bull of Norroway – a fairy tale from Norway, Europe. Adapted from the Web Site : http://www.365cinderellas.com/2011/05/
Taken from *English Fairy Tales,* Retold by AF Steele. London: McMillan & Co. 1918.

[35] Norroway means "Norway". Norway is one of the five Norse, or Nordic or Sandinavian countries situated in far Northern part of Europe – Denmark, Finland, Iceland, Norway and Sweden,

जब दूसरी लड़की ने अपने सेब का छिलका इस तरीके से फेंका तो उसने उसको बताया कि उसकी शादी एक लौर्ड[36] से होगी।

पर जब तीसरी लड़की ने अपने सेब का छिलका इस तरीके से फेंका तो उसने उसको बताया कि उसकी शादी एक काले बैल से होगी।

अब दोनों बड़ी लड़कियाँ तो अपनी किस्मत जान कर बहुत खुश थीं पर सबसे छोटी बहिन ने हँसते हुए कहा कि "कोई बात नहीं मैं काले बैल से ही सन्तुष्ट रहूँगी।"

जब उसकी बहिनों ने उससे कहा कि यह मजाक की बात नहीं थी और उसको इसे हँसी में नहीं लेना चाहिये कहीं ऐसा न हो कि उस बुढ़िया का कहा सच हो जाये तो उसने जवाब दिया कि वैसे भी वह शादी नहीं करना चाहती थी। एक काले बैल की बजाय वह घर पर रहना ज़्यादा पसन्द करेगी।

इस बात को एक साल गुजर गया। सबसे बड़ी लड़की की शादी एक अर्ल से हो गयी और बीच वाली लड़की की शादी एक लौर्ड से हो गयी।

तीसरी सबसे छोटी लड़की एक दिन एक काले बैल को अपने घर के दरवाजे पर खड़ा देख कर आश्चर्य में पड़ गयी। उसको देखते ही लड़की डर गयी पर फिर उसने देखा कि बैल तो बड़ा शान्त और नम्र था।

[36] Earl and Lord are honorable statuses in European royal families.

अब इस लड़की को अपना वायदा तो निभाना ही था सो उसने अपनी माँ को नमस्ते की और उस काले बैल पर चढ़ कर उसके साथ चल दी।

यह बैल उसको बहुत ही आसान रास्ते से ले जा रहा था। वह ऊबड़ खाबड़ रास्तों को बचा बचा कर चल रहा था ताकि उसकी होने वाली पत्नी को कोई तकलीफ न पहुँचे।

वे लोग बहुत देर तक चलते रहे कि लड़की ने कहा कि उसको भूख लगी है और अब वह खाना खाना चाहती है। काला बैल बहुत ही नम्र आवाज में बोला — "मेरे दाहिने कान में खाना रखा है उसमें से खाना निकाल लो। मेरे बाँये कान में पीने के लिये कुछ रखा है उसमें से कुछ पीने के लिये निकाल लो।"

लड़की ने उसके दाहिने कान में हाथ डाल दिया और खाना निकाल लिया। उसने खाना खाया फिर उसने उसके बाँये कान में हाथ डाला तो पीने के लिये कुछ निकाल लिया।

उसके पास खाने का कुछ सामान बच रहा तो वह उसने बाद में खाने के लिये अपने रूमाल में बाँध लिया। कुछ दूर जाने पर एक किला आया तो बैल ने उसे बताया कि उसका भाई वहाँ रहता था। रात को वे वहीं रुकेंगे। सो रात को वे वहीं रुक गये।

इस बैल को वहाँ के सारे बैलों मे सबसे अच्छी देखभाल मिली और लड़की को भी सबसे ज़्यादा आरामदेह कमरा मिला।

सुबह को उनके उस किले को छोड़ने से पहले वहाँ के लोगों ने लड़की को एक सुनहरा अखरोट दिया और उससे कहा कि वह उसको किन्हीं खास हालात में ही इस्तेमाल करे। उस समय वे लोग उसकी सहायता जरूर करेंगे।

वह लड़की उस बैल पर चढ़ कर फिर से अगले सारा दिन चली। जब रात हुई तो वे एक और महल के पास आ निकले। बैल ने बताया कि यह उसके एक दूसरे भाई का महल था। यह महल पहले वाले महल से भी अच्छा था।

बैल ने कहा कि उस रात वे लोग वहाँ उसी महल में ठहरेंगे। इस बार लड़की ने वहाँ के लोगों से कहा कि उनको बैल का खास खयाल रखना चाहिये।

अगली सुबह जब वे लोग वहाँ से चले तो वहाँ के लोगों ने उसको सोने का एक बहुत बड़ा हिकोरी नट दिया। उन्होंने भी उसे चेतावनी दी कि वह उसको ऐसे ही न तोड़े बल्कि जब बहुत जरूरत पड़े तभी तोड़े और तब वे उसकी सहायता करेंगे।

वे दोनों अगले सारा दिन फिर से एक दूसरे से कहानियाँ कहते सुनते चलते रहे। अब दोनों की दोस्ती बढ़ती जा रही थी।

जब रात हुई तो वे एक और महल के पास आ निकले। बैल ने बताया कि यह उसके एक तीसरे भाई का महल था और उस रात वे लोग वहाँ उसी महल में ठहरेंगे।

यह महल उन दो महलों से भी अच्छा था जिनमे वह पिछली दो रातों में ठहरी थी। इस बार जब लड़की वहाँ से चली तो वहाँ के लोगों ने उसको सोने का एक हैज़ल नट दिया और इसको वही चेतावनी दी कि वह उसको जब बहुत ज़्यादा जरूरत पड़े तभी इस्तेमाल करे। वे उसकी सहायता के लिये तुरन्त ही आ जायेंगे।

वे दोनों बात करते फिर आगे चले तो इस बार एक जंगल में आ निकले। यहाँ आ कर बैल ने कहा कि अब यहाँ पर वह अपना जादू तोड़ने की कोशिश करेगा और इस जादू को तोड़ने में अब उसे उसकी सहायता चाहिये। लड़की तैयार हो गयी।

बैल ने कहा — "इस जादू को हटाने के लिये तुमको एक ऊँची चट्टान पर बिना हाथ पैर हिलाये बैठना चाहिये नहीं तो मैं तुमको फिर कभी नहीं देख पाऊँगा।

अगर तुम्हारे आसपास की सब चीज़ें नीली पड़ जायें तो समझना कि मैंने उस जीव को मार दिया है पर अगर लाल हो जायें तो समझना कि उसने मुझे जीत लिया है।"

इतना कह कर वह वहाँ से चला गया। काफी देर तक लड़ाई की बहुत ज़ोर ज़ोर की आवाजें आती रहीं। लड़की एक ऊँची सी चट्टान पर बिना हाथ पैर हिलाये बैठी रही।

फिर उसने देखा कि अचानक से उसके आसपास की चीज़ें नीली पड़ने लगीं। वह बहुत खुश हो गयी क्योंकि इसका मतलब था कि उसका प्यारा बैल जीत गया था।

इस खुशी में उसने अपना पैर हिला दिया और इस तरह से उस बैल का जादू टूट गया।

हालाँकि उसको लगा कि वहाँ उसने बैल का बहुत देर तक इन्तजार किया पर वह काला बैल वापस नहीं आया।

यह हालत उसको जरूरत की हालत लगी तो उसको उन तीनों गिरियों की याद आयी जो उसको उन तीन महलों से मिली थीं जहाँ वह आते समय रात को सोयी थी।

लेकिन शायद उसको तो अभी इससे भी ज़्यादा बदकिस्मती का सामना करना पड़े सो यह सोच कर उसने उनको अभी इस्तेमाल न करने का इरादा किया।

फिर उसने वहाँ से चलने का इरादा किया और वह वहाँ से चल दी। चलते चलते वह एक शीशे के पहाड़ के पास आ गयी। उसने उस पर चढ़ने की कोशिश की पर अपनी इस कोशिश में वह कई बार फिसल गयी सो उसने उस पर चढ़ने का इरादा छोड़ दिया।

वहाँ उसको एक लोहार का घर दिखायी दे गया तो वह उसके पास गयी और उससे कहा कि वह उस शीशे के पहाड़ पर चढ़ना चाहती थी सो उसे लोहे के जूते चाहिये थे।

लोहार ने उससे उनकी कीमत माँगी कि वह उसको ये जूते बना कर तो दे देगा पर उसको उसके साथ सात महीने और सात दिन काम करना पड़ेगा।

सो वह उस लोहार के साथ सात महीने और सात दिन काम करती रही। इस बीच लोहार ने लड़की को बताया कि वह उन जूतों को पहन कर उस पहाड़ी पर चढ़ तो जायेगी पर वहाँ जा कर उसको ट्रौल[37] का देश मिलेगा।

खैर लड़की ने अपने लोहे के जूते पहने और उस शीशे की पहाड़ी पर चढ़ने के लिये चल दी। लोहार ठीक कह रहा था वहाँ पहुँच कर वह ट्रौल के देश में आ पहुँची थी।

वहाँ आ कर उसने सुना कि वहाँ कोई मुकाबला होने वाला था। वहाँ कोई एक बहुत ही शानदार नाइट था जिसकी कमीज पर खून के धब्बे लग गये थे और वह शादी इसलिये नहीं कर पा रहा था क्योंकि कोई भी ट्रौल लड़की उसकी कमीज से खून के वे धब्बे नहीं छुड़ा पा रही थी।

जब ट्रौल लड़कियाँ नाइट की उस कमीज के खून धब्बों को साफ कर रही थीं तो वे उनको इतनी ज़ोर ज़ोर से मल रही थीं कि उनके बालों वाले शरीर और उनकी लाल आँखें खूब चमक रहीं थीं। पर वह खून के धब्बे छूटने पर नहीं आ रहे थे।

---

[37] A troll is a supernatural being in Norse mythology and Scandinavian folklore. In origin, troll may have been a negative being in Norse mythology. Beings described as trolls dwell in isolated rocks, mountains, or caves, live together in small family units, and are rarely helpful to human beings.

इस लड़की ने भी उस मुकाबले में हिस्सा लेने की प्रार्थना की तो उसको भी इजाज़त मिल गयी। जैसे ही उसने उस कमीज को नदी के पानी में डुबोया तो वह कमीज तो बिल्कुल साफ हो गयी।

पर तभी एक ट्रौल राजकुमारी ने उसके हाथ से वह कमीज छीन ली और उसे नाइट को देने के लिये दौड़ गयी। वहाँ जा कर उसने नाइट को बताया कि उसकी कमीज तो उसी ने धो कर साफ की है। शर्त के अनुसार उस ट्रौल राजकुमारी की शादी उस नाइट से पक्की हो गयी।

अब लड़की ने अपना पहली गिरी तोड़ी तो उसमें तो बहुत सारे जवाहरात भरे हुए थे। लड़की को पता था कि ट्रौल कितने लालची होते हैं सो उसने ट्रौल राजकुमारी से एक सौदा किया।

उसने उससे कहा कि अगर वह अपनी शादी एक दिन देर से करेगी और उस रात वह उसको नाइट के कमरे में सोने देगी तो वह उसको एक मुट्ठी भर कर जवाहरात देगी।

राजकुमारी मान गयी और उसने अपनी शादी एक दिन आगे कर दी। उस रात उसने लड़की को भी नाइट के कमरे में सोने दिया। पर राजकुमारी ने नाइट को कोई ऐसी दवा पिला दी जिससे वह नाइट रात भर सोता रहा।

लड़की सारी रात उसके पास बैठ कर गाती रही —

मैं तुम्हारे लिये लोहार के पास काम करती रही
मैं तुम्हारे लिये इस शीशे की पहाड़ी पर चढ़ी

मैंने तुम्हारे लिये तुम्हारे खून के धब्बे वाले कपड़े धोये
क्या तुम मेरे लिय जागोगे नहीं और मेरी तरफ देखोगे नहीं

पर नाइट नहीं जागा। वह सुबह को ऐसे ही वहाँ से वापस आ गयी। अगले दिन उस लड़की ने अपनी दूसरी गिरी तोड़ी तो इस गिरी में भी बहुत सारे जवाहरात भरे थे पर ये पहले जवाहरातों से कहीं ज़्यादा चमकीले थे।

जब उसने ये जवाहरात राजकुमारी को दिखाये तो वह इनको लेने से अपने आपको रोक नहीं सकी। सो उसने राजकुमारी से फिर वही सौदा किया कि अगर वह एक दिन अपनी शादी और आगे कर दे और उसको नाइट के कमरे में सोने दे तो वह उसको उन जवाहरातों में से एक मुट्ठी जवाहरात दे देगी।

राजकुमारी तैयार हो गयी और वह लड़की उस नाइट के कमरे में चली गयी। लड़की रात भर उसके लिये वही गाना गाती रही जो उसने उसके लिये पिछली रात गाया था। पर राजकुमारी ने उसके साथ पहली रात जैसा ही किया और नाइट सुबह तक सो कर ही नहीं उठा।

लड़की का दिल टूट गया। और वह दूसरे दिन भी वहाँ से ऐसे ही वापस आ गयी।

अब उसके पास तोड़ने के लिये केवल एक ही गिरी रह गयी थी। सो अगले दिन उसने वह भी तोड़ दी। वह भी जवाहरातों से

भरी हुई थी पर उस गिरी के जवाहरात पिछली दो गिरियों के जवाहरातों से कहीं ज़्यादा चमकीले थे।

जब उसने ये जवाहरात राजकुमारी को दिखाये तो वह इनको लेने के लिये तो पागल सी हो गयी अपने आपको रोक ही नहीं सकी।

यह देख कर उसने राजकुमारी से फिर वही सौदा किया कि अगर वह एक दिन अपनी शादी और आगे कर दे और उसको नाइट के कमरे में सोने दे तो वह उसको उन जवाहरातों में से एक मुट्ठी जवाहरात दे देगी।

राजकुमारी तैयार हो गयी और उस लड़की ने उसको जवाहरात दे दिये। राजकुमारी सारा दिन उन जवाहरातों को अपने हाथ में उलट पलट कर खेलती रही और खुशी से हाथ मलती रही।

उस खुशी में उसको यह सुनायी ही नहीं पड़ा कि उसके महल की दासियाँ उस लड़की की सुन्दरता के बारे में बात कर रही थीं जो चाँदनी में नाइट के लिये दुखभरा गीत गा रही थी। और न उसको यही पता चला कि नाइट ने उन दासियों की बात सुन ली है।

सो इस रात नाइट ने राजकुमारी की दी हुई दवा को पीने का केवल बहाना किया। उसने वह सारी दवा खिड़की से बाहर फेंक दी।

रात को जैसे ही लड़की नाइट के कमरे में गयी तो नाइट ने उसको तुरन्त ही पहचान लिया और उसको गले लगा लिया। बस

बैल का जादू टूट गया और अब वह एक सुन्दर राजकुमार बन गया।

दोनों सारे सोते हुए ट्रौल को सोता छोड़ कर एक साथ उस शीशे की पहाड़ी से चुपचाप नीचे उतर आये और उस जगह से दूर अपने महल भाग गये और ज़िन्दगी भर शान्ति से खुशी से रहे।

8 सफेद भेड़िया[38]

एक बार की बात है कि एक राजा और रानी थे। उनके तीन बेटियाँ थीं जो एक से बढ़ कर एक सुन्दर थीं। पर उन सबमें सुन्दर थी उनकी सबसे छोटी बेटी।

एक बार ऐसा हुआ कि राजा को किसी काम से अपने राज्य में ही दूर बाहर जाना पड़ा। उसके जाने से पहले उसकी छोटी बेटी ने उससे वायदा लिया कि वह उसके लिये जंगली फूलों का एक रिथ[39] या पुष्पांजलि ले कर आयेगा।

जब राजा महल लौट रहा था तो उसने सोचा कि वह केवल अपनी छोटी बेटी के लिये ही नहीं बल्कि अपनी तीनों बेटियों के लिये कुछ न कुछ ले कर जायेगा।

सा पहले वह एक जौहरी की दूकान में गया। वहाँ उसने एक बहुत सुन्दर हार अपनी सबसे बड़ी बेटी के लिये खरीदा। फिर वह एक कपड़े की दूकान पर गया जहाँ से उसने अपनी दूसरी बेटी के लिये एक सोने चाँदी के तारों से कढ़ी हुई एक पोशाक खरीदी।

---

[38] The White Wolf – a folktale from Europe. Taken from the Book "The Grey Fairy Book". Edited by Andrew Lang. NY: Dover. 1967. Originally published in 1900. Taken from the Web Site: https://fairytalez.com/the-white-wolf/

[39] Wreath – flowers arranged in a circle to offer on the grave or to hang on the front door of the house. See its picture above

पर उसको किसी भी फूलों की दूकान में अपनी छोटी बेटी के लिये जंगली फूलों की पुष्पांजलि नहीं मिली जो उसने मँगवायी थी। सो वह घर उसे बिना लिये ही लौट पड़ा।

रास्ते में एक घना जंगल पड़ता था। जब वह अपने महल से अभी भी चार मील दूर था कि उसको सड़क के किनारे एक सफेद भेड़िया बैठा दिखायी दे गया। और लो उसके सिर पर जंगली फूलों की एक रिथ भी रखी हुई थी।

राजा ने अपने गाड़ीवान से गाड़ी से उतर कर सफेद भेड़िये के सिर से रिथ लाने के लिये कहा। भेड़िये ने राजा का यह हुक्म सुन लिया तो वह बोला — "मेरे राजा मेरे मालिक। मैं आपको यह रिथ तो ले लेने दूँगा पर मुझे इसके बदले में कुछ चाहिये।"

राजा बोला — "क्या चाहिये तुम्हें? मैं तुम्हें इसके बदले में कितना भी खजाना दूँगा।"

भेड़िया बोला — "मुझे आपका बहुत सारा खजाना नहीं चाहिये। जो भी आपको अपने किले तक के रास्ते में पहली ज़िन्दा चीज़ मिल जाये बस मुझे वह चाहिये। मैं तीन दिन बाद आऊँगा और आ कर उसे ले जाऊँगा।"

राजा ने सोचा "अभी तो मुझे बहुत दूर जाना है। मुझे यकीन है कि मुझे रास्ते में कोई न कोई जंगली जानवर या चिड़िया मिल जायेगी सो मैं इससे यह वायदा कर लेता हूँ।"

राजा ने उससे इस बात का वायदा कर लिया और वह रिथ ले कर आगे चल दिया। पर इत्तफाक की बात कि महल तक के रास्ते में उसको कोई ज़िन्दा चीज़ नहीं मिली। जब वह महल के दरवाजे में घुसा तो उसकी सबसे छोटी बेटी उसका इन्तजार कर रही थी।

अपने वायदे को याद कर कर के उस शाम राजा बहुत उदास रहा। जब उसने यह बात रानी को बतायी कि उसके साथ उस दिन क्या हुआ था तो रानी तो बहुत ज़ोर से रो पड़ी।

जब छोटी राजकुमारी ने देखा कि उसके माता पिता दोनों उदास है तो उसने उनसे पूछा कि क्या बात है वे दोनों क्यों उदास हैं और क्यों रो रहे हैं तो पिता ने बताया कि वह उसके जंगली फूलों के रिथ की क्या कीमत दे कर आया है जो वह उसके लिये ले कर आया है। अब तीन दिन में वह भेड़िया यहाँ आयेगा और उसको ले जायेगा और फिर वे उसको कभी नहीं देख पायेंगे।

पर रानी सोचती रही सोचती रही और फिर उसे एक तरकीब सूझी।

महल में राजकुमारी की उम्र की एक नौकरानी थी। रानी ने उसको बहुत अच्छी तरह सजाया अच्छे कपड़े पहनाये और भेड़िये को उसी को देने का इरादा किया। उन्होंने सोचा कि भेड़िया को इस बात का पता ही नहीं चलेगा कि कौन कौन है।

तीसरे दिन भेड़िया महल के आँगन में आया और फिर सीढ़ियाँ चढ़ कर ऊपर उस कमरे में आया जहाँ राजा और रानी बैठे हुए

थे। वह आ कर राजा से बोला — "मैं आपका वायदा पूरा करने आया हूँ आप मुझे अपनी सबसे छोटी बेटी दे दें।"

यह सुन कर उन्होंने अपनी तरकीब के अनुसार नौकरानी को उसको दे दिया। भेड़िये ने उससे कहा — "तुम मेरी पीठ पर चढ़ जाओ और मैं तुमको अपने महल लिये चलता हूँ।" यह कह कर उसने नौकरानी को अपनी पीठ पर बिठा लिया और वहाँ से चल पड़ा।

जब वे जंगल में उस जगह पहुँचे जहाँ राजा भेड़िये से मिला था और जहाँ भेड़िये ने राजा को जंगली फूलों का रिथ दिया था वहाँ आ कर वे रुक गये और उसने उस लड़की से अपनी पीठ पर से उतर जाने के लिये कहा ताकि वे कुछ देर आराम कर सकें।

लड़की वहाँ उतर गयी और वहीं सड़क के किनारे बैठ गयी। भेड़िया बोला — "अगर यह जंगल तुम्हारे पिता का होता तो वह इस जंगल का क्या करते।"

लड़की बोली — "मेरे पिता तो गरीब आदमी हैं। वह तो इसके पेड़ों को काट डालते उनके तख्ते बनाते और फिर उनको बाजार में बेच देते। फिर हम कभी गरीब नहीं रहते और हमारे पास हमेशा ही खाने के लिये होता।"

इस जवाब से भेड़िये को पता चल गया कि वह असली राजकुमारी को ले कर नहीं आया है। उसने नौकरानी को अपनी पीठ पर बिठाया और दोबारा से महल की तरफ चल दिया।

वहाँ जा कर वह बहुत गुस्से से ऊपर चढ़ कर राजा के कमरे में गया और बोला — "मुझे असली राजकुमारी दीजिये। अगर आप मुझे फिर से धोखा देंगे तो मैं आपके महल को ऐसे तूफानों में घेर दूँगा कि आपके महल की सारी दीवारें गिर जायेंगी और आप उसके खंडहर में दफ़न हो जायेंगे।"

यह सुन कर राजा और रानी दोनों रो पड़े। पर अब उनको पता चल गया था कि इससे बचने का कोई तरीका नहीं था सो उन्होंने अपनी सबसे छोटी बेटी को बुलाया और उससे कहा — "हमारी प्यारी बेटी। अब तुम्हें इस सफेद भेड़िये के साथ जाना ही पड़ेगा क्योंकि मैंने तुम्हें उसे देने का वायदा किया है और मुझे अपना वायदा निभाना ही चाहिये।"

राजकुमारी अपना घर छोड़ने के लिये तैयार हो गयी। पहले वह अपने कमरे से अपना जंगली फूलों वाला रिंग लाने गयी और उसको वह अपने साथ ही ले गयी। भेड़िये ने उसे अपनी पीठ पर बिठाया और उसे ले चला।

लेकिन जब वे उस जगह आये जहाँ भेड़िये ने नौकरानी के साथ आराम किया था वहीं उसने राजकुमारी से भी अपनी पीठ से उतरने के लिये कहा और कहा कि वह वहाँ सड़क के किनारे बैठ कर कुछ आराम कर ले।

फिर वह राजकुमारी से बोला — "अगर यह जंगल तुम्हारे पिता का होता तो वह इसका क्या करते।"

राजकुमारी बोली — “मेरे पिता यहाँ इस जंगल के पेड़ कटवा कर बहुत सुन्दर बागीचे बनवा देते और फिर वह और उनके दरबारी लोग गरमी के मौसम में यहाँ आ कर आनन्द करते।”

यह जवाब सुन कर भेड़िये ने मन ही मन सोचा कि यह असली राजकुमारी है। फिर वह ज़ोर से बोला — “आओ मेरी पीठ पर चढ़ जाओ अब हम अपने किले को चलते हैं।”

जब वह उसकी पीठ पर बैठ गयी तो वह उसको ले कर जंगल में से हो कर चल दिया। वह भागता गया भागता गया जब तक कि वह एक बहुत ही शानदार ऑगन में नहीं आ गया जिसके बहुत बड़े बड़े फाटक थे।

राजकुमारी उसको देखते ही बोली — “ओह यह कितना सुन्दर किला है।” उस किले के फाटक खुल गये और वह भेड़िये की पीठ से नीचे उतरी और बोली — “काश मैं अपने माता पिता से इतनी ज़्यादा दूरी पर न होती।”

भेड़िया बोला — “एक साल हो जाने दो तब हम तुम्हारे माता पिता के पास चलेंगे।”

यह कहने के साथ ही राजकुमारी ने देखा कि उसकी सफेद बालों वाली खाल नीचे खिसक गयी। उसने देखा कि वह तो भेड़िया बिल्कुल भी नहीं था। बल्कि वहाँ तो एक बहुत सुन्दर नौजवान खड़ा हुआ था लम्बा और राजकुमार जैसा। उसने उसका हाथ पकड़ा और किले की सीढ़ियों से उसे ऊपर ले गया।

छह महीने बाद एक दिन वह उसके कमरे में आया और उससे बोला — “प्रिये चलो शादी के लिये तैयार हो जाओ। तुम्हारी सबसे बड़ी बहिन की शादी हो रही है और मैं तुम्हें तुम्हारे पिता के महल ले जाऊँगा। जब शादी खत्म हो जायेगी तो मैं आ कर तुम्हें घर ले आऊँगा।

मैं फाटक के बाहर सीटी बजाऊँगा और जब तुम उसे सुन लो तो अपने माता पिता किसी के भी कुछ भी कहने पर ध्यान न देना अपना नाच या खाना जो कुछ भी तुम कर रही हो वह छोड़ देना और तुरन्त ही मेरे पास चली आना।

क्योंकि अगर मैं तुम्हारे बिना गया तो फिर तुमको जंगल में से हो कर हमारे घर का रास्ता कभी नहीं मिलेगा।”

जब राजकुमारी चलने के लिये तैयार हुई तो उसने देखा कि उसने अपनी सफेद भेड़िये वाली खाल फिर से पहन ली है और फिर से वह भेड़िये में बदल गया है।

उसने उसे अपनी पीठ पर बिठाया और उसके पिता के घर चल दिया। उसने उसको वहाँ छोड़ा और अकेले ही वहाँ से वापस अपने महल आ गया। पर शाम को वह फिर वहाँ पहुँच गया। महल के बाहर खड़े हो कर उसने एक लम्बी ज़ोर की सीटी दी।

राजकुमारी उस समय नाच रही थी पर उसने उसकी सीटी की आवाज सुन ली सो वह तुरन्त ही उसके पास भागी गयी। उसने भी उसको अपनी पीठ पर बिठाया और अपने किले ले गया।

छह महीने बाद राजकुमार फिर उसके कमरे में सफेद भेड़िये के रूप में आया और उससे कहा कि अब वह अपनी दूसरी बहिन की शादी के लिये तैयार हो जाये। उसने कहा "मैं तुम्हें आज ही तुम्हारे पिता के घर ले जाऊँगा और हम वहाँ कल सुबह तक एक साथ रहेंगे।"

सो वे दोनों शादी में गये। शाम को जब वे अकेले थे तो उसने अपनी सफेद बालों वाली खाल निकाल दी और भेड़िये से राजकुमार के रूप में आ गया।

उनको पता नहीं था कि राजकुमारी की माँ वहीं कहीं उसी कमरे में छिपी खड़ी थी। जब उसने राजकुमार की सफेद खाल नीचे जमीन पर पड़ी देखी तो वह चुपके से कमरे में से बाहर खिसक गयी और अपनी एक दासी को यह कह कर उस कमरे में भेजा कि वह बालों वाली खाल वहाँ से ला कर आग में जला दे।

जैसे ही उस खाल ने आग छुई तो एक बहुत भयानक बादल की गरज सुनायी पड़ी और राजकुमार वहाँ से हवा की तरह से गायब हो गया और अपने महल अकेला ही लौट आया।

यह देख कर राजकुमारी का तो दिल ही टूट गया। वह तो रात भर रोती ही रही। अगले दिन सबह वह राजकुमार के महल का रास्ता खोजने के लिये जंगल की तरफ चली पर वहाँ उसको कोई सड़क ही नहीं मिली जो उसे उसके घर तक ले जाती।

वह उस जंगल में चौदह दिन तक मारी मारी फिरती रही। इस बीच वह पेड़ों के नीचे सोती रही जंगली बैरीज़ और जड़ें खाती रही। आखिर वह एक छोटे से घर के पास पहुँच गयी।

उसने उस घर का दरवाजा खटखटाया तो उसने देखा कि हवा वहाँ अकेला बैठा हुआ है। उसने हवा से पूछा — "हवा क्या तुमने सफेद भेड़िये को देखा है?"

हवा बोला — "मैं तो सारा दिन सारी रात दुनियाँ भर में घूमता हूँ मैं अभी अभी घर आया हूँ पर मैंने तो उसे कहीं नहीं देखा।"

पर उसने उसको एक जोड़ी जूते दिये और उसे बताया कि उनसे वह एक कदम में एक सौ मील तय कर सकेगी। उन जूतों को पहन कर वह हवा में चली और एक तारे पर पहुँच गयी। वहाँ उसने उस तारे से पूछा कि क्या उसने सफेद भेड़िये को देखा है।

तारा बोला — "मैं तो सारी रात चमकता हूँ पर मैंने उसको कहीं नहीं देखा।" पर तारे ने भी उसको एक जोड़ी जूते दिये और कहा कि वह उनको पहन कर एक कदम में दो सौ मील चल पायेगी।

सो उसने वे जूते पहने और चाँद के पास गयी। चाँद से उसने पूछा — "तुमने कहीं सफेद भेड़िये को तो नहीं देखा?"

चाँद ने जवाब दिया — "मैं तो सारी रात आसमान में चलता रहता हूँ। मैं अभी अभी घर आया हूँ मैंने तो उसे कहीं नहीं देखा।" लेकिन उसने भी उसको एक जोड़ी जूते दिये और उससे

कहा — "लो ये जूते ले लो। इनको पहन कर तुम एक कदम में चार सौ मील चल पाओगी।"

उसने उससे वे जूते लिये और उनको पहन कर वह सूरज के पास गयी और उससे पूछा कि क्या उसने कहीं सफेद भेड़िया देखा है।

सूरज बोला — "हाँ मैंने उसे देखा है पर क्योंकि उसने सोचा कि शायद तुमने उसे छोड़ दिया है और तुम कभी वापस नहीं आओगी सो अब वह किसी दूसरी लड़की से शादी करने की तैयारी कर रहा है।

पर मैं तुम्हारी सहायता कर सकता हूँ। लो ये जूते लो इन्हें पहन कर तुम बरफ या शीशे पर भी चल पाओगी। खड़ी से खड़ी पहाड़ी पर भी चढ़ सकोगी।

और यह एक चरखा है इससे तुम काई[40] को रेशम में कात सकोगी। जब तुम यहाँ से जाओगी तो तुमको शीशे का एक पहाड़ मिलेगा। उस समय तुम अपने ये जूते पहन लेना जो मैंने तुम्हें दिये हैं उनसे तुम उस पहाड़ पर आसानी से चढ़ पाओगी। उस पहाड़ की चोटी पर सफेद भेड़िये का किला है।"

राजकुमारी ने वे जूते और चरखा लिया और शीशे के पहाड़ की तरफ चल दी। वह जल्दी ही उस शीशे के पहाड़ के पास पहुँच

[40] Translated for the word "Moss"

गयी। उस पहाड़ की चोटी पर उसको सफेद भेड़िये का किला भी दिखायी दे गया जैसा कि सूरज ने कहा था।

पर वहाँ किसी ने उसे पहचाना नहीं क्योंकि उस समय उसने एक बुढ़िया का वेश बना रखा था और अपने सिर के चारों तरफ एक शाल लपेट रखा था। महल में शादी की तैयारियाँ हो रही थीं जो अगले दिन थी।

राजकुमारी ने जो अभी भी एक बुढ़िया के वेश में थी अपना चरखा निकाला और काई को रेशम में कातने लगी। जब वह रेशम कात रही थी तो नयी दुलहिन उधर से गुजरी तो उसने देखा कि वह स्त्री काई से रेशम कात रही थी।

यह देख कर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ तो वह उससे बोली — "माँ मेरी यह इच्छा है कि इस चरखे को आप मुझे दे दें।"

बुढ़िया बोली — "मैं आपको यह चरखा तो दे दूँगी राजकुमारी जी अगर आप मुझे राजकुमार के कमरे के दरवाजे के बाहर एक चटाई पर सोने की इजाज़त दे दें।"

दुलहिन बोली "हाँ हाँ आप वहाँ सो सकती हैं।"

राजकुमारी ने अपना चरखा उसे दे दिया। उस रात अपने सिर के चारों तरफ शाल लपेटे हुए ही ताकि कोई उसे पहचाने नहीं वह राजकुमार के कमरे के बाहर एक चटाई पर सो गयी।

जब महल के सारे लोग सो गये तो उसने अपनी सारी कहानी कहनी शुरू की। हम तीन बहिनें थीं। मैं उनमें से सबसे छोटी थी

और सबसे सुन्दर थी। मेरी सगाई मेरे पिता ने एक सफेद भेड़िये से कर दी।

फिर मैं अपनी सबसे बड़ी बहिन की शादी में गयी। उसके बाद फिर मैं अपने पति के साथ अपनी दूसरी बहिन की शादी में गयी। वहाँ मेरी माँ ने सफेद भेड़िये की खाल रसोईघर की आग में जला दी। उस खाल के जलते ही वह सफेद भेड़िया वहाँ से गायब हो गया।

फिर मैं सफेद भेड़िये को ढूँढने के लिये रोती हुई जंगल में घूमती रही। वहाँ मैं हवा तारा चाँद और सूरज से मिली। उन्होंने मुझे इस महल तक पहुँचने में सहायता की।

जब सफेद भेड़िये ने यह कहानी सुनी तो उसकी समझ में आ गया कि वह उसकी पहली पत्नी थी जिसने उसे कितने खतरों और मुश्किलों के बाद ढूँढ लिया है और पा लिया है।

पर उस समय वह चुप रहा। वह अगले दिन का इन्तजार करता रहा जब बहुत दूर दूर से सारे राजा और राजकुमार उसकी शादी में आने वाले थे।

अगले दिन जब सब मेहमान आ गये और दावत के लिये बैठ गये तो वह बोला — "आप लोग मुझे सुनें मैं आप लोगों से कुछ कहना चाहता हूँ। मेरी एक समस्या है जिसको सुलझाने में आप मेरी सहायता करें। मेरे खजाने की चाभी मुझसे खो गयी थी सो मैंने एक और चाभी बनवाने का हुक्म दिया पर अब मुझे अपनी पुरानी चाभी

मिल गयी है। अब आप बतायें कि कौन सी चाभी ज़्यादा अच्छी है।"

आये हुए सब मेहमान एक साथ बोले — "यकीनन पहली वाली चाभी ज़्यादा अच्छी है।"

सफेद भेड़िया बोला — "अगर ऐसा है तो इसका मतलब यह हुआ कि मेरी पहली पत्नी मेरी दूसरी होने वाली पत्नी से ज़्यादा अच्छी है।"

कह कर उसने नयी दुलहिन को बुलवाया और उसकी शादी एक राजकुमार जो उस समय वहाँ आया हुआ था उससे कर दी।

फिर उसने अपनी पुरानी पत्नी को बुलवा कर कहा — "यह मेरी पुरानी पत्नी है।" और यह कह कर उसने उसे अपने साथ सिंहासन पर बिठा लिया।

फिर उसने कहा — "मैंने सोचा था कि यह कभी नहीं लौटेगी पर इसने मुझे हर जगह ढूँढा और अब हम लोग फिर से एक साथ हैं। अब हम कभी अलग नहीं होंगे।"

9 लँगड़ा कुत्ता[41]

एक बार की बात है कि एक राजा था। वह भी एक ऐसा ही राजा था जैसे और राजा होते हैं। उसके तीन बेटियाँ थीं। उसकी तीनों बेटियाँ एक से एक सुन्दर थी कि उनको जैसी कोई और सुन्दर लड़की मिलनी मुश्किल थी। फिर भी उनमें एक बहुत बड़ा अन्तर था।

उसकी दोनों बड़ी बेटियाँ अपने विचारों और काम करने के ढंग में बहुत जिद्दी किस्म की थीं जबकि सबसे छोटी वाली बहुत ही मीठा बोलती थी और वह दोस्त भी जल्दी बना लेती थी। इसलिये सब उसको बहुत पसन्द करते थे।

इसके अलावा वह दिन के उजाले की तरह गोरी और बरफ की तरह नाजुक थी। वह अपनी दोनों बड़ी बहिनों से कहीं ज़्यादा सुन्दर थी।

एक दिन राजा की तीनों बेटियाँ एक कमरे में बैठी बतिया रही थीं कि उनकी बातें उनके होने वाले पतियों की तरफ मुड़ गयीं। सबसे बड़ी बेटी ने कहा कि अगर वह किसी से शादी करेगी तो

---

[41] The Lame Dog – a folktale from Sweden, Europe. Taken from the Book “Swedish Fairy Book”, ed by Clara Stroebe. Frederick A Stokes Company. 1921. 28 Swedish folktales.
Adapted from the Web Site :
https://www.worldoftales.com/European_folktales/Swedish_folktale_13.html
The same story is told under the title “The Best Friend” in Denmark.

उसके सुनहरे बाल होने चाहिये और उसकी सुनहरी दाढ़ी होनी चाहिये।

दूसरी बोली — "और मेरे वाले के चाँदी जैसे बाल और चाँदी जैसी दाढ़ी होनी चाहिये।"

पर तीसरी सबसे छोटी वाली चुप रही वह कुछ नहीं बोली तो उसकी दोनों बहिनों ने उससे पूछा कि क्या उसको अपना पति नहीं चाहिये। तो वह बोली — "नहीं। पर अगर मुझे मेरा पति मिला भी तो वह जैसा भी होगा मैं उसी से सन्तुष्ट रहूँगी। चाहे वह लँगड़ा कुत्ता ही क्यों न हो।"

यह सुन कर दोनों राजकुमारियाँ हँस पड़ीं और देर तक हँसती रहीं। फिर बोलीं कि वह दिन दूर नहीं जब वह अपनी राय बदल लेगी।

पर कभी कभी कुछ लोग सच बोलते हैं पर वे जानते नहीं कि वे सच बोल रहे हैं। ऐसा ही कुछ राजा की बेटियों के साथ भी हुआ। साल पूरा होने से पहले पहले हर लड़की के लिये वैसा ही उम्मीदवार आया जैसा कि उसने चाहा था।

सुनहरे बालों और सुनहरी दाढ़ी वाला सबसे बड़ी राजकुमारी के लिये आया और उसने सबसे बड़ी राजकुमारी का हाथ माँगा। राजकुमारी ने उसको देखते ही हाँ कर दी और उसकी शादी उसके साथ हो गयी।

फिर एक चाँदी जैसे बालों और चाँदी जैसी दाढ़ी वाला राजकुमार दूसरी राजकुमारी के लिये आया और उससे शादी कर के उसको अपने घर ले गया। पर इत्तफाक की बात सबसे छोटी बेटी को सिवाय एक लँगड़े कुत्ते के किसी और ने नहीं माँगा।

और तब उसे याद आयी अपने कमरे में अपनी बहिनों के साथ की गयी बात। तब उसने अपने मन में सोचा "भगवान मेरी इस शादी में मेरी सहायता करें जो मैं अभी करने वाली हूँ।"

लेकिन उसने अपना कहा नहीं तोड़ा जो उसने एक बार कह दिया था सो कह दिया था। अपनी बहिनों की तरह उसने भी उस लँगड़े कुत्ते को अपना पति स्वीकार कर लिया।

शादी कई दिनों तक चलती रही और बहुत शानो शौकत के साथ मनायी गयी। पर जब मेहमान और दूसरे लोग गा नाच कर आनन्द कर रहे थे सबसे छोटी राजकुमारी एक जगह अकेली बैठी रो रही थी। दूसरे लोग हँस रहे थे खुश हो रहे थे और वह बैठी रो रही थी। उसके आँसू तो दूसरों को भी दुखी कर देने वाले हो रहे थे।

शादी के बाद नये शादीशुदा जोड़े अपने अपने किले के लिये विदा हुए। राजा की दोनों बड़ी बेटियाँ तो बहुत सुन्दर सजी हुई कोच में जिनके पीछे बहुत सारे लोग चल रहे थे और और भी बहुत सारे आदर के साथ विदा हुईं।

पर सबसे छोटी बेटी को तो पैदल ही जाना पड़ा क्योंकि उसके पति कुत्ते के पास न तो कोई कोच थी और न ही कोई कोच हाँकने

वाला। जब वे लोग बहुत देर तक बहुत दूर तक चल लिये तो वे एक जंगल में आ गये।

यह जंगल इतना बड़ा था कि लगता था कि कभी खत्म ही नहीं होगा लेकिन कुत्ता तो लॅगड़ाता हुआ भी उससे आगे आगे जा रहा था। राजकुमारी रोती हुई उसके पीछे पीछे जा रही थी।

जब वे इस तरह जा रहे थे तो अचानक ही राजकुमारी ने अपने सामने एक बहुत ही शानदार किला देखा जिसके चारों तरफ हरी घास का मैदान था और हरे हरे जंगल थे। यह सब कुछ देखने में बहुत अच्छा लग रहा था।

राजकुमारी उसे देख कर रुक गयी और पूछा कि यह किला किसका हो सकता है। कुत्ता बोला "यह हमारा घर है। हम लोग यहीं रहेंगे और तुम यहाँ राज करोगी जैसे भी तुम चाहो।"

यह सुन कर राजकुमारी को रोते हुए भी हॅसी आ गयी। वह जो कुछ भी वह वहाँ देख रही थी उसको देख कर अपना आश्चर्य रोकना चाह कर भी नहीं रोक सकी।

कुत्ता फिर बोला — "बस मुझे तुमसे एक विनती करनी है जो तुम वायदा करो कि तुम मुझे मना नहीं करोगी।"

राजकुमारी बोली — "और वह क्या विनती है।"

कुत्ता बोला — "तुम मुझसे वायदा करो कि जब मैं सो रहा होऊँगा तो तुम मुझे कभी नहीं देखोगी। बाकी तुम जो चाहो सो करने के लिये आजाद हो।"

राजकुमारी ने खुशी से उसकी यह विनती मानने का वायदा किया और वे उस बड़े से किले में अन्दर चले गये। वह किला जितना बाहर से शानदार लग रहा था उससे कहीं ज़्यादा अन्दर से शानदार था।

वह सोने और चाँदी से भरा हुआ था। ये कीमती धातु उस किले के हर कोने से चमक रहे थे। वहाँ सारा सामान बहुतायत में था — खाने पीने का और दूसरी किस्म का भी। जो चीज़ चाहो वह सब वहाँ थी।

राजकुमारी तो सारा दिन उस किले के एक कमरे से दूसरे कमरे में ही घूमती रही और हर दूसरा कमरा पहले वाले कमरे से ज़्यादा सुन्दर था।

जब शाम हुई तो वह सोने गयी। कुत्ता अपने बिस्तर में चला गया। तब उसने देखा कि वह कोई कुत्ता नहीं था। वह तो एक आदमी था। फिर भी वह एक शब्द भी नहीं बोली क्योंकि उसको अपना वायदा याद था और वह अपने पति की इच्छा के खिलाफ कुछ करना नहीं चाह रही थी।

इस तरह से कुछ समय बीत गया। राजकुमारी उस सुन्दर शानदार किले में रहती थी और उसकी जो इच्छा होती थी वह उसको मिल जाता था।

पर रोज सुबह होते ही वह कुत्ता वहाँ से भाग जाता था और शाम ढले सूरज छिप जाने के बाद ही वापस लौटता था। जब वह

घर लौट आता था तब वह इतना दयालु हो जाता था कि अगर कोई आदमी उससे आधा भी दयालु हो तो बहुत बड़ी बात है।

धीरे धीरे राजकुमारी को उससे प्यार होने लगा। उस समय वह बिल्कुल ही भूल गयी थी कि वह केवल एक लॅगड़ा कुत्ता है। जैसी कि कहावत है कि "प्यार अन्धा होता है।" फिर भी उसको लगता था कि समय बहुत धीरे धीरे गुजर रहा था क्योंकि वह घर में बिल्कुल अकेली थी।

वह अक्सर अपनी बहिनों से मिलने के बारे में सोचती कि वह यह जाने कि वे कैसी हैं। एक दिन उसने यह बात अपने पति से कही और उससे उनसे मिलने की इजाज़त मॉगी।

जैसे ही कुत्ते ने उसकी यह इच्छा सुनी तो उसने तुरन्त ही उसको उनके पास जाने की इजाज़त दे दी। बल्कि वह उसके साथ कुछ दूर तक भी गया ताकि वह उसको जंगल से बाहर जाने का रास्ता दिखा सके।

जब राजा की तीनों बेटियॉ आपस में मिलीं तो वे बहुत खुश थीं। एक दूसरे से उन्होंने बहुत सारे नये पुराने सवाल पूछे। शादी पर भी बात हुई।

सबसे बड़ी राजकुमारी ने कहा — "मेरी भी क्या बेवकूफी थी कि मैंने सुनहरे बाल वाला और सुनहरी दाढ़ी वाला पति मॉगा क्योंकि मेरा वाला तो सबसे बुरे ट्रौल से भी ज़्यादा बुरा है। जबसे

मेरी शादी हुई है तबसे मेरा एक दिन भी उसके साथ ख़ुशी से नहीं गुजरा।"

दूसरी राजकुमारी बोली — "मैं भी कोई बहुत ज़्यादा अच्छी नहीं हूँ क्योंकि हालाँकि मेरे पास चाँदी जैसे बाल वाला और चाँदी जैसी दाढ़ी वाला पति है फिर भी वह मुझे इतनी नफरत करता है कि वह मेरे साथ एक घंटा भी ख़ुशी से नहीं गुजार सकता।"

इसके बाद उसकी बहिनों ने अपनी छोटी बहिन की तरफ देख कर पूछा कि उसका कैसा चल रहा है।

छोटी राजकुमारी बोली — "मैं कोई शिकायत नहीं कर सकती क्योंकि मुझे तो केवल एक लँगड़ा कुत्ता ही मिला है। और वह तो इतना प्यारा साथी है और मेरे प्रति इतना दयालु है कि उससे अच्छा पति तो मिलना मुश्किल है।"

उसकी बहिनें तो यह सुन कर बड़े आश्चर्य में पड़ गयीं। इस पर तो उन्होंने उससे सवालों की बौछार लगा दी। छोटी बहिन ने भी उनके सब सवालों के जवाब ईमानदारी से साफ साफ दिये।

जब उन लोगों ने यह सुना कि वह इतने शानदार ढंग से रह रही थी तो वे उससे जलने लगीं क्योंकि एक लँगड़े कुत्ते के पति मिलने के बावजूद वह इतनी शान से रह रही थी।

फिर उन्होंने उससे यह भी जानने की कोशिश की क्या वह अपने उसी छोटे से पति के बारे में बात कर रही थी जिसकी वह शिकायत नहीं कर सकती थी।

छोटी बहिन बोली — "नहीं। मैं तो अपने पति की उनके दयालु होने और उनके अच्छे व्यवहार की वजह से ही केवल तारीफ कर सकती हूँ। पर एक चीज़ की कमी मुझे पूरी तरीके से खुश नहीं रख पा रही है।"

उसकी दोनों बहिनें एक साथ बोलीं — "वह क्या है। वह क्या है।"

छोटी राजकुमारी बोली — "हर रात जब वह घर आते हैं तो एक आदमी के रूप में बदल जाते हैं। और मुझे यह बहुत अफसोस के साथ कहना पड़ रहा है कि मैं यह कभी नहीं देख पाऊँगी कि वह कैसे लगते हैं।"

उसकी दोनों बहिनों ने फिर एक आवाज में उस कुत्ते को बुरा भला कहना शुरू कर दिया क्योंकि उसने अपना एक भेद अपनी पत्नी से छिपाया था।

और क्योंकि उसकी बहिनें उसके बारे में लगातार उससे कुछ न कुछ कहती रहीं तो एक बार फिर उसकी उत्सुकता जाग गयी। वह अपने पति से किया गया वायदा भूल गयी और उसने उनसे पूछा कि वह उसे बिना बताये कैसे देख सकती है।

उसकी सबसे बड़ी बहिन बोली — "अरे यह कोई मुश्किल काम नहीं है। एक छोटा सा लैम्प लो जिसको तुम ठीक से छिपा कर रखना। फिर बस तुमको रात को उठना है और जब वह सोया हुआ

हो तो इसको जला कर उसकी रोशनी में देख लेना कि उसकी असली शक्ल क्या है।”

राजा की छोटी बेटी को यह सलाह ठीक लगी। उसने उससे लैम्प लिया अपने कपड़ों में छिपा लिया और अपनी बहिनों से वायदा किया कि वैसा ही करेगी जैसा उन्होंने उससे करने के लिये कहा है।

जब वहाँ से उसका चलने का समय आया तो वह अपने सुन्दर किले की तरफ चली गयी।

उसका दिन किसी और दिन की तरह से गुजर गया। जब शाम हो गयी तो कुत्ता अपने बिस्तर पर सोने चला गया। राजकुमारी की उत्सुकता जागने लगी और बड़ी मुश्किल से वह कुत्ते के सोने का इन्तजार करने लगी।

जब उसने यह यकीन कर लिया कि वह गहरी नींद सो गया तो उसने अपना लैम्प जलाया और उसको ले कर कुत्ते के पास गयी। पर उसका आश्चर्य तो कोई बखान ही नहीं कर सकता जब उसने लैम्प की रोशनी कुत्ते के बिस्तर पर डाली तो देखा कि वहाँ तो कोई लँगड़ा कुत्ता नहीं था।

वहाँ तो इतना सुन्दर नौजवान था जैसा कि उसने पहले कभी देखा नहीं था। वह अपने आपको उसको देखते रहने से न रोक सकी और रात भर उसके तकिये के पास बैठी उसको देखती रही।

वह उसकी तरफ जितना ज़्यादा देखती थी वह उसको उतना ही ज़्यादा सुन्दर नजर आता था। उसको देखते देखते तो वह सब कुछ

भूल गयी। आखिर सुबह होने को हुई और जब सितारे धुँधले पड़ने शुरू हुए तो वह नौजवान बेचैन होने लगा और जागने लगा।

राजकुमारी यह देख कर डर गयी। उसने अपना लैम्प बुझा दिया और अपने बिस्तर में जा कर लेट गयी। नौजवान ने सोचा कि राजकुमारी सोयी हुई है सो उसने उसको जगाना नहीं चाहा। वह चुपचाप उठा अपने आपको कुत्ते में बदला और वहाँ से चला गया। फिर वह दिन भर दिखायी नहीं दिया।

जब शाम हुई तो देर हो चुकी थी। सब कुछ वैसा ही हुआ जैसा रोज होता था। कुत्ता शाम को जंगल से देर से घर लौटा। वह बहुत थका हुआ था सो आते ही सो गया।

जैसे ही वह सो गया राजकुमारी फिर से उठी उसने फिर से अपना लैम्प जलाया और उसको देखने के लिये उसके पास आ बैठी। जब उसने लैम्प की रोशनी उसके बिस्तर पर डाली तो उसको लगा कि वह तो उस दिन पहले दिन से भी ज़्यादा सुन्दर लग रहा था। और जितनी देर तक वह उसको देखती रही वह उसे उतना ही ज़्यादा सुन्दर दिखायी देता रहा।

यहाँ तक कि वह उसके प्यार में हँस पड़ी और रो पड़ी। वह उसके ऊपर से अपनी आँखें ही नहीं हटा पा रही थी। सारी रात वह उसके तकिये पर अपना चेहरा झुकाये हुए उसको देखती बैठी रही। वह अपना वायदा और सभी कुछ भूल गयी थी।

अगली सुबह सूरज की पहली किरन के साथ नौजवान फिर कुलमुलाया और जागा। राजकुमारी फिर डर गयी और जल्दी से अपना लैम्प बुझा कर फिर से अपने बिस्तर पर आ लेटी।

नौजवान ने उठ कर देखा तो उसको लगा कि राजकुमारी सो रही है सो उसने उसे जगाना नहीं चाहा। वह चुपचाप उठा अपने आपको कुत्ते में बदला और दिन भर के लिये बाहर चला गया।

रात को जब कुत्ता जंगल से घर लौटा तो रोज की तरह फिर देर हो गयी थी। कुत्ता थका था सो आते ही सो गया।

राजकुमारी उस दिन भी अपनी उत्सुकता न रोक पायी। जैसे ही कुत्ता सो गया राजकुमारी चुपचाप उठी उसने अपना लैम्प जलाया और फिर वह उसके तकिये के पास उसको देखने के लिये जा बैठी।

जब रोशनी उस नौजवान के चेहरे पर पड़ी तो वह उसको पहले से और भी ज़्यादा सुन्दर लगा। और इतना सुन्दर लगा कि उसका दिल बहुत ज़ोर ज़ोर से धड़कने लगा। उसकी तरफ देख कर वह दुनियाँ की हर चीज़ भूल गयी।

वह उसके चेहरे से फिर से अपनी नजरें नहीं हटा पा रही थी। वह उसके तकिये पर नजर गड़ाये सारी रात उसके पास ही बैठी रही। सुबह होने पर नौजवान फिर कुलमुलाया और जागा। राजकुमारी फिर डर गयी।

उसको पता ही नहीं चला कि कब रात गुजर गयी और कब सुबह हो गयी। नौजवान के जागने से तुरन्त ही उसने लैम्प बुझाया और अपने बिस्तर की तरफ जाने लगी। इस जल्दी में उसका हाथ कॉप गया और और लैम्प के तेल की एक बूँद नौजवान के चेहरे पर गिर पड़ी वह जाग गया।

जब उसने देखा कि राजकुमारी ने क्या किया है वह डर के मारे कूद पड़ा और तुरन्त ही एक लॅगड़े कुत्ते में बदल गया। लॅगड़ाता हुआ वह जंगल की तरफ भाग गया। राजकुमारी यह देख कर इतनी दुखी हुई कि बस बेहोश होते होते बची।

वह अपने हाथों को मलते हुए और ज़ोर ज़ोर से रोते हुए उसको वापस आने के लिये पुकारती हुई उसके पीछे भाग ली पर वह वापस नहीं आया।

अपने पति को ढूँढने के लिये राजकुमारी पहाड़ियों के ऊपर और घाटियों में हो कर घूमती रही। बहुत सारे रास्ते उसके लिये नये थे। उसकी ऑखों से इतने सारे ऑसू बह गये थे कि वे किसी भी पत्थर को हिलाने के लिये काफी थे।

पर कुत्ता तो चला गया था और वह अब कहीं दिखायी ही नहीं दे रहा था। उसने उसे उत्तर में ढूँढा दक्षिण में ढूँढा पर जब उसने देखा कि वह उसको कहीं नहीं ढूँढ पा रही है तो उसने सोचा कि वह अब अपने किले को लौट चलती है।

पर यहाँ भी उसकी किस्मत ने साथ नहीं दिया। उसको अपना किला कहीं दिखायी ही नहीं दिया। जहाँ भी वह उसे ढूँढने जाती रही उसे केवल काला जंगल ही दिखायी देता रहा।

उसे लगा सारी दुनियाँ ने उसे छोड़ दिया है सो वह एक पत्थर पर बैठ गयी और ज़ोर ज़ोर से रोने लगी। उसने सोचा कि अपने पति के बिना रहने से तो अच्छा है कि वह मर जाये।

कि तभी पत्थर के नीचे से एक मेंढक फुदकता हुआ बाहर आ गया। वह बोला — "प्यारी लड़की। तुम यहाँ अकेली बैठी क्यों रोती हो?"

राजकुमारी बोली — "मेरी तो किस्मत ही खराब है। अब मैं कभी खुश नहीं रह सकती। पहले तो मैंने अपना प्यार खो दिया और अब मुझे अपने किले जाने का भी रास्ता नहीं मिल रहा। इससे या तो मैं यहीं भूख से मर जाऊँगी और या फिर मुझे यहाँ कोई जंगली जानवर खा जायेगा।"

मेंढक बोला — "ओ। अगर तुम्हें केवल यही परेशानी है तो मैं तुम्हारी सहायता कर सकता हूँ। अगर तुम मेरी सबसे प्यारी दोस्त होने का वायदा करो तो मैं तुम्हें रास्ता दिखा सकता हूँ।"

पर राजकुमारी यह करना नहीं चाह रही थी सो वह बोली — "तुम मुझसे इसके सिवाय जो चाहे माँग लो। मैंने अपने लँगड़े कुत्ते के अलावा किसी और से कभी इतना प्यार किया ही नहीं। और

जितने दिन भी मैं ज़िन्दा रहूँगी उसके सिवा किसी और से उतना प्यार करूँगी भी नहीं।"

यह कह कर वह खड़ी हो गयी और ज़ोर ज़ोर से रोने लगी। फिर वह अपने रास्ते चल दी। पर मेंढक ने उसकी ओर एक दोस्त की तरह से देखा। वह मन ही मन मुस्कुराया और एक बार फिर से पत्थर के नीचे खिसक गया।

जब राजकुमारी इधर उधर काफी भटक ली और उसे अँधेरे जंगल के सिवा और कुछ दिखायी नहीं दिया तो वह बहुत थक गयी। वह अपने हाथों में अपनी ठोड़ी टिका कर फिर एक पत्थर पर बैठ गयी और अपनी मौत की प्रार्थना करने लगी। क्योंकि उसको लग रहा था कि उसका पति तो तो अब उसको मिलने वाला था नहीं सो अब उसके पास मौत ही एक रास्ता रह गया था।

कि अचानक उसने पास की झाड़ी में किसी की सरसराहट की आवाज सुनी। उसने उधर देखा तो देखा कि बहुत ही बड़ा भूरे रंग का एक भेड़िया उसकी तरफ चला आ रहा है। उसको देख कर वह तो बहुत डर गयी क्योंकि उसको देख कर तो सबसे पहले उसके दिमाग में यही आया कि वह उसको खाने आ रहा है।

पर भेड़िये ने ऐसा कुछ नहीं किया। वह उसके पास तक आया अपनी पूँछ हिलायी और उससे पूछा — "ओ सुन्दर लड़की तुम यहाँ अकेली बैठी इतनी ज़ोर ज़ोर से क्यों रो रही हो?"

राजकुमारी बोली — "मैं अपनी बदकिस्मती पर रो रही हूँ और आगे भी मैं कभी खुश नहीं हो पाऊँगी। और अब मुझे अपने किले का भी रास्ता कहीं दिखायी नहीं दे रहा तो अब या तो में भूख से मर जाऊँगी और या फिर मुझे कोई जंगली जानवर खा जायेगा।"

भेड़िया बोला — "अरे अगर इतनी सी बात है तो मैं तुम्हारी सहायता कर सकता हूँ। तुम मुझे अपना सबसे अच्छा दोस्त बना लो तो फिर मैं तुम्हें रास्ता दिखा दूँगा।"

यह शर्त राजकुमारी को कुछ जँची नहीं। उसने भेड़िये को जवाब दिया — "तुम मुझसे कोई और चीज़ माँग लो जो भी तुम्हारी इच्छा हो पर मैंने किसी और को इतना ज़्यादा प्यार नहीं किया जितना मैं अपने लँगड़े कुत्ते से करती हूँ। और उससे ज़्यादा प्यार मैं किसी और को कर भी नहीं सकती।"

यह कह कर वह उठ गयी और फिर ज़ोर ज़ोर से रोने लगी। फिर वह अपने रास्ते चल दी। पर भेड़िये ने भी उसको प्यार से देखा और अपने मन में हँसता हुआ वहाँ से जल्दी से भाग गया।

उसके बाद राजकुमारी फिर से जंगल में इधर उधर घूमने लगी। वह बहुत देर तक घूमती रही। घूमते घूमते वह फिर थक गयी तो वह और आगे नहीं जा सकी और वहीं पास में पड़े एक पत्थर पर बैठ गयी।

वह फिर अपने हाथ मलने लगी और मौत की इच्छा करने लगी क्योंकि वह अपने लँगड़े कुत्ते के बिना बिल्कुल नहीं रह सकती थी।

उसी समय उसने एक दहाड़ सुनी जिसको सुन कर वह काँप गयी। तभी उसने देखा कि एक बहुत बड़ा शेर उसकी तरफ चला आ रहा था। उसको देख कर तो वह यह सोचे बिना न रह सकी कि वह शेर अब उसे खा जायेगा।

पर ऐसा कुछ नहीं हुआ। वह शेर तो भारी जंजीरों के बोझ से खुद ही झुका जा रहा था। उनके बोझ से उससे चला भी नहीं जा रहा था। जब वह चलता था तो उसकी वे सारी जंजीरें बजती थीं।

पास आ कर वह उससे बोला — "ओ सुन्दर लड़की तुम यहाँ अकेली बैठी क्यों रो रही हो?"

राजकुमारी रोते हुए बोली — "मैं अपनी बदकिस्मती पर रो रही हूँ और आगे भी मैं कभी खुश नहीं हो पाऊँगी। और अब मुझे अपने किले का भी रास्ता कहीं दिखायी नहीं दे रहा तो अब या तो मैं भूख से मर जाऊँगी और या फिर मुझे कोई जंगली जानवर खा जायेगा।"

शेर बोला — "अरे अगर इतनी सी बात है तो मैं तुम्हारी सहायता कर सकता हूँ। तुम मेरी ये जंजीरें खोल दो मुझे अपना सबसे अच्छा दोस्त बना लो तो फिर मैं तुम्हें तुम्हारे किले का रास्ता दिखा दूँगा।"

राजकुमारी उसको देख कर इतनी डर गयी थी कि वह शेर की बात पर कुछ ध्यान ही नहीं दे सकी उसके पास जाना तो दूर। तभी उसने जंगल में से एक बड़ी साफ आवाज आती सुनी। वह

नाइटिन्गेल चिड़िया की आवाज थी जो एक पेड़ की एक शाख पर बैठी गा रही थी "ओ लड़की इसकी जंजीरें खोल दो।"

यह सुन कर उसे शेर पर दया आ गयी। उसने हिम्मत बटोरी उसकी जंजीरें ढीली कीं और उससे बोली — "तुम्हारी जंजीरें तो मैं खोल सकती हूँ। पर मैं तुम्हारी सबसे अच्छी दोस्त नहीं बन सकती क्योंकि मैं किसी और को इतना प्यार नहीं कर सकती जितना मैं अपने लँगड़े कुत्ते से करती हूँ। और उससे ज़्यादा प्यार मैं किसी और को कर भी नहीं सकती।"

तभी एक आश्चर्यजनक घटना घटी। जैसे ही उसने उसकी आखिरी जंजीर ढीली की तो वह शेर तो एक बहुत सुन्दर राजकुमार में बदल गया। जब राजकुमारी ने उसको पास से देखा तो उसने देखा कि वह तो उसका वही सबसे प्यारा राजकुमार था जो पहले कुत्ता था।

वह तो उसको देखते ही धरती पर बैठ गयी और उसने उसके घुटने पकड़ लिये और उससे विनती की कि वह अब उसको कभी छोड़ कर न जाये।

राजकुमार ने उसको बड़े प्यार से ऊपर उठाया उसको गले से लगाया और बोला — "अब हम कभी अलग नहीं होंगे क्योंकि अब मेरे ऊपर पड़ा जादू टूट चुका है और मुझे हर तरीके से तुम्हारा विश्वास भी मिल गया है।"

वे दोनों बहुत खुश थे। राजकुमार उसको अपने किले में वापस ले गया। वहाँ पहुँच कर वह राजा बन गया और राजकुमारी रानी बन गयी। अगर वे मरे नहीं हैं तो वे अभी तक वहाँ राज कर रहे हैं।

10 आसमान की बेटी[42]

सूअर राजा जैसी कहानियों के इस तीसरे संग्रह में यह कहानी हमने तुम्हारे लिये यूरोप महाद्वीप के स्कौटलैंड देश की लोक कथाओं से ली है।

यह अबसे बहुत पुरानी बात है कि एक जगह एक किसान रहता था। उसके कई बेटियाँ थीं बहुत सारी भेड़ें और जानवर थे। एक बार वह उनको देखने गया तो उसको कोई नहीं मिला। वह सारा दिन उनको ढूँढता रहा।

शाम को जब वह घर लौट रहा था तो उसने एक छोटा सा कुत्ता देखा जो एक बागीचे में घूम रहा था। उसको देख कर वह कुत्ता उसके पास आया और उससे पूछा — "अगर मैं तुम्हें बहुत सारी भेड़ें और जानवर दे दूँ तो तुम मुझे क्या दोगे?"

किसान बोला — "मुझे नहीं पता कि तुझे मुझसे क्या चाहिये ओ बदसूरत जानवर। पर मेरे पास जो कुछ भी है मैं उसमें से तुझे कुछ भी दे दूँगा।"

कुत्ते ने पूछा — "क्या तुम मुझे अपनी बड़ी बेटी से शादी करने दोगे?"

---

[42] The Daughter of the Skies – a folktale from Scotland, Europe. Taken from the Web Site : https://www.sacred-texts.com/neu/celt/pt1/pt116.htm
Taken from the book: "Popular Tales From the West Highlands: orally collected", by JF Campbell. London: Alexander Gardner. IV volumes. This story appears in volume I. 1890-1893. Reprint available at Detroit: Singing Tree Press, 1969.

किसान बोला — "अगर वह तुझसे शादी करने के लिये राजी होगी तो मैं उसे तुझे दे दूँगा।"

सो कुत्ता और किसान किसान के घर चल दिये।

किसान ने घर पहुँच कर अपनी सबसे बड़ी बेटी से पूछा कि क्या वह उस कुत्ते से शादी करना पसन्द करेगी। उसने कहा कि वह उससे शादी करना पसन्द नहीं करेगी।

उसने अपनी दूसरी बेटी से पूछा क्या वह उस कुत्ते से शादी करना पसन्द करेगी। उसने कहा कि वह भी उससे शादी करना पसन्द नहीं करेगी।

तब उसने अपनी सबसे छोटी बेटी से पूछा क्या वह उस कुत्ते से शादी करना पसन्द करेगी तो उसने कहा कि हाँ वह उससे शादी कर लेगी। सो उन दोनों की शादी हो गयी। उसकी दोनों बहिनों ने उसका खूब मजाक बनाया कि उसने एक कुत्ते से शादी कर ली।

कुत्ता उसको अपने घर ले गया। जब वह अपने रहने की जगह आया तो वह बढ़ कर एक बहुत सुन्दर नौजवान बन गया। वे लोग काफी दिनों तक साथ साथ खुशी खुशी रहे।

फिर एक दिन लड़की की अपने माता पिता से मिलने की इच्छा हुई तो उसने यह बात अपने पति से कही तो वह बोला कि उसको वहाँ बच्चा पैदा होने तक नहीं रहना चाहिये क्योंकि उसे बच्चे की आशा हो गयी थी। उसने कहा कि वह वहाँ तब तक नहीं ठहरेगी।

उसके पति ने उसको एक घोड़ा दिया और उससे कहा कि जैसे ही वह घर पहुँच जाये तो वह उसके सिर से उसका साज उतार ले और उसको वापस आने दे। और जब वह वहाँ से वापस आना चाहे तो बस वह उस घोड़े के सिर पर पहनने वाले साज को हिला दे तो घोड़ा उसके पास आ जायेगा और वह उसको उसके सिर पर फिर से पहना दे। उसने वही किया जो उसके पति ने उससे करने के लिये कहा था।

पिता के घर पहुँचने के कुछ दिन बाद ही वह बीमार पड़ गयी और उसने एक बच्चे को जन्म दिया। उस रात कई आदमी उसकी देखभाल के लिये वहीं खड़े रहे। उस रात वहाँ बहुत ही मीठा संगीत बजा जैसा कि पहले कभी किसी ने न सुना होगा। उसको सुन कर सारा शहर सो गया सिवाय लड़की के।

उसका पति वहाँ आया और उस बच्चे को अपने साथ ले गया। उसके बाद संगीत रुक गया और सब जाग गये। किसी को भी यह पता नहीं चला कि वह बच्चा किधर गया।

लड़की ने भी किसी को कुछ नहीं बताया पर जैसे ही वह उठी उसने घोड़े का सिर का साज हिलाया तो उसका घोड़ा उसके पास आ गया। उसने उसे घोड़े को पहनाया तो घोड़ा उसको ले कर घर चल दिया।

मार्च की तेज़ हवा जो उसके आगे बह रही थी उसको तो वह पकड़ लेता था पर मार्च की वह तेज़ हवा जो उसके पीछे बह रही थी वह उसको नहीं पकड़ पा रही थी।

जब वह घर पहुँची तो वह बोला "तू आ गयी।"

वह बोली "हाँ में आ गयी।"

पति ने भी उसकी तरफ कोई ध्यान नहीं दिया और लड़की ने भी उसकी तरफ कोई ध्यान नहीं दिया। करीब नौ महीने बाद लड़की ने फिर कहा कि वह अपने पिता के घर जाना चाहती है। तो उसने उसको जाने दिया।

पहले की तरह से उसने उसे घोड़ा दिया और कहा कि घर पहुँच जाये तब वह उसके सिर का साज उतार ले औ उसको घर आने दे। और जब वहाँ से आना चाहे तो उस साज को हिला दे तो घोड़ा उसके पास पहुँच जायेगा और उसको वहाँ से ले आयेगा।

सो वह घोड़े पर चढ़ कर अपने घर चली गयी और वहाँ पहुँच कर उसने उसके सिर का साज उतार कर उसको छोड़ दिया।

उसी रात उसको एक बच्चा हुआ। उसका पति फिर उसके पास पहले की तरह से आया और बच्चे को अपने साथ ले गया। जब संगीत शुरू हुआ तो सब सो गये सिवाय लड़की के और जब संगीत बन्द हुआ तो सब जाग गये।

उसका पिता उसके सामने खड़ा था उसने उससे बहुत पूछा कि वह उसको यह बताये कि यह सब क्या था पर उस लड़की ने कुछ

बता कर नहीं दिया। जब वह कुछ ठीक हो गयी और उठी तो फिर उसने घोड़े के सिर का साज हिलाया तो घोड़ा फिर से उसके सामने आ खड़ा हुआ। उसने उसके सिर पर साज पहनाया और अपने घर की तरफ चल दी।

जब वह घर पहुँची तो उसने पूछा "तू आ गयी।"

उसने जवाब दिया "हाँ मैं आ गयी।

न तो पति ने उसकी तरफ कोई ध्यान दिया और न पत्नी ने ही उसकी तरफ कोई ध्यान दिया। नौ महीने बाद उसने फिर कहा कि मैं अपने पिता के घर जाना चाहती हूँ।

तो वह बोला — "जाओ मगर इस बार तुम वैसा नहीं करना जैसा कि तुम पहले दो बार कर चुकी हो।"

उसने कहा "नहीं करूँगी।" पति ने उसे घोड़ा दे दिया और वह वहाँ से चली गयी। वह अपने पिता के घर पहुँची कि उसी रात उसने एक बच्चे को जन्म दिया।

जैसे पहले दो बार हो चुका था इस बार भी वही हुआ। संगीत बजा सब सो गये सिवाय लड़की के। पति ने बच्चे को उठाया और ले कर चला गया। संगीत बजना बन्द हो गया और फिर सब जाग गये।

इस बार भी उसका पिता उसके पास था। वह तो लड़की को मारने को तैयार हो गया कि अगर उसने उसको यह नहीं बताया कि

उसके बच्चों के साथ क्या हो रहा है और उसका पति किस किस्म का आदमी था तो वह उसको वहीं मार देगा।

जब उसके पिता ने उसे बहुत डराया धमकाया तो उसने उसको बता दिया।[43]

जब वह थोड़ी ठीक हो गयी तो वह घोड़े के सिर का साज ले कर पास की एक पहाड़ी पर गयी और उस साज को हिलाना शुरू किया कि उसके हिलाने से शायद वह घोड़ा उसके पास आ जाये और वह साज वह उसके सिर में डाल सके। हालाँकि वह काफी देर तक उसको हिलाती रही पर घोड़ा वहाँ नहीं आया।

जब उसने देखा कि घोड़ा नहीं आ रहा है तो वह पैदल ही चल दी। जब वह घर पहुँची तो वहाँ कोई नहीं था। बस एक बुढ़िया थी जो उसकी सास थी। उसने उसे इस तरह अकेले आते देखा तो बोली "अरे तू अकेली बिना घोड़े के? पर अगर तू जल्दी चलती होती तो तू उसको पकड़ सकती थी।"

सो वह वहाँ से चल दी। रात होने को आ रही थी। उसने अपने से बहुत दूर पर एक रोशनी जलती देखी। और अगर वह रोशनी उससे काफी दूर पर थी तो भी वह वहाँ जल्दी ही पहुँच सकती थी।

---

[43] Example of incoherency – here it is not written that what did she tell to her father about her husband. One cannot know this even up to the end of the story.

जब वह उस मकान के अन्दर गयी तो उसके फर्श सब साफ थे चमक रहे थे और उस घर की मालकिन दूर बैठी चरखा चला रही थी। घर की मालकिन ने कहा "आजा। मुझे तेरी खुशी और तेरी यात्रा के बारे में पता है। तू अपने पति को पकड़ने की कोशिश कर सकती है। वह आसमान की बेटी से शादी कर रहा है।"

लड़की बोली "अच्छा।"

घर की मालकिन उठी उसने उसको खाने के लिये माँस ला कर दिया। उसके पैर धोने के लिये पानी ला कर दिया और उसको सुला दिया। सुबह उठ कर उसने उसको एक कैंची दी जो अपने आप ही काटती थी। फिर उसने उससे कहा — "तू आज की रात मेरी बीच वाली बहिन के घर में रहेगी।"

वह फिर वहाँ से चल दी और चलती रही जब तक कि रात नहीं हो गयी। उसने फिर बहुत दूर एक रोशनी जलती देखी। वह वहाँ भी जल्दी ही पहुँच गयी।

जब वह उस घर में पहुँची तो उस घर के फर्श भी साफ सुथरे थे। बीच में आग जल रही थी और उस आग के पास बैठी हुई घर की मालकिन चरखा चला रही थी।

घर की मालकिन ने उसका स्वागत किया "आजा मुझे तेरी खुशी और यात्रा का पता है।" उसने उसको लिये माँस बनाया। पानी ला कर उसके पैर धोये और खिला पिला कर उसे लिटा दिया।

जैसे ही अगले दिन दिन निकला उसने उससे पैदल जाने के लिये कहा। जाते समय उसने उसको एक सुई दी जो अपने आप ही सिलती थी और कहा कि आज की रात तू मेरी सबसे छोटी बहिन के घर में ठहरेगी।

वह फिर चलती गयी चलती गयी जब तक अँधेरा नहीं हो गया। उसको फिर से बहुत दूर एक रोशनी जलती हुई दिखायी दी। वह उसके पास जल्दी ही पहुँच गयी।

उस घर का फर्श भी साफ सुथरा था बीच में आग जल रही थी और उस घर की मालकिन उसके पास बैठी चरखा चला रही थी। वह बोली — "आजा अन्दर आ जा। मुझे तेरी खुशी और यात्रा का पता है।"

उसने भी उसके लिये माँस बनाया पैर धोने के लिये पानी दिया और खिला पिला कर उसे सुला दिया। सुबह दिन निकलने से भी पहले वह उठी और उसको पैदल जाने दिया। उसने उसके लिये माँस बनाया और एक धागा दिया जो अपने आप ही सुई में चला जाता था।

जैसे जैसे कैंची काटती जाती थी सुई उसको सिलती जाती थी तो यह धागा उन दोनों का साथ देता था। उसने यह भी कहा कि आज की रात वह शहर पहुँच जायेगी।

सो शाम को वह शहर पहुँच गयी। उस रात वह अपनी थकान मिटाने के लिये राजा के घर की देखभाल करने वाली के घर

पहुँची। वह वहाँ आग के पास जा कर उसकी गरमी लेने के लिये बैठ गयी।

उसने उस बुढ़िया से उसे कुछ काम देने के लिये कहा ताकि वह वहाँ खाली न बैठी रहे। बुढ़िया ने कहा — "आज तो यहाँ कोई भी काम नहीं कर रहा क्योंकि राजा की बेटी की शादी है।"

लड़की बोली — "कोई बात नहीं। मुझे सिलने के लिये कोई कपड़ा ही दे दो या फिर कोई कमीज। वह करने से मेरे कम से कम हाथ तो चलते रहेंगे।" उसने उसको अपनी कमीजें बनाने के लिये दे दीं।

लड़की ने अपनी जेब से कैंची निकाली और उससे काम करना शुरू कर दिया। उसके बाद उसने अपनी सुई को काम पर लगा दिया। जैसे जैसे कैंची काटती जाती सुई उन कपड़ों को सिलती जाती। सुई में धागा अपने आप ही पड़ता जाता।

इतने में राजा की एक नौकरानी वहाँ आयी। उसने उस लड़की को देखा तो उसको यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि किस तरह से कैंची और सुई अपना अपना काम अपने आप ही करती जा रही थीं।

वह तुरन्त ही वहाँ भागी भागी गयी और जा कर राजकुमारी से बोली कि उनके घर की देखभाल करने वाली के घर में एक लड़की बैठी है जिसके पास एक कैंची है और एक सुई है जो अपना अपना काम अपने आप ही कर रही हैं।

यह सुनते ही राजकुमारी ने कहा "अगर ऐसा है तो तुम कल सुबह ही उसके पास जाना और उससे पूछना कि वह वह कैंची कितने में बेचेगी।"

सो सुबह होते ही वह नौकरानी उस लड़की के पास आयी। उसने लड़की से पूछा कि वह कैंची की क्या कीमत लेगी। लड़की ने बोली "मैंने कुछ नहीं माँगा सिवाय इसके कि मैं वहीं लेटना चाहती हूँ जहाँ राजकुमारी जी कल रात लेटी थीं।"

नौकरानी ने जब आ कर राजकुमारी को यह बताया तो राजकुमारी ने अपनी नौकरानी से कहा — "ठीक है। तुम जा सकती हो। उससे कह देना कि वह उसको मिल जायेगा।"

सो उसने वह कैंची राजकुमारी को दे दी। जब वे लोग सोने गये तो राजकुमारी ने उसके पीने में कोई नींद की दवा मिला दी जिससे कि वह रात भर जाग ही न सके।

वह रात भर सोता रहा और जैसे ही दिन निकला राजकुमारी वहाँ आयी जहाँ वह सो रही थी और उसको उठा कर बाहर कर दिया। अगले दिन वह सुई से काम कर रही थी और दूसरी कैंचियों से काट रही थी।

राजकुमारी ने फिर अपनी नौकरानी से उसके पास जाने के लिये और उससे पूछने के लिये कहा कि वह सुई उसको कितने पैसे में बेचेगी। नौकरानी ने उससे पूछ कर बताया कि वह उसकी कोई

कीमत नहीं माँग रही सिवाय इसके कि वह फिर से उसी कमरे में सोना चाहती है।

राजकुमारी बोली — "उससे जा कर कह दो कि उसकी माँग पूरी की जायेगी।"

और इस तरह से राजकुमारी ने उस लड़की से उसकी सुई भी ले ली। जब वे सोने जा रहे थे तो राजकुमारी ने फिर से उसके पीने में कोई सोने की दवा मिला दी जिससे वह सारी रात सोता रहा।

इत्तफाक से उसका सबसे बड़ा बेटा वहीं उनके पास एक दूसरे पलंग पर सो रहा था। वह सारी रात उस लड़की को उससे बातें करते सुनता रहा। वह उससे कह रही थी कि वह उन तीनों बच्चों की माँ है।

सुबह को फिर राजकुमारी ने उसको बाहर निकाल कर उसके घर भेज दिया। इधर सुबह को ही वह आदमी अपने बेटे के साथ सैर कर रहा था तो उसने अपने पिता को बताया कि वह रात भर क्या क्या सुनता रहा।

तीसरे दिन राजकुमारी ने फिर अपनी नौकरानी को उस लड़की के पास यह पूछने के लिये भेजा कि वह धागे की क्या कीमत लेगी। तो उसने फिर वही जवाब दिया — "कुछ नहीं सिवाय इसके कि आखिरी बार वह उसके कमरे में सोना चाहती है।"

राजकुमारी ने फिर उससे कह दिया कि वह ऐसा कर सकती है तो उसने उससे धागा भी ले लिया। उस रात को भी राजकुमारी ने

उसके पीने में सोने की दवा मिला दी थी पर उस आदमी ने उसे बिल्कुल नहीं पिया और फेंक दिया।

रात को उस लड़की ने कहा कि वह उसके तीनों बेटों का पिता था। तो उसने जवाब दिया कि हॉ वह उन तीनों बच्चों का पिता है।

सुबह को जब राजकुमारी उस लड़की को बाहर निकालने के लिये आयी तो उस आदमी ने उससे वहॉ से जाने के लिये कहा कि वह वहॉ से चली जाये क्योंकि जो उसके साथ है वह उसकी पत्नी है। फिर वे लोग वहॉ से अपने घर वापस आ गये। उस आदमी के ऊपर का जादू टूट गया और वे हमें छोड़ कर चले गये। हमने भी उनको छोड़ दिया।

11 छोटा हरा खरगोश[44]

सूअर राजा जैसी यह लोक कथा उत्तरी अमेरिका के मैक्सिको देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

बहुत पहले की बात है कि एक राजा था जिसके तीन बेटे थे। उसके तीनों बेटे बहुत सुन्दर थे और वह अपने तीनों बेटों को बहुत प्यार करता था। पर इस राजा की एक बुरी आदत थी कि वह यह चाहता था कि सब उसके हुक्म को मानें।

एक बार वे तीनों राजकुमार राजा से पूछे बिना ही कहीं चले गये तो राजा इतना गुस्सा हुआ कि उसने उनको उनके ऊपर अपना जादू चला कर सजा दी। उसने अपने उन तीनों बेटों को छोटे छोटे खरगोशों में बदल दिया।

सबसे बड़े बेटे को उसने पिन्टो खरगोश[45] बना दिया। दूसरे बेटे को उसने सफेद खरगोश बना दिया और तीसरे बेटे को एक बहुत ही सुन्दर छोटे हरे खरगोश में बदल दिया।

---

[44] The Little Green Rabbit (El Conejito Verde) – a folktale from Mexico, North America.
Adapted from the Web Site : http://www.g-world.org/magictales/
Adopted, retold by Sra Teresa Zemora.

[45] A species of rabbit – see its picture above.

इसके बाद उसने उनसे कहा — "सारे साल तुम लोग महल के बाहर नहीं जाओगे और केवल रात को ही आदमी की शक्ल में आ सकोगे।"

सो इसी तरह से समय गुजरता रहा।

एक दिन वे तीनों खरगोश महल के बागीचे में घास खा रहे थे कि हरा खरगोश बोला — "भाइयो, अब मैं इस ज़िन्दगी से तंग आ गया हूँ। मैं अब ऐसी ज़िन्दगी और नहीं सह सकता। चलो हम लोग इस पानी के पाइप से हो कर बाहर निकल कर देखते हैं कि इस जेल के चारों तरफ क्या है।"

दूसरे दोनों खरगोश थोड़े आलसी थे। इसके अलावा वे राजा से डरते भी थे इसलिये वे हरे खरगोश की बात मानना नहीं चाहते थे। पर हरे खरगोश ने उनसे इतनी जिद की आखिर उनको मानना ही पड़ा। सो वे तीनों वहाँ से बाहर निकल गये।

सारी दोपहर वे पहाड़ियों के ऊपर और घाटियों में भागते रहे। शाम को जब वे महल लौटे तो उन्होंने किसी को बड़ा मीठा सा ख़ुशी का गाना गाते सुना।

हरा खरगोश बोला — "चलो चल कर देखते हैं कि कौन गा रहा है।"

हालाँकि हरे खरगोश ने अपने भाइयों से भी चलने की बहुत जिद की फिर भी उसके भाइयों ने मना कर दिया और वे उसके साथ नहीं गये।

सो इस बार हरा खरगोश अकेला ही उस गाने वाले को ढूँढने चला गया। वह जिधर से गाने की आवाज आ रही थी उसी तरफ चल दिया तो एक बहुत ही सुन्दर महल के पास आ गया।

उसमें घुसने की उम्मीद में कि उसे कहीं उस महल में अन्दर घुसने का कोई रास्ता मिल जाये वह उस महल के बागीचे में चक्कर काटता रहा। आखिर उसको एक दीवार में एक छोटा सा छेद मिल गया और वह उसमें से हो कर अन्दर चला गया।

बिना आवाज किये धीरे से वह उस महल के बगीचे में पहुँच गया। वहाँ उसने देखा कि गाने वाला तो एक बहुत सुन्दर सी राजकुमारी थी। उसके बाल सुनहरे थे और आँखें समुद्र जैसी नीली थीं। उस लड़की का नाम मैरीसौल[46] था।

बस हरा खरगोश तो उसको देखते ही उससे प्यार कर बैठा। अनजाने में ही वह उसके पास खिसकता चला गया। राजकुमारी ने जैसे ही उस खरगोश को देखा तो उसने तो एक बार में ही उसको पकड़ लिया।

उसको उठा कर वह अपने माता पिता के पास भागी उस छोटे से हरे खरगोश को उनको दिखाने के लिये कि उसने कितना सुन्दर खरगोश पकड़ा है।

राजकुमारी के माता पिता अपनी बेटी को बहुत प्यार करते थे। दयालु होने के साथ साथ मैरीसौल उनकी अकेली बेटी भी तो थी

[46] Marisol – name of the princess

न। खरगोश को अपने माता पिता को दिखा कर वह उसको अपने सोने के कमरे में ले गयी।

वह तो यह देख कर आश्चर्यचकित रह गयी जब उसने उस खरगोश को बोलते हुए सुना।

वह खरगोश बोला — "ओ सुन्दर राजकुमारी, मैं खरगोश नहीं हूँ। मैं तो एक राजकुमार हूँ जिसको मेरे पिता ने उनका हुकुम न मानने पर सजा के तौर पर जादू से खरगोश बना दिया है।

अगर तुम मुझे वापस नहीं जाने दोगी तो मेरे पिता राजा आज रात को ही मुझे मार देंगे। अभी तुम मुझे जाने दो और जैसे ही मेरी सजा का समय पूरा हो जायेगा मैं तुम्हारे पास वापस आऊँगा और तुमसे शादी कर लूँगा। विश्वास के रूप में तुम मेरी यह अँगूठी रख लो।"

राजकुमारी तो खरगोश की यह सब बातें सुन कर आश्चर्य में पड़ गयी। पर क्योंकि वह बहुत दयालु थी और क्योंकि वह उस खरगोश से प्यार करती थी वह उसको बागीचे में ले गयी और उसको वहाँ ले जा कर छोड़ दिया।

खरगोश उछलता कूदता भाग गया।

महीनों गुजर गये पर खरगोश मैरीसौल से मिलने नहीं आया। कुछ समय और बीत गया तो मैरीसौल तो बेचैन होने लगी। वह इतनी ज़्यादा बेचैन हुई कि उसके माता पिता उसकी तरफ से परेशान हो गये।

इसलिये उन्होंने उसकी खुशी के लिये एक दावत का इन्तजाम किया। दूर दूर से उन्होंने गवैये और संगीतकार बुलाये कि हो सकता है कि वे ही उसके मन को खुश कर सकें।

पास के गाँव एक बूढ़ा रहता था। उसकी एक बेटी थी। वह बहुत अच्छा गिटार बजाती थी और बहुत सुन्दर गाने गाती थी।

जब उसने राजा का ऐलान सुना तो उस बूढ़े ने अपनी बेटी रोज़िटा[47] को राजकुमारी के सामने गाने के लिये ले जाने का विचार किया।

सो वह बूढ़ा और उसकी बेटी अपने छोटे से गधे पर सवार हो कर महल को चल दिये। बीच में वे उस शहर से गुजरे जहाँ वे खरगोश रहते थे।

रोज़िटा और उसके पिता को भूख लग आयी थी सो रोज़िटा महल के पास की एक बेकरी की दूकान की तरफ डबल रोटी लेने के लिये गयी।

इत्तफाक से उस समय उस दुकान वाले को गुस्सा आ रहा था क्योंकि उसी समय उसकी डबल रोटी जल गयी थी। सो उसने एक गोल डबल रोटी रोज़िटा की तरफ उछाल दी। रोज़िटा ने उसको पकड़ने की कोशिश की पर वह उसको पकड़ नहीं सकी।

[47] Rosita – name of the daughter of the old villager

वह गोल डबल रोटी नीचे गिर पड़ी और बेकरी की दूकान के दरवाजे के बाहर लुढ़कती हुई चली गयी। रोज़िटा उसके पीछे दौड़ी पर वह रोटी तो लुढ़कती ही गयी लुढ़कती ही गयी।

लुढ़कते लुढ़कते वह महल की एक दीवार में बने एक छेद में से होते हुए महल में चली गयी और जा कर वह एक बहुत ही सुन्दर सोने के कमरे के दरवाजे के पास जा कर रुक गयी।

वहीं वे तीनों खरगोश रहते थे और उसी कमरे में तीन बहुत सुन्दर पलंग बिछे हुए थे।

तभी रोज़िटा ने कुछ शोर सुना तो वह कमरे में लटके एक परदे के पीछे छिप गयी और उसके पीछे से झाँक कर देखने लगी। उसने देखा कि तीन खरगोश उस कमरे के अन्दर आये।

उनमें से एक पिन्टो खरगोश था, दूसरा एक सफेद खरगोश था और तीसरा एक छोटा सा हरे रंग का खरगोश था। पिन्टो खरगोश अपने पलंग पर कूद कर चढ़ा, एक बार करवट बदली और एक सुन्दर राजकुमार बन गया और सो गया।

इसी तरह से दूसरा सफेद खरगोश भी अपने पलंग पर कूद कर चढ़ा, एक बार करवट बदली और एक सुन्दर राजकुमार में बदल गया और वह भी सो गया।

आखीर में वह तीसरा खरगोश भी अपने पलंग पर कूद कर चढ़ा, एक बार करवट बदली और वह भी बहुत और बहुत सुन्दर राजकुमार बन गया।

पर यह आखिरी राजकुमार तुरन्त ही नहीं सो गया। वह रोने लगा। उसके रोने की आवाज सुन कर वे पहले दो राजकुमार जाग गये और उससे कहने लगे — "भाई, राजकुमारी मैरीसौल को भूल जाओ। पिता जी कभी तुमको उससे शादी करने की इजाज़त नहीं देंगे।"

कुछ देर बाद वे तीनों राजकुमार सो गये और रोज़िटा किसी तरह से वहाँ से उसी रास्ते से बाहर निकलने में कामयाब हो गयी जिस रास्ते से वह अन्दर आयी थी।

सुबह होने वाली थी सो रोज़िटा और उसके पिता मैरीसौल के गाँव चल दिये। वे दोनों महल आये और राजा से मिलने गये।

रोज़िटा ने राजकुमारी को नाच गा कर दिखाया पर वह उसको प्रभावित नहीं कर सकी। आखिर रोज़िटा बोली — "राजकुमारी जी, मैं आपको एक कहानी सुनाती हूँ।"

उसके बाद रोज़िटा ने उसको वह सब सुना दिया जो उसके साथ रास्ते में हुआ था कि कैसे उसने तीन खरगोश देखे थे जिसमें एक हरा खरगोश भी था। फिर कैसे वे रात को आदमी बन गये थे।

यह सुन कर तो मैरीसौल बहुत खुश हो गयी और उसने अपने पिता से उस हरे खरगोश को देखने की इजाज़त माँगी।

मैरीसौल के माता पिता इस तरह से उसको वहाँ जाने देना नहीं चाहते थे पर उसकी जिद के आगे उनकी एक न चली और उनको उसको वहाँ जाने की इजाज़त देनी ही पड़ी।

रोज़िटा और मैरीसौल दोनों उस शहर चल दिये जहाँ वह हरा खरगोश रहता था।

जब वे दोनों महल की दीवार के छेद के पास पहुँचीं तो रोज़िटा ने मैरीसौल से कहा — "सुनो राजकुमारी जी, हम लोग वहाँ इस छेद में से हो कर जा रहे हैं। कोई शोर नहीं मचाना क्योंकि अगर राजा को पता चल गया तो वह हम दोनों को मार डालेगा।"

मैरीसौल बोली ठीक है और वे दोनों महल में दाखिल हुए। और उसी कमरे के पास पहुँच गये। कुछ देर बाद पिन्टो खरगोश आया। वह अपने पलंग पर कूद कर चढ़ गया। एक करवट बदली और एक सुन्दर राजकुमार बन गया और सो गया।

उसके बाद एक सफेद खरगोश आया। वह भी कूद कर अपने पलंग पर चढ़ गया। एक करवट बदली और एक सुन्दर राजकुमार बन गया और सो गया।

आखीर में एक हरा खरगोश आया पर जब वह अपने पलंग पर कूद कर चढ़ा और करवट बदली तो मैरीसौल से नहीं रहा गया। वह एक हल्की सी चीख के साथ राजकुमार की तरफ दौड़ी।

राजा ने जो उस समय कमरे के आस पास ही टहल रहा था मैरीसौल की चीख सुनी तो राजकुमारों के सोने के कमरे की तरफ दौड़ा।

जब उसने वहाँ मैरीसौल को देखा तो वह बहुत गुस्सा हुआ और उसको मारना ही चाहता था कि सबसे छोटा राजकुमार बोला —

“ओ मेरे पिता और राजा, मैं इस लड़की से प्यार करता हूँ और मैं इससे शादी करना चाहता हूँ।”

अब तो राजा के गुस्से का कोई पारावार न रहा पर फिर भी उसको रोकते हुए वह राजकुमार से बोला — “हूँ, तो तुम इससे शादी करना चाहते हो। इसका मतलब है कि तुम आपस में एक दूसरे से मेरी बिना इजाज़त के बिना पहले से ही मिल चुके हो।

इससे पहले कि तुम लोग शादी करो तुम लोगों को वह करना पड़ेगा जो मैं कहता हूँ।”

फिर वह हरे खरगोश से बोला — “तुमको सात साल तक और खरगोश बने रहना पड़ेगा।”

और मैरीसौल से बोला — “और तुम राजकुमार से तब तक शादी नहीं कर पाओगी जब तक कि तुम अपने आँसुओं से ये सात बैरल[48] न भर दो और ये सात लोहे के जूते न फाड़ दो।”

बेचारे राजकुमार और राजकुमारी को हाँ कहना ही पड़ा क्योंकि उनके पास और कोई रास्ता ही नहीं था।

राजकुमार घुटनों के बल बैठ गया और राजा से प्रार्थना की कि वह उनके ऊपर दया करे पर राजा नहीं माना और मैरीसौल आँखों में आँसू लिये हुए वहाँ से अपने लोहे के जूते फाड़ने चली गयी।

---

[48] Barrel is a hollow cylindrical container traditionally made of wooden staves bound by wooden or metal hooves – see its picture above.

बहुत देर तक चलते चलते और रोते रोते मैरीसौल एक घर के सामने आयी जहाँ चाँद रहता था। मैरीसौल ने तब तक अपने आँसुओं से सातों बैरल भी भर लिये थे और सातों लोहे के जूते भी फाड़ दिये थे।

पर वह बेचारी लड़की चलते चलते बहुत थक गयी थी और हरे खरगोश के महल से इतनी दूर थी कि वहाँ पहुँचने से पहले उसको कोई आराम करने की जगह चाहिये थी।

मैरीसौल ने उस घर का दरवाजा खटखटाया तो चाँद बाहर निकला और राजकुमारी से पूछा — "लड़की, तुम यहाँ क्या कर रही हो?"

मैरीसौल ने उसको अपनी कहानी सुनायी और उससे हरे खरगोश के घर तक पहुँचने में सहायता माँगी।

चाँद बोला — "देखो, इस समय मैं धरती के उस हिस्से में नहीं जा सकता जहाँ तुम्हारा हरा खरगोश रहता है। बल्कि मैं तो उधर कई दिनों तक नहीं जा सकता। पर तुम वह पहाड़ी देख रही हो न? मेरा दोस्त सूरज वहाँ रहता है। तुम उसके पास चली जाओ शायद वह तुम्हारी कुछ सहायता कर दे।"

मैरीसौल फिर चल दी और चलते चलते उस पहाड़ी पर आयी जहाँ सूरज रहता था। वहाँ आ कर उसने सूरज के घर का दरवाजा खटखटाया तो सूरज ने दरवाजा खोला और उससे पूछा — "ओ लड़की, तुम यहाँ क्या कर रही हो?"

मैरीसौल बोली — “मैं हरे खरगोश की होने वाली पत्नी हूँ। मेहरबानी कर के उसके महल तक पहुँचने में मेरी सहायता करो।”

सूरज ने उसको घूर कर देखा और फिर बोला — “तुम कहती हो कि तुम हरे खरगोश की होने वाली पत्नी हो। यह तो हो ही नहीं सकता क्योंकि हरे खरगोश की तो तीन दिन के अन्दर शादी होने वाली है।

राजा ने खुद उसकी होने वाली पत्नी चुनी है। सारे लोग मेरी प्रार्थना कर रहे हैं कि उस दिन मैं खूब ज़ोर से चमकूँ। वे सचमुच में ही यह चाहते हैं कि मैं उस दिन सारे दिन चमकूँ।”

मैरीसौल बोली — “मिस्टर सूरज, मेहरबानी कर के मुझे उसके महल ले चलो।”

और फिर उसने उसके साथ जो जो हुआ था वह सब कुछ सूरज को बता दिया।

सूरज बोला — “देखो लड़की, मैं खुद तुमको वहाँ नहीं ले जा सकता क्योंकि अगर मैंने तुमको अपनी बाँहों में उठाया तो मैं तुमको जला दूँगा। पर हाँ, उस पहाड़ी के दूसरी तरफ मेरा दोस्त हवा रहता है। तुम उसको जा कर बोलो तुमको जहाँ जाना है। वह तुमको वहाँ ले जायेगा।”

सो मैरीसौल फिर चलते चलते उस पहाड़ी पर आयी जहाँ हवा रहता था और हवा के घर गयी।

वहाँ जा कर उसने हवा के घर का दरवाजा खटखटाया तो मिस्टर हवा की पत्नी ने दरवाजा खोला और बोली — "लड़की, अन्दर आ जाओ। तुम यहाँ क्या कर रही हो?"

मैरीसौल ने हवा की पत्नी को अपनी कहानी सुनायी। तभी अचानक हवा इतनी ज़ोर से हँसता हुआ घर आया कि उसकी हँसी से सारी जगह हिल गयी।

हवा की पत्नी ने उससे इतने ज़ोर से हँसने की वजह पूछी तो हवा ने बताया कि उसने हरे खरगोश और उसकी होने वाली पत्नी की शादी की सारी तैयारियाँ खराब कर दीं।

उसके बाद उसने मैरीसौल को देखा तो उससे पूछा कि वह लड़की कौन है और वह वहाँ क्या कर रही है। मैरीसौल ने उसको बताया कि उसके ऊपर क्या बीत रही है।

मिस्टर हवा बोला — "शायद इसी लिये हरा खरगोश चर्च में प्रार्थना कर रहा होगा। मुझे लगता है कि वह तुम्हारे लौटने की ही प्रार्थना कर रहा होगा। आओ, मेरी कमर पकड़ लो और पलक झपकने से पहले ही तुम उसके महल में होगी।

मैरीसौल ने हवा की कमर पकड़ ली और पल भर में ही वह हरे खरगोश के महल में थी। राजा भी वहीं पर था। उसने पूछा — "यह भिखारिन कौन है?"

पर हरे खरगोश ने मैरीसौल को पहचान लिया और तुरन्त ही उसकी तरफ चिल्लाते हुए दौड़ा — "ओह मेरी होने वाली पत्नी आ गयी, आखिर मेरी होने वाली पत्नी आ गयी।"

मैरीसौल ने राजा को सात बैरल आँसू दिये और एक बड़े से रूमाल में बँधे सात लोहे के फटे हुए जूते के बचे हुए हिस्से दिये।

क्योंकि राजा ने इसी के बाद दोनों की शादी का वायदा किया था सो दोनों की शादी हो गयी और वे खुशी खुशी रहने लगे।

12 केंकड़ा राजकुमार[49]

एक बार एक मछियारा था जो कभी इतनी मछली नहीं पकड़ पाता था जिससे वह अपने परिवार का पेट भर सकता। इसलिये वह और उसका परिवार अक्सर ही भूखा रहता था।

एक दिन जब उसने अपना जाल पानी में से खींचा तो उसको अपना जाल इतना भारी लगा कि उसको उसे खींचना मुश्किल हो गया।

पर हिम्मत कर के उसने उसे खींच ही लिया तो उसने उसमें क्या देखा कि उस जाल में एक इतने बड़े साइज़ का केंकड़ा फँसा हुआ था जिसको एक आँख भर कर तो वह देख ही नहीं सकता था।

"ओह आखिर आज कितना बड़ा शिकार हाथ लगा। अब मैं अपने बच्चों के लिये बहुत सारा खाना खरीद सकता हूँ।" उसने उस केंकड़े को अपनी पीठ पर रखा और घर ले गया।

उसने अपनी पत्नी को आग जला कर उसके ऊपर एक पानी भरा बरतन रखने को कहा क्योंकि वह जल्दी ही बच्चों के लिये खाना ले कर लौटने वाला था और वह खुद उस केंकड़े को ले कर राजा के महल चल दिया।

---

[49] The Crab Prince. A folktale from Italy from its Venice area.

वहाँ जा कर वह राजा से बोला — “हुजूर मैं आपसे इसलिये मिलने आया हूँ कि आप मुझसे यह केंकड़ा खरीद लीजिये। मेरी पत्नी ने बरतन आग पर रख दिया है पर मेरे पास पैसे नहीं हैं जिससे मैं अपने बच्चों के लिये खाना खरीद सकूँ।”

राजा बोला — “पर मैं केंकड़े का क्या करूँगा? क्या तुम उसको किसी और को नहीं बेच सकते?”

तभी राजा की बेटी वहाँ आ गयी और उस केंकड़े को देख कर बोली — “अरे कितना अच्छा केंकड़ा है। पिता जी इसे आप मेरे लिये खरीद दीजिये न। हम इसको अपने मछली वाले तालाब में सुनहरी मछलियों के साथ रख देंगे।”

राजा की बेटी को मछलियाँ बहुत अच्छी लगती थीं। वह उस तालाब के किनारे बैठी बैठी घंटों घंटों उन मछलियों को देखती रहती थी जो उसमें तैरती रहती थीं।

उसका पिता अपनी बेटी की किसी बात को ना नहीं कर पाता था सो उसने उसके लिये वह केंकड़ा खरीद दिया। उस मछियारे ने उसे राजा के मछली के तालाब में डाल दिया।

राजा ने उसको सोने के सिक्कों से भरा एक बटुआ दे दिया जिससे वह अपने बच्चों को एक महीने तक खाना खिला सकता था। केंकड़ा वहीं छोड़ कर वह मछियारा वहाँ से चला गया।

अब राजकुमारी सारा समय वहीं उस मछली वाले तालाब के किनारे ही बैठी रहती और उस केंकड़े को ही देखती रहती। उस केंकड़े को देखते देखते वह थकती ही नहीं थी।

इतनी ज़्यादा देर तक वहाँ बैठे रहने से और उस केंकड़े को बराबर देखते रहने से अब वह उसको और उसके तरीकों को बहुत अच्छी तरह से जान गयी थी। उसने देखा कि वह केंकड़ा दिन के बारह बजे से लेकर दिन के तीन बजे तक गायब हो जाता था, भगवान जाने कहाँ।

एक दिन राजा की बेटी वहाँ उस केंकड़े को देखने के लिये बैठी हुई थी कि उसने दरवाजे पर किसी के खटखटाने की आवाज सुनी।

उसने अपने छज्जे से नीचे देखा तो एक खानाबदोश वहाँ भीख माँगने के लिये खड़ा हुआ था। राजा की बेटी ने पैसों का एक थैला उसकी तरफ फेंक दिया पर वह वह थैला न लपक सका और वह थैला उसके बराबर से हो कर एक गड्ढे में जा पड़ा।

वह खानाबदोश उस थैले के पीछे पीछे उस गड्ढे तक गया। गड्ढे में पानी था सो वह पानी में कूद पड़ा और तैरना शुरू कर दिया।

वह गड्ढा जमीन के नीचे नीचे एक नहर से राजा के मछली वाले तालाब से जुड़ा हुआ था और वह नहर भी न जाने कहाँ तक जाती थी।

वह आदमी उस मछली वाले तालाब तक पहुँच कर उस नहर में निकल गया और एक बहुत बड़े जमीन के नीचे बने कमरे के बीच में बने एक बहुत छोटे से बेसिन[50] में निकल आया।

उस कमरे में बहुत बढ़िया परदे लटक रहे थे और एक बहुत ही सुन्दर मेज लगी रखी थी। वह आदमी उस बेसिन में से बाहर निकला और एक परदे के पीछे छिप गया।

जब दोपहर के बारह बजे तो उस बेसिन में से एक परी बाहर निकली जो एक केंकड़े के ऊपर बैठी हुई थी। उसने और केंकड़े दोनों ने मिल कर बेसिन का पानी बाहर कमरे में उलीच दिया।

फिर परी ने अपनी जादू की छड़ी से केंकड़े को छुआ तो केंकड़े के खोल से एक बहुत सुन्दर नौजवान निकल आया। वह नौजवान मेज के पास रखी एक कुरसी पर बैठ गया।

परी ने फिर अपनी जादू की छड़ी मेज पर मारी तो वहाँ स्वादिष्ट खाना आ गया और बोतलों में शराब आ गयी। जब नौजवान ने अपना खाना पीना खत्म कर लिया तो वह फिर अपने केंकड़े वाले खोल में घुस गया।

परी ने केंकड़े के उस खोल को फिर से छुआ तो वह केंकड़ा उस परी को ले कर फिर से बेसिन में कूद गया और उसको ले कर पानी में गायब हो गया।

[50] Basin is a natural or artificial hollow place containing water.

अब वह आदमी परदे के पीछे से निकल आया और बेसिन के पानी में कूद कर फिर से राजा के मछली वाले तालाब में आ गया।

राजा की बेटी अभी भी वहीं बैठी अपनी मछलियों को तैरता देख रही थी। उस आदमी को उस तालाब में से निकलते देख कर उसने उससे पूछा — "अरे तुम यहाँ क्या कर रहे हो?"

वह आदमी बोला — "राजकुमारी जी मैं आपको एक बहुत ही आश्चर्यजनक बात बताना चाहता हूँ।" फिर वह उस तालाब में से बाहर निकल आया और उसको वह सब कुछ बताया जो वह अभी अभी देख कर आ रहा था।

राजकुमारी बोली — "अच्छा तो अब मेरी समझ में आया कि यह केंकड़ा बारह से तीन बजे के बीच में कहाँ जाता है। ठीक है कल दोपहर को हम दोनों एक साथ वहाँ जायेंगे और देखेंगे।"

सो अगले दिन वे दोनों उस तालाब के पानी में तैर कर उस जमीन के नीचे बनी नहर में तैरे और उस कमरे में बने बेसिन में आ निकले। बेसिन में से निकल कर वे एक परदे के पीछे छिप गये।

दोपहर के ठीक बारह बजे उस बेसिन में से वह परी एक केंकड़े के ऊपर बैठी बाहर निकली। उसने अपनी जादू की छड़ी उस केंकड़े के खोल को छुआयी तो उसमें से एक सुन्दर नौजवान बाहर निकल आया और मेज के पास पड़ी एक कुरसी पर बैठ गया।

राजकुमारी को वह केंकड़ा तो पहले से ही अच्छा लगता था पर अब वह उसमें से निकले सुन्दर नौजवान को देख कर उसके प्रेम में पड़ गयी।

अपने पास ही पड़ा केंकड़े का खाली खोल देख कर वह उस खोल के अन्दर छिप गयी। जब वह नौजवान अपना खाना पीना खत्म कर के अपने खोल में वापस आया तो वहाँ एक सुन्दर लड़की को पा कर उसने उससे फुसफुसा कर पूछा — "यह तुमने क्या किया, अगर कहीं परी ने देख लिया तो वह हम दोनों को मार देगी।"

राजा की बेटी ने भी फुसफुसा कर जवाब दिया — "पर मैं तुमको इस जादू से छुड़ाना चाहती हूँ। बस मुझे यह बता दो कि इसके लिये मुझे करना क्या है।"

नौजवान बोला — "यह नामुमकिन है। मुझे इस जादू से वही लड़की बचा सकती है जो मुझे इतना प्यार करती हो जो मेरे साथ मरने के लिये तैयार हो।"

राजा की बेटी बेहिचक बोली — "मैं वह लड़की हूँ। मैं तुमसे प्यार करती हूँ और तुम्हारे लिये मरने के लिये तैयार हूँ।"

जब उस केंकड़े के खोल के अन्दर उन दोनों में ये सब बातें चल रहीं थी तब वह परी उस केंकड़े के खोल पर बैठी और उस नौजवान ने रोज की तरह केंकड़े के पंजे बनाये और उस परी को ले

कर वहाँ से जमीन के अन्दर वाली नहर से हो कर खुले समुद्र में ले गया।

उस परी को ज़रा सा भी शक नहीं हुआ कि उस खोल के अन्दर राजा की बेटी भी छिपी हुई थी।

जब वह परी को उसकी जगह छोड़ कर वापस उस मछलियों वाले तालाब में आ रहा था तो उस नौजवान ने जो एक राजकुमार था राजा की बेटी को जो अभी भी उस केंकड़े के खोल में उसके साथ ही बैठी थी बताया कि वह इस जादू से कैसे आजाद हो सकता था।

उसने कहा — "तुमको समुद्र के किनारे वाली एक चट्टान पर चढ़ना पड़ेगा और वहाँ जा कर कुछ बजाना और गाना गाना पड़ेगा। परी को संगीत बहुत अच्छा लगता है तो जैसे ही वह तुम्हारा गाना सुनेगी वह गाना सुनने के लिये पानी में से बाहर निकल आयेगी।

वह तुमसे कहेगी — "और गाओ ओ सुन्दर लड़की और गाओ। तुम्हारा संगीत तो दिल खुश कर देने वाला है।"

तब तुम जवाब देना — "मैं जरूर गाऊँगी अगर तुम अपने बालों में लगा फूल मुझको दे दो तो।"

जैसे ही तुम अपने हाथ में वह फूल ले लोगी मैं उसके जादू से आजाद हो जाऊँगा क्योंकि वह फूल ही मेरी ज़िन्दगी है।"

इस बीच में वह केंकड़ा मछलियों वाले तालाब में पहुँच चुका था सो उसने राजा की बेटी को उस खोल में से बाहर निकाल दिया।

वह खानाबदोश अपने आप ही उस नहर में से तैर कर बाहर आ गया था। नहर में से निकल कर जब उसको राजा की बेटी कहीं दिखायी नहीं दी तो उसको लगा कि वह तो बड़ी मुश्किल में पड़ गया है। अब वह राजा की बेटी को कहाँ ढूँढे।

फिर उसने देखा कि जल्दी ही वह लड़की मछलियों वाले तालाब में से निकल आयी। उसने उस खानाबदोश को धन्यवाद दिया और उसको बहुत सारा इनाम भी दिया।

उसके बाद वह अपने पिता के पास गयी और उससे कहा कि वह संगीत सीखना चाहती थी। अब क्योंकि राजा उसको किसी भी चीज़ के लिये मना नहीं कर सकता था सो उसने अपने राज्य के सबसे अच्छे संगीतज्ञों और गवैयों को बुलाया और उनको अपनी बेटी को संगीत सिखाने के लिये रख दिया।

जब उसने संगीत सीख लिया तो उसने अपने पिता से कहा — “पिता जी, अब मैं समुद्र के किनारे वाली चट्टान पर बैठ कर वायलिन बजाना चाहती हूँ।”

“क्या? समुद्र के किनारे चट्टान पर बैठ कर वायलिन बजाना चाहती हो? क्या तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है?” पर फिर हमेशा की तरह से उसको वहाँ जाने की इजाज़त भी दे दी।

पर उसने उसकी सफेद पोशाक पहने आठ दासियाँ उसके साथ कर दीं और उन सबकी सुरक्षा के लिये उन सबके पीछे कुछ दूरी से कुछ हथियारबन्द सिपाही भी भेज दिये।

राजा की बेटी ने चट्टान पर बैठ कर अपनी आठ दासियों के साथ अपनी वायलिन बजानी शुरू की।

संगीत सुन कर परी लहरों से निकल कर बाहर आयी और उस से बोली — "तुम कितना अच्छा बजाती हो ओ लड़की। बजाओ, बजाओ। तुम्हारा यह संगीत सुन कर मुझे बहुत अच्छा लग रहा है।"

राजा की बेटी बोली — "हाँ हाँ मैं और बजाऊँगी अगर तुम अपने बालों में लगा यह फूल मुझे दे दो क्योंकि मुझे तुम्हारे बालों मे लगा यह फूल बहुत पसन्द है।"

परी बोली — "यह फूल तो मैं तुम्हें दे दूँगी अगर तुम इसको वहाँ से ले सको जहाँ मैं इसको फेंकूँ।"

उसने परी को विश्वास दिलाया — "मैं उसको वहाँ से जरूर उठा लूँगी जहाँ भी तुम इसको फेंकोगी।" और उसने फिर अपना वायलिन बजाना और गाना शुरू कर दिया।

जब उसका गीत खत्म हो गया तब उसने परी से कहा — "अब मुझे फूल दो।"

परी बोली "यह लो।" और यह कह कर उसने वह फूल समुद्र में जितनी दूर हो सकता था फेंक दिया।

राजा की बेटी तुरन्त समुद्र में कूद गयी और उस फूल को लेने के लिये उसकी तरफ लहरों पर तैरने लगी।

उसकी आठ दासियाँ जो अभी भी चट्टान पर खड़ी थीं चिल्लायीं — "राजकुमारी को बचाओ, राजकुमारी को बचाओ।" उनके चेहरों के ऊपर पड़े सफेद परदे अभी भी हवा में हिल रहे थे।

पर राजा की बेटी तैरती रही तैरती रही। कभी वह लहरों में छिप जाती तो कभी उनके ऊपर आ जाती।

कुछ देर बाद उसको कुछ शक सा होने लगा था कि पता नहीं वह उस फूल तक कभी पहुँच भी पायेगी या नहीं कि तभी एक बड़ी सी लहर आयी और वह फूल उसके हाथ में थमा गयी।

उसी समय उसने अपने नीचे से एक आवाज सुनी — "तुमने मेरी ज़िन्दगी मुझे वापस दी है इसलिये मैं तुमसे शादी करना चाहता हूँ। अब तुम डरो नहीं मैं तुम्हारे नीचे ही हूँ। मैं तुमको किनारे तक पहुँचा दूँगा। पर तुम यह बात किसी को बताना नहीं, अपने पिता को भी नहीं।

अब मैं अपने माता पिता के पास जाता हूँ और जा कर उनको यह सब बताता हूँ और फिर चौबीस घंटों के अन्दर अन्दर आ कर मैं तुम्हारे माता पिता से तुम्हारा हाथ माँगता हूँ।"

उस समय क्योंकि तैरते तैरते राजा की बेटी की साँस फूल रही थी इसलिये वह केवल इतना ही कह सकी — "हाँ हाँ मैं समझती हूँ।" इतने में वह केंकड़ा उसको किनारे पर ले आया।

जब वह अपने घर पहुँची तो उसने राजा से केवल इतना ही कहा कि वहाँ वायलिन बजा कर उसको बहुत ही अच्छा लगा।

अगले दिन तीसरे पहर तीन बजे ढोलों की और बाजे बजने की और घोड़ों की टापों की आवाज के साथ एक मेजर महल में दाखिल हुआ और बोला कि वह राजा से मिलना चाहता था।

उसको राजा से मिलने की इजाज़त दे दी गयी और फिर राजकुमार ने राजा से उसकी बेटी का हाथ माँगा। राजकुमार ने राजा को अपनी सारी कहानी भी सुनायी।

राजा उसकी कहानी सुन कर सकते में आ गया क्योंकि अभी तक तो उसको इन सब बातों का कुछ भी पता नहीं था।

उसने अपनी बेटी को बुलाया तो वह भागती हुई चली आयी और आ कर यह कहते हुए राजकुमार की बाँहों में गिर गयी — "यही मेरा दुलहा है पिता जी, यही मेरा दुलहा है।"

राजा ने समझ लिया कि अब वह कुछ भी नहीं कर सकता था सिवाय इसके कि वह अपनी बेटी की शादी उस राजकुमार के साथ कर दे। और उसने उन दोनों की शादी कर दी।

13 हूडी कौआ[51]

सूअर राजा जैसी यह कहानी यूरोप महाद्वीप के स्कौटलैंड देश में कही सुनी जाती है।

एक बार की बात है कि एक जगह एक किसान रहता था। उसके तीन बेटियाँ थीं जो एक बार एक नदी पर कपड़े धो रही थीं।

उसी समय एक हूडी[52] वहाँ आया और उसने सबसे बड़ी वाली बेटी से कहा — "ऐम पोस ऊ मी – क्या तुम मुझसे शादी करोगी ओ किसान की बेटी?"

लड़की ने जवाब दिया — "नहीं ओ बदसूरत बेरहम। हूडी तो बदसूरत है।"

अगले दिन वह फिर आया और उसने किसान की दूसरी बेटी से पूछा — "ऐम पोस ऊ मी – क्या तुम मुझसे शादी करोगी ओ किसान की बेटी?"

इस लड़की ने भी उसको वही जवाब दिया — "ओह मैं नहीं, ओ बदसूरत बेरहम। तू हूडी तो बदसूरत है।"

---

[51] The Hoodie-Crow – a folktale from Scotland, Europe. Taken from the Andrew Lang's "The Lilac Faiy Book" at the Web Site: https://www.gutenberg.org/files/28096/28096-h/28096-h.htm#Page_336

[52] Hoodie is the Royston crow--a very common bird in the Highlands; a sly, familiar, knowing bird, which plays a great part in these stories. He is common in most parts of Europe.

अगले दिन वह फिर आया और उसने किसान की तीसरी और सबसे छोटी बेटी से पूछा — "ऐम पोस ऊ मी – क्या तुम मुझसे शादी करोगी ओ किसान की बेटी?"

इस लड़की ने जवाब दिया — "हाँ मैं तुमसे शादी करूँगी हूडी। हूडी तो एक बहुत प्यारी सी चिड़िया है।" अगले दिन उनकी शादी हो गयी।

हूडी ने लड़की से पूछा — "तुम क्या चाहोगी कि मैं दिन में हूडी रहूँ और रात में आदमी बन जाऊँ या फिर यह कि मैं दिन में आदमी बन जाऊँ और रात में हूडी बन जाऊँ।"

लड़की बोली — "मैं चाहती हूँ कि तुम दिन में आदमी बन जाओ और रात में हूडी बन जाओ।"

उसके बाद वह दिन में एक शानदार नौजवान बन जाता और रात को हूडी बन जाता। अपनी शादी के कुछ दिन बाद ही वह उस लड़की को ले कर अपने घर चला गया।

नौं महीने बाद लड़की को एक बेटा हुआ। रात को एक बहुत ही मीठा संगीत बजा जैसा उस घर के आस पास कभी नहीं बजा था। उस संगीत को सुन कर सब लोग सो गये और बच्चा वहाँ से गायब हो गया।

किसान सुबह को अपनी बेटी के पास आया और अपनी बेटी से पूछा कि वह कैसी थी। बेटी ने बताया कि वह तो ठीक थी पर उसका बच्चा गायब था। किसान यह सुन कर दुखी भी हुआ और

डर भी गया क्योंकि बच्चे के गुम होने के लिये लोग उसी को जिम्मेदार ठहराते।

नौ महीने बाद उस लड़की के एक और बेटा हुआ तो घर के चारों तरफ पहरा बिठा दिया गया। इस रात भी एक बार फिर बहुत मीठा संगीत बजा तो हर आदमी सो गया और बच्चा गायब हो गया।

अगली सुबह लड़की का पिता फिर से उसको देखने के लिये आया और उससे पूछा कि सब ठीक था या नहीं पर यह जान कर कि उसकी बेटी का बच्चा फिर से गायब हो गया वह फिर दुखी हो गया और फिर डर गया।

अबकी बार उसको समझ में ही नहीं आया कि वह इस तरह से बच्चे के गायब होने के बारे में क्या करे।

नौ महीने बाद उसकी बेटी को तीसरा बेटा हुआ। उस समय भी घर पर अच्छी तरह पहरा बिठाया गया जैसे पहले बिठाया गया था। पर इस बार भी रात को मीठा मीठा संगीत बजा और बच्चा गायब हो गया।

अगली सुबह जब वे उठे तो हूडी की पत्नी इतनी दुखी हुई कि हूडी ने सोचा कि वह उसको वहाँ से कहीं और ले चले और उसकी बहिनों को भी उसके साथ के लिये ले चले। सो हूडी उनका मन बहलाने के लिये दूसरी जगह ले गया – अपनी बहिन के घर।

वे सब एक गाड़ी में बैठे और चल दिये। वे लोग अभी बहुत दूर नहीं गये थे कि बीच में राजकुमार ने पूछा — "देख लो तुम लोग कहीं कुछ भूल तो नहीं गयीं।"

पत्नी ने अपनी जेब टटोली और बोली — "हाँ मैं अपना मोटा वाला कंघा भूल आयी हूँ।"

इस पर जिस गाड़ी में वे जा रहे थे वह एक लकड़ी के डंडों के गट्ठर में बदल गयी और वह आदमी एक हूडी बन कर वहाँ से उड़ गया। पत्नी की दोनों बहिनें तो घर वापस लौट आयीं पर पत्नी हूडी के पीछे पीछे चल दी।

कभी वह उसको पहाड़ी चोटी पर देखती तो उसकी तरफ भागती कि वह उसको वहाँ पकड़ लेगी। पर जब वह वहाँ पहुँचती तो उसको घाटी में देखती।

ऐसा करते करते वह थक गयी और रात भी हो गयी तो वह आराम करने के लिये कोई जगह ढूँढने लगी तो उसको यह देख कर बहुत खुशी हुई कि उसके सामने ही एक घर था जिसमें खूब रोशनी हो रही थी। वह उस घर की तरफ जल्दी से जल्दी चल दी।

जब वह दरवाजे पर पहुँची तो वहाँ उसको एक छोटा सा लड़का खड़ा मिला। पता नहीं क्यों उसको देख कर वह खुशी से भर गयी। इसी समय एक स्त्री घर में से बाहर आयी और उसका स्वागत किया।

उसने उसको खाना खिलाया और सोने के लिये एक मुलायम बिस्तर दिया। हूडी की पत्नी इतनी थकी हुई थी कि जब सुबह का सूरज निकला और वह उठी तो उसको लगा कि रात एक पल में ही निकल गयी। वह अभी तो सोयी थी।

वह फिर वहाँ से चली और पहाड़ियों पहाड़ियों होते हुए हूडी को ढूँढती रही। वह कभी उसे पहाड़ी की चोटी पर दिखायी दे जाता पर जब तक वह वहाँ पहुँचती तब तक वह घाटी में दिखायी देने लगता। और जब वह घाटी में पहुँचती तो वह उसको पहाड़ी की चोटी पर उड़ता पाती।

इस तरह से घूमते घूमते फिर उसको रात हो गयी और वह रात को सोने के लिये फिर कोई जगह ढूँढने लगी। लो यह सोचते ही एक घर उसको अपने सामने ही दिखायी दे गया जिसमें खूब रोशनी हो रही थी। वह उसकी तरफ जल्दी जल्दी चल दी।

वहाँ पहुँची तो वहाँ भी उसने एक छोटे से लड़के को दरवाजे पर खड़ा पाया। न जाने क्यों उसको भी देख कर उसको बहुत खुशी हुई। फिर एक स्त्री घर में से बाहर आयी और उसको घर के अन्दर ले गयी।

उसने उसको खाना खिलाया और सोने के लिये मुलायम बिस्तर दिया। वहाँ भी बहुत जल्दी ही सो गयी कि उसको पता ही नहीं चला कि सुबह कब हो गयी।

अगली सुबह वह फिर से हूडी की खोज में चल दी। यह दिन भी उसका पिछले दो दिनों की तरह ही निकला। पर जब वह रात को घर पहुँची तो वहाँ रह रही स्त्री ने उससे रात को जागने के लिये कहा और कहा कि अगर हूडी उसके कमरे में आये तो वह उसको पकड़ ले।

पर हूडी की पत्नी तो बहुत दूर चल कर आयी थी सो वह बहुत थकी हुई थी। उसने जागे रहने की बहुत कोशिश की पर वह सो गयी।

वह कई घंटों तक सोती रही। रात को हूडी एक खिड़की में से हो कर आया और अपनी पत्नी के हाथ पर एक अँगूठी गिरा दी। चौंक कर लड़की की आँख खुल गयी और उसने उठ कर हूडी को पकड़ना चाहा पर वह तो पहले ही उड़ गया था। वह उसके पंखों में से केवल एक पंख ही तोड़ पायी।

जब सुबह हुई तो उसने उस स्त्री को अपनी कहानी बतायी तो वह बोली — "वह अब जहर की पहाड़ी[53] पर गया है और वहाँ तुम तब तक उसके पीछे पीछे नहीं जा सकतीं जब तक तुम्हारे हाथ पैरों में घोड़े की नाल[54] न लगी हो। इस काम में मैं तुम्हारी सहायता करूँगी।

[53] Translated for the words "Hill of Poison".

[54] Translated for the word "Horse-shoe".

लो तुम यह आदमियों वाले कपड़े पहन लो और इस सड़क पर चलती चली जाओ जब तक तुम एक लोहार के पास पहुँचो। वहाँ तुम अपने लिये घोड़े की नाल बनाना सीख सकती हो।

लड़की ने उसको धन्यवाद दिया उसके दिये हुए आदमियों वाले कपड़े पहन लिये और जैसा उस स्त्री ने उससे कहा था वह उस सड़क पर चल दी। लोहार के पास पहुँच कर उसने इतनी मेहनत से काम किया कि कुछ ही दिनों में उसने अपने लिये घोड़े की नाल बना ली।

एक दिन सुबह अपने हाथ पैरों पर चल कर वह जहर की पहाड़ी की तरफ रवाना हुई पर अपने हाथों और पैरों पर घोड़े की नाल पहनने पर भी उसको बहुत सावधान रहना पड़ रहा था कि वह कहीं फिसल न जाये। या फिर कहीं जहर भरे काँटे उसके शरीर में न लग जायें और वह मर जाये।

पर जब वह उस पहाड़ी के ऊपर पहुँची तो उसको पता चला कि उसके पति की तो उसी दिन एक लौर्ड की बेटी के साथ शादी होने वाली थी।

उस दिन शहर में एक दौड़ हो रही थी। उसमें हर एक को होना जरूरी था सिवाय किसी अजनबी के जो जहर की पहाड़ी पर नया नया आया हो और उस रसोइये के जो शादी की दावत का खाना बना रहा हो।

उस रसोइये को दौड़ें बहुत अच्छी लगती थीं पर उसको इस बात का अफसोस था कि वह उस दौड़ को नहीं देख पायेगा। पर जब उसने एक स्त्री को सड़क पर चलते देखा जिसको कि वह जानता तक नहीं था तो उसको कुछ आशा बँधी।

वह उसके पास गया और उससे कहा — "क्या आज की रात तुम मेरी बजाय मेरा दावत का खाना बना सकती हो मैं तुमको बहुत अच्छा पैसा दूँगा।"

वह खुशी से राजी हो गयी और रसोईघर में जा कर शादी की दावत का खाना बनाने लगी। यह रसोईघर उस कमरे के बराबर में ही था जिसमें लोग खाना खाने वाले थे। उसने उस कमरे में देखा जहाँ दुलहा बैठने वाला था। उसने माँस के पानी का एक कटोरा लिया और उसमें अँगूठी डाल कर उसके सामने रख दी।

जैसे ही उसने उस कटोरे में से सूप का पहला चम्मच निकाला तो उसकी चम्मच में अँगूठी आ गयी। उसको देख कर तो उसके शरीर में रोमांच हो आया। उसने सूप का दूसरा चम्मच निकाला तो उसमें उसका पंख निकला। यह देख कर तो वह अपनी कुरसी से उठ खड़ा हुआ।

उसने पूछा — "आज यह खाना किसने बनाया है?"

वह रसोइया जो अब दौड़ देख कर आ चुका था उसके सामने लाया गया। दुलहे ने कहा — "यह रसोइया तो हो सकता है पर

खाना इसने नहीं बनाया।" तब रसोइये के बताने पर उस लड़की को उसके सामने बुलाया गया।

उसको देखते ही वह बोला — "यह तो मेरी ब्याहता पत्नी है। और अब मैं किसी और से शादी करूँगा भी नहीं।"

उसी समय उसका जादू टूट गया और वह फिर कभी हूडी नहीं बना। दोनों आपस में मिल कर बहुत खुश हुए। जहर की पहाड़ी को पार करने में उन्हें इस बार काफी समय लग गया पर उनको इस बात का पता ही नहीं चला।

क्योंकि पहले वह आगे जाती थी फिर वह अपने घोड़े की नाल को अपने हाथ पैरों में से निकाल कर अपने पति को देती थी उसके बाद ही वह आगे आ पाता था। इसके बाद वे उसी रास्ते से वापस लौट गये जिससे वह लड़की उसके पास आयी थी।

वे उन तीनों घरों में रुकते हुए गये और वहाँ से वे अपने तीनों बेटो को अपने घर ले गये।

पर यह कहानी यह नहीं बताती कि उन बच्चों को किसने चुराया था और उस मोटे वाले कंघे का इस सबसे क्या सम्बन्ध था।

14 लोहे का चूल्हा[55]

सूअर राजा जैसी कहानियों के इस तीसरे संग्रह की यह कहानी यूरोप महाद्वीप के जर्मनी देश के कहानियों से ली गयी है।

यह उन दिनों की बात है जब इच्छाऐं सचमुच में कुछ मतलब रखती थीं। एक राजा के बेटे के ऊपर किसी जादूगरनी ने जादू कर दिया और उसे एक लोहे के चूल्हे में बन्द कर के जंगल में रख दिया। वह वहॉ कई साल तक रहा। कोई उसे वहॉ से छुड़ा नहीं सका।

तब एक दिन एक राजा की बेटी उस जंगल में आयी और रास्ता भूल गयी सो वह लौट कर फिर अपने पिता के राज्य नहीं जा सकी। वह उस जंगल में नौ दिन तक इधर से उधर घूमती रही। आखिर वह उस लोहे के चूल्हे के पास आ पहुॅची।

उसने उस चूल्हे में से आवाज सुनी — "तुम कहॉ से आयी हो और किधर जा रही हो?"

राजकुमारी बोली — "मैं अपने पिता के राज्य का रास्ता भूल गयी हूॅ और अब वहॉ वापस लौट कर नहीं जा सकती।"

[55] The Iron Stove – a folktale from Germany, Europe. Taken from the Book "Household Tales", by Jacob and Wilhelm Grimm. London: George Bell. 1884. Taken from the Web Site: https://www.worldoftales.com/fairy_tales/Brothers_Grimm/Margaret_Hunt/The_Iron_Stove.html#gsc.tab=0

तब लोहे के चूल्हे में से उसने फिर सुना — "मैं तुम्हारी तुम्हारे घर पहुँचने में सहायता कर सकता हूँ और वह भी बहुत जल्दी अगर तुम मुझसे वह करने का वायदा करो जो मैं तुमसे करवाना चाहता हूँ। मैं तुम्हारे पिता से भी बड़े राजा का बेटा हूँ। मैं तुमसे शादी कर लूँगा।"

यह सुन कर वह डर गयी और सोचने लगी कि "मैं इस लोहे के चूल्हे का क्या करूँगी।" पर क्योंकि वह अपने घर जाने की जल्दी में थी इसलिये उसने उससे वायदा कर लिया कि वह जो कुछ भी कहेगा वह वही करेगी।

उसने कहा कि वह एक चाकू ले कर यहाँ लौटेगी और इस लोहे के चूल्हे में एक छेद करेगी। फिर उसने उसको एक साथी दिया जो बोलता नहीं था पर वह उसको दो घंटे के अन्दर अन्दर उसके घर पहुँचा आया।

जब बेटी घर आयी तो किले में बहुत खुशियाँ मनायी गयीं। राजा ने खुशी से उसको गले लगाया और चूमा पर वह काफी परेशान थी।

वह अपने पिता से बोली — "पिता जी मुझे यहाँ आने के लिये कितने दुख उठाने पड़े। मैं उस बड़े से जंगल से शायद कभी भी वापस नहीं आ सकती थी अगर मुझे वहाँ एक लोहे का चूल्हा नहीं मिलता।

इसलिये मुझे अपने वायदा तो निभाना पड़ेगा। मुझे वहाँ जा कर उसे आजाद करना पड़ेगा और फिर उससे शादी करनी पड़ेगी।"

यह सुन कर राजा तो बहुत डर गया और बेहोश होते होते बचा क्योंकि यह तो उसकी अकेली बेटी थी।

सो उन लोगों ने यह तय किया कि वह राजकुमारी की बजाय अपने आटा पीसने वाले की बेटी को वहाँ भेज देंगे। वह लड़की सुन्दर भी थी और समझदार भी थी।

सो उन्होंने उसको एक चाकू दिया और जंगल में भेज दिया। उसको बता दिया कि उसको उस लोहे के चूल्हे को खुरच खुरच कर उसमें एक छेद बनाना था। वह वहाँ उसको चौबीस घंटे तक खुरचती रही पर उसका एक छोटा सा टुकड़ा भी नहीं निकाल सकी।

जब सुबह हो गयी तो चूल्हे में से आवाज आयी – "मुझे ऐसा लगता ही कि बाहर दिन हो गया है।"

लड़की बोली – "मुझे भी ऐसा ही लगता है। मुझे अपने पिता के आटा पीसने की चक्की की आवाज आ रही है।"

"ओह तो तुम आटा पीसने वाले की बेटी हो। तुम तुरन्त ही यहाँ से चली जाओ और राजकुमारी को यहाँ भेज दो।"

वह तुरन्त ही वहाँ से चली गयी और राजा से जा कर कहा कि वह आदमी उसको नहीं चाहता था उसे तो राजा की बेटी ही चाहिये।

उनके पास एक सूअर चराने वाले की बेटी भी थी जो चक्की पीसने वाले की बेटी से भी ज़्यादा सुन्दर थी। उन्होंने उसको सोने का एक सिक्का दिया और राजा की बेटी की जगह उसको जंगल भेज दिया।

वह जंगल ले जायी गयी। वह भी वहाँ उस लोहे के चूल्हे को चौबीस घंटों तक खुरचती रही पर वह भी उसका एक छोटा सा टुकड़ा भी नहीं खुरच सकी।

अगले दिन जब दिन निकला तो चूल्हे में से फिर आवाज आयी "लगता है कि बाहर दिन निकल आया।"

सूअर चराने वाले की बेटी बोली — "हाँ मुझे भी ऐसा ही लगता है। मैं अपने पिता को बाजा बजाते सुन सकती हूँ।"

"तो तुम एक सूअर चराने वाले की बेटी हो। तुरन्त वापस चली जाओ यहाँ से और राजा की बेटी से कहो कि वह यहाँ आये और जैसा हम लोगों के बीच तय हुआ है वैसा ही होना चाहिये। अगर वह यहाँ नहीं आती है तो उसका सारा राज्य नष्ट हो जायेगा और कोई पत्थर एक दूसरे पर खड़ा नहीं रहेगा।"

जब राजा की बेटी ने यह सुना तो उसने तो रोना शुरू कर दिया। पर अब उसके पास अपना वायदा पूरा करने के अलावा और कोई चारा नहीं था।

सो उसने अपने पिता से विदा ली एक चाकू लिया और जंगल में उस लोहे के चूल्हे के पास चल दी। वहाँ पहुँच कर उसने उस चूल्हे का लोहा खुरचना शुरू किया। जल्दी ही उसमें से लोहा निकलना शुरू हो गया और दो घंटे में तो उसने उसमें एक छोटा सा छेद भी बना लिया।

छेद के बनते ही उसने उस लोहे के चूल्हे के अन्दर झाँका तो उसने उसमें एक नौजवान देखा बहुत ही सुन्दर और सोने और जवाहरातों के गहनों से दमकता हुआ।

अब उसने और जल्दी जल्दी उसके लोहे को खुरचना शुरू किया। कुछ ही देर में उसने उसमें इतना बड़ा छेद कर लिया कि वह नौजवान अब उसमें से बाहर निकल सकता था।

बाहर निकल कर उसने कहा "अब तुम मेरी हो और मैं तुम्हारा हूँ। तुम मेरी पत्नी हो जिसने मुझे इसमें से आजाद किया है।"

वह उसको अपने साथ अपने राज्य ले जाना चाहता था पर राजा की बेटी ने उससे प्रार्थना की कि वह उसको एक बार उसके राज्य अपने पिता से मिलने जाने दे। राजकुमार ने उसको जाने की इजाज़त दे दी पर उससे कहा कि वह अपने पिता से तीन शब्द से ज़्यादा कुछ नहीं कहेगी और फिर उसके पास वापस आ जायेगी।

सो वह अपने राज्य चली गयी पर वहाँ जा कर वह तीन शब्दों से ज़्यादा बोली तो उसी समय वह लोहे का चूल्हा तो गायब हो गया और शीशे के पहाड़ पर और छेदती हुई तलवारों के ऊपर चला गया पर राजा का बेटा उसमें से आजाद हो गया और अब वह उसमें बन्द नहीं रहा।

इसके बाद उसने अपने पिता को गुड बाई कहा और बहुत ज़्यादा तो नहीं पर कुछ पैसा अपने साथ लिया और जंगल लौट गयी। जंगल जा कर वह लोहे के चूल्हे को ढूँढने लगी पर वह तो उसको कहीं मिला ही नहीं।

नौ दिनों तक वह उसे ढूँढती रही। इस बीच उसको इतनी ज़्यादा भूख लग आयी कि उसकी समझ में ही नहीं आया कि वह क्या करे। वह भूख के मारे मरी जा रही थी।

जब शाम हुई तो वह एक पेड़ में जा कर बैठ गयी और सोचा कि वह वह रात वहीं गुजारेगी क्योंकि उसको जंगली जानवरों का भी डर था।

जब आधी रात होने को आयी तो उसने कुछ दूरी पर एक रोशनी चमकती हुई देखी तो वह बोली "ओह मैं वहाँ ज़्यादा सुरक्षित रहती।" सो वह पेड़ पर से नीचे उतरी और उस रोशनी की तरफ चल दी। सारे रास्ते वह भगवान की प्रार्थना करती गयी।

चलते चलते वह एक पुराने मकान के सामने आ पहुँची। उसके चारों तरफ बहुत सारी घास उगी हुई थी और उसके सामने लकड़ी का एक छोटा सा ढेर लगा हुआ था।

यह देख कर उसको लगा "अरे मैं कहाँ आ गयी।" और उस मकान की एक खिड़की में से उसके अन्दर झाँका तो उसको बड़े छोटे मेंढकों के सिवा और कुछ दिखायी नहीं दिया। हाँ उसको खाने की एक मेज लगी हुई दिखायी दी जिस पर शराब और भुना हुआ माँस रखा हुआ था। उस पर रखे प्लेट और गिलास चाँदी के थे।

हिम्मत कर के उसने उसका दरवाजा खटखटाया तो एक मोटा सा मेंढक चिल्लाया —

> ओ हरी छोटी नौकरानी लँगड़ी टाँग वाली ओ छोटे कुत्ते लँगड़ी टाँग वाले
> सब इधर उधर कूद जाओ और देखो कि टाँगों वाला कौन है

तभी एक छोटा सा मेंढक बाहर निकला और उसको अन्दर ले गया। जब वह अन्दर गयी तो सबने उसका स्वागत किया और उसको बैठने के लिये कहा।

उन्होंने उससे पूछा कि वह कहाँ से आयी है और किधर जा रही है। तो उसने उनको अपनी पूरी कहानी बतायी और बताया कि किस तरह से वह उसकी बात न मानने की वजह से कि उसको अपने पिता से केवल तीन शब्द कहने थे वह चूल्हा और राजकुमार

दोनों गायब हो गये हैं। और अब उसको उन्हें पहाड़ियों के ऊपर ढूँढना पड़ रहा है जब तक वे मिल नहीं जाते।

यह सुन कर बड़ी मोटी वाली मेंढकी बोली —

ओ हरी छोटी नौकरानी लँगड़ी टाँग वाली ओ छोटे कुत्ते लँगड़ी टाँग वाले
सब इधर उधर कूद जाओ और मेरा बड़ा वाला डिब्बा ले कर आओ

तब एक छोटा वाला मेंढक गया और उसका बड़ा वाला डिब्बा ले कर आया। उन्होंने उसको खाने के लिये माँस और कुछ पीने के लिये दिया और फिर सोने के लिये एक बहुत अच्छे बिस्तर पर ले गये जो उसको रेशम और मखमल का लग रहा था। भगवान का नाम ले कर वह उसमें लेट गयी और लेटते ही सो गयी।

जब सुबह हुई तो वह उठी तो उस बड़ी और बूढ़ी मेंढकी ने उस बक्से में से निकाल कर उसे तीन सुइयाँ दीं जो उसको अपने साथ ले जानी थीं क्योंकि उसे उनकी जरूरत पड़ती।

क्योंकि उसको शीशे का पहाड़ पार करना था और फिर तीन छेदती हुई तीन तलवारों और एक झील के ऊपर से जाना था। अगर उसने यह सब कर लिया तब वह अपने प्रेमी से फिर से मिल पायेगी।

तब उसने उसे तीन चीज़ें दीं। एक तो तीन बड़ी सुइयाँ दूसरा हल का पहिया और तीसरी तीन गिरियाँ।

ये तीनों चीज़ें ले कर वह अपने रास्ते पर आगे बढ़ी और शीशे के पहाड़ के पास आयी जो बहुत ही फिसलना था सो पहले उसको अपने पैर के पीछे तीन सुइयाँ गाड़नी पड़ती थीं और फिर पैर के आगे। इस तरह से वह उस पहाड़ को पार कर सकी।

पहाड़ पार करने के बाद उसने तीनों सुइयों को एक जगह गाड़ दिया जहाँ उसने एक निशान लगा दिया। उसके बाद वह तीन छेदती हुई तलवारों के पास आयी तो वह हल के पहिये के ऊपर बैठ गयी और उनके ऊपर से हो कर लुढ़क गयी। उसके बाद वह एक बहुत बड़े और सुन्दर किले के पास आ पहुँची।

वह उस किले के अन्दर चली गयी और वहाँ रहने की जगह माँगी। उसने कहा कि वह एक गरीब लड़की थी और उसे वहाँ कोई काम चाहिये था।

उसको इस बात का पता था कि वह राजकुमार जिसे उसने जंगल में लोहे के चूल्हे से छुड़ाया था वह इसी किले में रहता था। उसको वहाँ बहुत ही कम पैसे की मजदूरी पर रख लिया गया।

पर राजा के बेटे ने पहले से ही एक और लड़की को अपनी नौकरानी रखा हुआ था और वह उससे शादी करना चाहता था। क्योंकि उसको यह लग रहा था कि वह पहली लड़की तो अभी तक कभी की मर गयी होगी।

शाम को जब उसका काम खत्म हो गया और उसने अपने कपड़े बदल लिये तो उसने अपनी जेब में मेंढकों की दी हुई तीन गिरियाँ

महसूस कीं। उनमें से एक को उसने अपने दाँतों से तोड़ा और उसकी गिरी खाने ही वाली थी कि उसने देखा कि उसमें गिरी तो थी ही नहीं बल्कि एक शाही पोशाक थी।

पर जब दुलहिन को उस सुन्दर पोशाक के बारे में पता चला तो उसने कहा कि ऐसी पोशाक किसी नौकरानी के लिये ठीक नहीं थी सो वह उसे उसे बेच दे। पर उसने उसे बेचने से मना कर दिया और कहा कि अगर दुलहिन उसको एक चीज़ की इजाज़त दे दे तो वह उसे उसे बिना किसी कीमत के दे सकती है।

और वह चीज़ थी कि वह उसे अपने दुलहे के कमरे में एक रात सोने दे। दुलहिन ने उसको इस बात की इजाज़त दे दी क्योंकि वह पोशाक थी ही इतनी सुन्दर। और फिर वैसी पोशाक उसके पास कभी थी ही नहीं।

जब शाम हुई तो उसने अपने दुलहे से कहा "वह बेवकूफ लड़की आज मेरे कमरे में सोयेगी।"

राजकुमार बोला "अगर तुम चाहती हो तो मैं तैयार हूँ।"

शाम को वह शराब पीता था तो उस शाम दुलहिन ने उसकी शराब में नींद की दवा मिला दी। सो दुलहा और वह नौकरानी जब रात को सोने के लिये गये तो राजकुमार इतनी गहरी नींद सोया कि वह उसको किसी भी तरह नहीं जगा सकी।

वह रात भर रोती रही और कहती रही — "मैंने तुम्हें तब लोहे के चूल्हे में से आजाद किया जब तुम जंगल में पड़े हुए थे। मैं तुम्हें

ढूँढने निकली। मैं शीशे के पहाड़ पर चढ़ी। तीन छेदने वाली तलवारें पार कीं। मैंने एक झील पार की तब कहीं जा कर तुम मुझे मिले। और अब तुम मेरी सुन नहीं रहे हो।"

कुछ नौकर उस कमरे के दरवाजे के पास बैठे थे सारी रात उन्होंने उसका यह रोना सुना। तो जब सुबह हुई तो उन्होंने यह सब अपने मालिक से कहा। उसने कहा कि उसको तो इस सबका पता ही नहीं चला।

अगले दिन फिर शाम को अपना काम खत्म करने के बाद फिर जब वह तैयार हुई तो उसने अपनी दूसरी गिरी तोड़ी तो उसमें से भी एक पोशाक निकली जो उसकी पहले दिन की पोशाक से कहीं ज़्यादा सुन्दर थी।

जब दुलहिन ने उसको देखा तो वह उसको भी खरीदना चाहती थी पर वह लड़की तो उसका कोई पैसा न ले बल्कि वही कहे कि अगर उसको दुलहे के कमरे में एक रात और सोने दिया जाये तो वह उसको बिना कोई कीमत लिये उसे दे देगी।

उस दिन भी दुलहिन ने दुलहे को शाम को उसकी शराब में नींद की दवा मिला कर पिला दी और वह कमरे में जाते ही सो गया। और इतनी गहरी नींद सोया कि उस लड़की की कोई बात उसे सुनायी ही नहीं पड़ी।

वह फिर रात भर रोती रही और कहती रही — "मैंने तुम्हें तब लोहे के चूल्हे में से आजाद किया जब तुम जंगल में पड़े हुए थे। मैं

तुम्हें ढूँढने निकली। मैं शीशे के पहाड़ पर चढ़ी। तीन छेदने वाली तलवारें पार कीं। मैंने एक झील पार की तब कहीं जा कर तुम मुझे मिले। और अब तुम मेरी सुन नहीं रहे हो।"

उस दिन भी कुछ नौकर जो उस कमरे के दरवाजे के पास बैठे थे सारी रात उसका यह रोना सुनते रहे। जब सुबह हुई तो उन्होंने यह सब अपने मालिक से कहा तो उसने कहा कि उसको तो इस सबका पता ही नहीं चला।

तीसरी शाम उसने फिर से अपनी एक गिरी तोड़ी। अब यह उसकी आखिरी गिरी थी। इसमें उसके लिये पहले दो दिनों से भी ज़्यादा सुन्दर और कीमती पोशाक निकली। यह पोशाक सारी की सारी सोने के तारों के बुने हुए कपड़े की थी।

जब दुलहिन ने यह पोशाक देखी तो वह तो इसको खरीदे बिना नहीं रह सकी। उसने लड़की से फिर पूछा कि वह यह पोशाक उसको कितने की बेचेगी। लड़की ने फिर वही जवाब दिया कि उसकी कोई कीमत नहीं है सिवाय आज की रात आखिरी बार उसके दुलहे के कमरे में सोने के।

अब यह पोशाक तो इतनी सुन्दर थी कि दुलहिन ने उसको उस दिन भी उसे रात को अपने दुलहे के कमरे में सोने की इजाज़त दे दी।

पर आज की रात राजकुमार चौकन्ना था सो जब उस दिन उसको नींद लाने वाली शराब दी गयी तो उसने वह शराब नहीं पी और उसे फेंक दिया।

सो उस रात जब वह नौकरानी उसके कमरे में आयी और उसने रोना गाना शुरू किया वैसे ही राजकुमार कूद कर उठ खड़ा हो गया और बोला "तुम्हीं तो मेरी सच्ची पत्नी हो। तुम मेरी हो और मैं तुम्हारा हूँ।"

और रात में ही दोनों एक गाड़ी में चढ़ कर वहाँ से भाग लिये। उन्होंने इस दूसरी लड़की के कपड़े भी ले लिये सो वह सुबह को उठ ही नहीं सकी।

जब वे बड़ी झील के पास आये तो वह झील उन्होंने नाव में बैठ कर पार की। और जब वे तेज़ धार वाली तीन तलवारों के पास आये वे उन्होंने हल के पहिये पर बैठ कर पार कीं। और जब वे शीशे के पहाड़ के पास आये तो उसमें उन्होंने तीन सुइयाँ घुसा दीं।

इस तरह से वे उस पुराने घर के पास आये पर जब वे उसके अन्दर गये तो वह तो एक बहुत बड़ा किला था। उसमें रह रहे मेंढकों का भी जादू टूट गया था। वे सब मेंढक नहीं बल्कि एक राजा के बेटे थे और अब वे सब बहुत खुश थे।

वहाँ शादी का उत्सव मनाया गया। राजा का बेटा और राजकुमारी दोनों वहीं किले में ही रहे जो उन दोनों के पिताओं के किलों से भी बहुत बड़ा था।

राजकुमारी के पिता को बहुत अकेला महसूस होता था सो बाद में वह उन लोगों को अपने पास ही ले आया। अब उनके पास दो राज्य थे और फिर वे बहुत सालों तक खुशी खुशी रहे।

15 ताला[56]

लूसीला फव्वारे पर पानी भरने जाती है। वहाँ उसको एक गुलाम मिल जाता है जो उसे एक शानदार महल में ले जाता है जहाँ लोग उसको रानी बना कर रखते हैं। उसकी बहिनें उससे जलती हैं तो वे उसको यह देखने के लिये उकसाती हैं कि वह किसके साथ रहती है। वह वही करती है जैसा करने के लिये उससे कहा जाता है। उसको पता चलता है कि वह तो एक सुन्दर नौजवान है। पर ऐसा करने में उसकी सुन्दरता चली जाती है और उसको महल से निकाल दिया जाता है। वह दुनियाँ भर में घूमती है पर क्योंकि उसको बच्चे की आशा है वह अनजाने में अपने प्रेमी के घर पहुँच जाती है। वहाँ वह एक बेटे को जन्म देती है और बाद में फिर उसकी पत्नी बन जाती है।

लिसा[57] के दुखों की कहानी सुन कर सबके दिल पिघल गये और उनमें से चार की आँखें तो रो रो कर लाल ही हो गयीं क्योंकि इससे ज़्यादा दिल पिघलाने वाली बात तो कोई नहीं होती जिसमें बेचारा कोई भोलाभाला इतना दुख सहे। पर अब सिओमटैला[58] की बारी थी सो उसने यह कहानी शुरू की।

जो भी सलाह जलन से दी जाती है वह हमेशा ही बदकिस्मती को जन्म देती है क्योंकि उसमें उसके हँसते मुस्कुराते चेहरे के पीछे उसकी दूसरे की बरबादी की इच्छा छिपी रहती है।

---

56 The Padlock (Ninth Diversion, of the Second Day) – a folktale from Italy, Europe. Taken from the Book "Il Pentamerone, or the Tale of Tales", by Giovanni Batiste Basile. London: Henry and Company. 1893. Taken from the Web Site: https://burtoniana.org/books/1893-Pentamerone/burton-1893-pentamerone-vol1.pdf

57 Lisa

58 Ciommetella

और अगर किसी को अपने हाथ में एक बाल बराबर भी खुशकिस्मती मिल जाये तो उसको तो हर समय अपने लिये सैकड़ों दुश्मनों की आशा रखनी चाहिये जो उसको गिराने के लिये जाल बिछाने में लगे हुए हों।

ऐसा ही बेचारी एक लड़की के साथ हुआ जिसको अपनी बहिनों की नीच सलाह की वजह से खुशी की आखिरी सीढ़ी से नीचे गिर जाना पड़ा। यह तो बस भगवान की कृपा थी कि इस गिरने में उसकी गरदन नहीं टूट गयी।

एक बार की बात है कि एक माँ थी जिसके तीन बेटियाँ थी। वह बहुत गरीब थी। खाने के लिये वे सब भीख माँगा करती थीं और फेंके हुए बन्द गोभी के पत्ते इकट्ठे करती फिरती थीं।

एक सुबह माँ किसी घर में भीख माँगने के लिये गयी हुई थी तो वहाँ के रसोइये ने उसको कुछ हरे पत्ते और कुछ और चीज़ें दे दीं। सो वह तुरन्त ही घर वापस आ गयी और अपनी बेटियों को पास वाले फव्वारे से पानी लाने के लिये भेजा।

पर वे एक दूसरे से कहती रहीं कि “पानी लाने तू जा।” “पानी लाने तू जा।” पर उनमें से कोई पानी लाने नहीं गया। माँ ने देखा कि उसकी कोई भी बेटी पानी लाने नहीं जाना चाहती तो वह गुस्से से बोली — “अगर तुम्हें कुछ चाहिये तो तुम्हें उसे खुद करना चाहिये।”

हालाँकि वह इतनी बुढ़िया थी कि वह ठीक से चल भी नहीं पाती थी फिर भी यह कह कर उसने एक जग उठाया और पानी लेने जाने ही वाली थी कि लूसीला[59] उसकी सबसे छोटी बेटी बोली — "माँ मुझे दो यह जग मैं तुम्हारे लिये पानी भर कर लाती हूँ। हालाँकि मैं इतनी ताकतवर नहीं हूँ कि मैं वहाँ से पानी ला सकूँ पर मुझमें कम से कम इतनी ताकत तो है ही जो मैं तुम्हारे लिये पानी ला सकूँ। मुझे यह अच्छा नहीं लगता कि तुम यह काम करो।"

यह कह कर वह शहर से फव्वारे की तरफ चल दी। वह फव्वारा यह नहीं चाहता था कि डर से फूल मुरझा जायें इसलिये वह हमेशा उनके ऊपर पानी फेंकता रहता था।

लूसीला जब फव्वारे पर पानी भरने गयी तो वहाँ उसको एक बहुत सुन्दर नौकर मिला। लूसीला को देख कर वह उससे बोला — "ओ सुन्दर लड़की। क्या तुम मेरे साथ चलोगी। मैं तुम्हें एक गुफा से हो कर ले जाऊँगा। वहाँ मैं तुम्हें घर दूँगा जो यहाँ से ज़्यादा दूर नहीं है। और मैं तुम्हें और भी अच्छी अच्छी चीज़ें दूँगा।"

लूसीला जिससे न कोई कभी कुछ मीठा बोलता था और ना ही कोई उससे अच्छा व्यवहार करता था बोली — "ठीक है। मैं ज़रा यह पानी अपनी माँ को दे आऊँ उनको पानी की जरूरत है फिर मैं तुम्हारे पास आती हूँ।"

[59] Luceilla – the name of the youngest daughter

कह कर वह पानी देने के लिये घर चली गयी। वहाँ जा कर उसने अपनी माँ से कहा कि "माँ मैं भीख माँगने जा रही हूँ।"

कह कर वह फिर फव्वारे के पास गयी जहाँ वह नौकर उसका इन्तजार कर रहा था। वहाँ से वह उसके साथ उसके घर चली गयी। उसका घर आइवी[60] और दूसरी तरह की बेलों से ढका हुआ था।

जब वह वहाँ पहुँची तो वह उसको नीचे बने हुए एक महल में ले गया जो बहुत शानदार बना हुआ था और जिस पर सोने की खुदाई का काम हुआ था।

उनके वहाँ पहुँचते ही तुरन्त ही एक मेज लगा दी गयी जिस पर बहुत बढ़िया बढ़िया खाना लगा दिया गया था। जब उसने खाना खा लिया तो कुछ नौकरानियाँ वहाँ आयीं और उन्होंने उसके फटे कपड़े उतार कर उसे बहुत बढ़िया कपड़े पहनाये।

शाम को वे उसे एक कमरे में ले गयीं जहाँ एक सोने का मोती जड़ा पलँग पड़ा हुआ था। उसको वहाँ लिटा कर जब उसकी मोमबत्तियाँ बुझा दी गयीं तो कोई उसके पास आ कर लेट गया। ऐसा कुछ दिनों तक चलता रहा।

कुछ दिन बाद लड़की को अपनी माँ से मिलने की इच्छा हुई तो उसने यह बात उस नौकर से कही तो वह अन्दर के कमरे में गया

[60] Ivy is a kind of creeper which people normally grow on their walls.

वहाँ जा कर किसी से बात की और एक थैला भर कर सोना ले कर वहाँ से निकला।

वह थैला उस लड़की को दे कर कहा — "लो यह अपनी माँ को दे देना और देखो रास्ता मत भूलना और जल्दी ही वापस आना। उनको यह मत बताना कि तुम कहाँ से आयी हो और कहाँ जा रही हो।"

लूसीला वह थैला ले कर अपने घर चली गयी। जब वह अपने घर पहुँची तो उसकी बहिनों ने देखा कि वह बहुत सजी बजी है सो वे तो उसके देखते ही जलन के मारे मर ही गयीं।

वह वहाँ कुछ घंटे ठहरी और जब वह वहाँ से वापस आने लगी तो उसकी माँ और बहिनों ने उससे जिद की कि वे भी उसके साथ चलेंगी पर उसने उनको साथ आने से मना कर दिया। वह उसी रास्ते से गुफा से हो कर अपने महल में आ गयी।

वह वहाँ दो महीने शान्ति से रही पर उसके बाद फिर उसकी अपने घर जाने की इच्छा होने लगी तो उसने नौकर से फिर कहा कि वह अपनी माँ को देखने जाना चाहती है। इस बार भी नौकर ने उसे वहाँ जाने की इजाज़त दे दी और उसको एक सोने भरा थैला दे कर विदा किया।

ऐसा तीन चार बार हुआ तो उसकी बहिनें उससे बहुत ज़्यादा जलने लगीं। आखिर उन बहिनों ने आपस में मिल कर यह निश्चय

किया कि वे एक गुल से बात करेंगी जिसको कि वे जानती थीं। उसने उनसे पूछा कि वह कैसी है।

सो अबकी बार जब लूसीला घर आयी तो उन्होंने उससे कहा — "हालाँकि तू हमें अपनी खुशियों के बारे में नहीं बता नहीं रही है पर तुझे पता होना चाहिये कि हमें सब पता है। हम जानते हैं कि तू हर रात एक सुन्दर नौजवान के साथ सोती है जिसको कि तूने कभी देखा नहीं क्योंकि वे लोग तुझे तेरे पीने में कुछ मिला देते हैं और फिर तू गहरी नींद सो जाती है।

अगर तूने यह पहेली नहीं सुलझायी तो तू वैसी की वैसी ही रहेगी जैसी कि तू है सो तू उनकी सलाह मान जो तुझे प्यार करते हैं। आखीर में क्योंकि हम तेरा खून हैं तो हम तो तेरे भले की और खुशी की ही इच्छा रखते हैं।

सो जब रात हो और तू सोने के लिये अपने पलंग पर जाये और तेरा नौकर तेरे लिये कुछ पीने के लिये ले कर आये तेरे मुँह धोने के लिये पानी ले कर आये तो तू उससे मुँह पोंछने के लिये तौलिया लाने के लिये जाने के लिये कहना। और जब वह चला जाये तो वह पीने वाला पेय फेंक देना इससे तू रात भर जाग पायेगी।

और जब तू देखे कि तेरा पति सो गहरी नींद सो गया है तो यह ताला ले इसको खोलना तो उसके न चाहते हुए भी उसका जादू

टूट जायेगा और फिर तू दुनियाँ की सबसे ज़्यादा खुश और खुशकिस्मत लड़की होगी।"

बेचारी लूसीला नहीं जानती थी कि मखमल की गद्दी के नीचे काँटे रखे हैं फूलों में जहरीला साँप सो रहा है और सोने के कटोरे में जहर है। सो उसने अपनी बहिनों का विश्वास कर लिया और वह ताला ले कर गुफा में हो कर महल में चली गयी।

जब रात हुई तो जैसा उसकी नीच बहिनों ने उससे करने के लिये कहा था वैसा ही किया। उसने नौकर का लाया पेय फेंक दिया और उस आदमी के सोने का इन्तजार करने लगी।

जब सब जगह शान्त हो गया उसने एक मोमबत्ती जलायी तो उसने देखा कि उसके बिस्तर पर तो एक सुन्दर फूल पड़ा है – एक नौजवान जो लिली और गुलाब के फूल से भी सुन्दर है। इतनी सुन्दरता को देख कर उसके मुँह से निकला — "मेरे भगवान की कसम तुम मुझसे कभी भी बच कर नहीं जा सकते।"

उसने अपना ताला निकाला और उसे खोल दिया और लो उसको कुछ स्त्रियाँ अपने दोनों के ऊपर अपने हाथ में धागे की लच्छियाँ लिये हुए दिखायी दीं। इन स्त्रियों में से एक स्त्री ने एक लच्छी उसके ऊपर गिरा दी और लूसीला जो बहुत ही दयालु थी यह न समझते हुए कि वह कहाँ थी बहुत ज़ोर से चीख पड़ी — "मैम अपना धागा उठा लो।"

उसके इस चिल्लाने की आवाज सुन कर वह नौजवान जाग गया और इस तरह से लूसीला के उसको देखे जाने पर इतना गुस्सा और परेशान हुआ कि उसने तुरन्त ही अपने नौकरों को बुलाया और उसको वही फटे कपड़े पहनाने के लिये कहा जिनमें वह उसको ले कर आया था। फिर उसने उसको उसकी माँ और बहिनों के पास छुड़वा दिया।

उसके नौकरों ने ऐसा ही किया। जब वह घर पहुँची तो उसका चेहरा पीला पड़ा हुआ था और दिल डर के मारे काँप रहा था। उन्होंने उसको झिड़कते हुए कहा कि वह अपने रास्ते जाये उसका उनके पास अब कोई काम नहीं था।

अब उसको पता ही नहीं था कि वह किधर जाये सो वह इधर उधर भटकती रही। उसको बच्चे की आशा थी। काफी इधर उधर भटकने के बाद वह दुखी लड़की टौरेलौंगा[61] शहर आ गयी।

वहाँ वह महल चली गयी और राजा के अस्तबल की तरफ चली गयी। वहाँ जा कर वह भूसे के बिस्तर पर आराम करने के लिये लेट गयी। यहाँ उसको एक शाही दासी ने देख लिया तो उसने उसको बहुत अच्छी तरह से रखा। कुछ दिनों में जब उसके बच्चा होने का समय आया तो उसने एक बेटे को जन्म दिया।

वह बच्चा तो ऐसा लग रहा था जैसे कोई सोने की पोटली हो। जिस दिन वह पैदा हुआ उसी रात को एक सुन्दर नौजवान वहाँ

[61] Torre-Longa

आया जहाँ माँ और बच्चा लेटे हुए थे उसको अपनी गोद में उठाया और बोला — “ओ मेरे सुन्दर बेटे। अगर मेरी माँ तेरे बारे में जानती तो वह तुझे सोने के पानी में नहलाती और सुनहरे कपड़ों में लपेटती। और मैं? अगर मुर्गा न बोलता तो मैं तुझे कभी छोड़ कर न जाता।”

जब वह यह सब कह रहा था कि तभी मुर्गा बोला और वह वहाँ से पारे की तरह गायब हो गया। नौजवान नौकरानी उसके बिस्तर के पास ही बैठी थी सो उसने यह सब देखा। उसके जाने के बाद उसने उस लड़की से वह सब कहा जो उसने देखा।

वह नौकरानी रोज लड़की के बिस्तर के पास बैठती और रोज उस नौजवान को वहाँ आते और बच्चे को उसे अपनी बाँहों में लेते देखती। फिर वह उसको वही शब्द कहते हुए देखती और उसके बाद मुर्गे की पहली बाँग के साथ गायब हो जाते हुए देखती।

जब ऐसा होते हुए कई दिन बीत गये तो उसने यह बात रानी से जा कर कही।

तो रानी ने एक होशियार डाक्टर की तरह जैसे सूरज निकलने पर आसमान में से तारों को भगा देता है उसी तरह उसने भी सब मुर्गों को कटवाने की मुनादी पिटवा दी। इससे बेचारी सारी मुर्गियाँ विधवा हो गयीं और बहुत दुखी हो गयीं पर रानी को इस बात की कोई चिन्ता नहीं थी।

शाम को रानी ने नौकरानी को भी उसकी जगह से हटा दिया और वह खुद जा कर उस लड़की के पास बैठ गयी और उस नौजवान के आने का बेसब्री से इन्तजार करने लगी।

जब वह नौजवान उसी समय वहाँ आया तो उसने उसे पहचान लिया कि वह तो उसी का बेटा था। वह अपनी जगह से उठी और उसने उसको गले लगा लिया।

उसके ऊपर एक गुल ने शाप डाल रखा था कि वह तब तक बस बाहर ही घूम कर अपना समय काटता रहे जब तक कि उसकी माँ उसको न देख ले उसको गले न लगा ले और मुर्गे बाँग न दें। सो जैसे ही उसकी माँ ने उसको गले लगाया उसका यह जादू टूट गया और उसकी बाहर घूमने की सजा भी खत्म हो गयी।

इस तरह से माँ ने अपना बेटा भी पा लिया और अपना नाती भी पा लिया जो एक रत्न की तरह था और लूसीला ने अपना पति पा लिया। उसकी बहिनों को जब उसकी खुशी का पता चला तो वे भी उसके पास आयीं पर उनका भी उसी तरह स्वागत हुआ जैसे कि उन्होंने अपनी बहिन का जब किया था जब उन्होंने उसको उसके महल से निकाले जाने पर किया था।

इसलिये बुरे का बुरा हुआ और वे बहुत दुखी हो कर वहाँ से लौट आयीं। अब उनको सीख मिल गयी थी कि "जलन से आदमी का दिल खराब होता है।"

Pig King Like Stories From "The Pig King Like Stories-1"

1. The Pig King
2. The Enchanted Pig
3. King Krin
4. Prince Mercassin

Pig King Like Stories From "The Pig King Like Stories-2"

1. Serpent King
2. The Enchanted Snake
3. Sir Fiorante, The Magician
4. The Snake Prince
5. Snake Chief
6. The Guardian of the Pool
7. The Girl and the Snake
8. The Serpent-Zarevich and His Two Wives
9. The Enchanted Tzarevich
10. Cupid and Psyche
11. The Unseen Bridegroom
12. The Man Who Came Out Only at Night
13. The Frog Prince-1
14. The Frog Prince-2
15. The Enchanted Frog
16. Three Feathers
17. The Mouse With the Long Tail

Pig King Like Stories From "The Pig King Like Stories-3"

1. Beauty and the Beast
2. Zelinda and the Monster
3. A Hut in the Forest
4. The Bear Prince
5. The Brown Bear of Norway
6. East of the Sun and West of the Moon
7. The Black Bull of Norroway
8. The White Wolf
9. The Lame Dog
10. The Daughter of the Skies
11. The Little Green Rabbit
12. The Crab Prince
13. The Hoodie-Crow
14. The Iron Stove
15. The Padlock

Books in "One Story Many Colors" Series

1. Cat and Rat Like Stories (20 stories)
2. Bluebeard Like Stories (7 stories)
3. Tom Thumb Like Stories (13 stories)
4. Six Swans Like Stories
5. Three Oranges Like Stories (11 stories)
6. Snow White Like Stories
7. Sleeping Beauty Like Stories
8. Pig King Like Stories – 3 parts
9. Puss in Boots Like Storie (15 stories)
10. Hansel and Gratel Like Stories (4 stories)
11. Red Riding Hood Like Stories
12. Cinderella Like Stories in Europe (14+11 stories)
12. Cinderella in the World (21 stories)
13. Rumplestiltuskin Like Stories (22 stories)
14. Ali Baba and Forty Thieves Like Stories (4 stories)
15. Crocodile and Monkey Like Stories
16. Lion and Man Like Stories (14 stories)
17. Pome and Peel Like Stories (6 stories)
18. Soldier and Death Like Stories
19. Tees Maar Kahan Like Stories (11 stories)
20. Lion and Rabbit like Stories
21. Frog Princess Like Stories (7 stories)

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस कड़ी में 100 से भी अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं। पुस्तक सूची की पूरी जानकारी के लिये लिखें — hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" कम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
2022